सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ...	... ६) रु०
छः माही चन्दा	... ५) रु०
तिमाही चन्दा ...	... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य	... ≡)

Annas Three Per Copy

भविष्य

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़ी कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार; १८ दिसम्बर, १९३० | संख्या १२, पूर्ण संख्या १२

नवीन-एशिया के

सफल-निर्माता

नवीन ईराक़ के त्राता—सुलतान इब्न सऊद वहाबी

सीरिया के प्राण—सुलतान पाशा अल अत्राशी

वर्तमान चीन के विधायक
डॉक्टर सनयात सेन
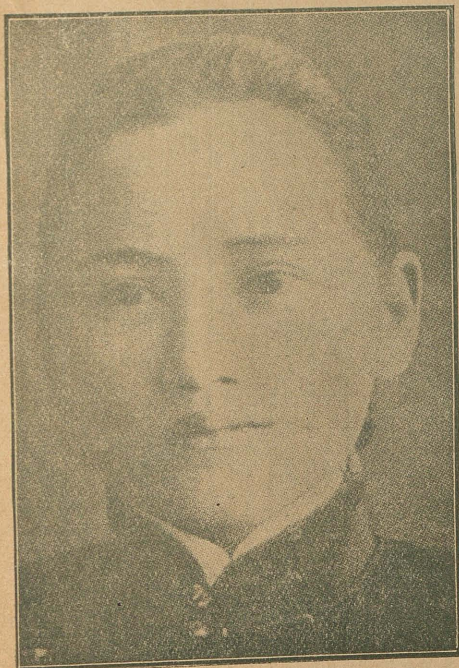
पुरुष-वेश में—डॉक्टर सनयात सेन की धर्मपत्नी

वर्तमान ईरान के विधाता—रिज़ा अली पहेलवी

PRINTED AT THE
FINE ART PRINTING COTTAGE
CHANDRALOK—ALLAHABAD

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

Dear Mr Saigal,

Your album is a production of great taste & beauty & has come to me as a pleasant surprise as to what a press in Allahabad can turn out. Moon worshipped & Visit to the Temple are particularly charming pictures, life-like & full of details. I congratulate you on your remarkable enterprise & thank you for a present which has given & will continue to give me a great deal of pleasure.

Yours sincerely
B J Dalal.

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjea of the Allahabad High Court :

. . . The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consumate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITTRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court :

. . . I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail :

. . . The Album ADARSH CHITTRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letter-press in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture.

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector, Allahabad :

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute :

. . . I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie, Esq., Director of Public Instruction, U. P. :

. . . I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूरदर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' (हिन्दी अथवा उर्दू-संस्करण) का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!

पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एक मात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड १ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार—१८ दिसम्बर, १६३० | संख्या १२, पूर्ण संख्या १२

पञ्जाब में भी जेलों का दिवाला !

राजनैतिक क़ैदियों की भरमार के कारण ५०० क़ैदी छोड़ दिए गए !!

मि० विन्सेण्टन चर्चिल की खरी घोषणा :: भारत को स्वराज्य नहीं मिलेगा !

बङ्गालिन महिला मुसलमान नहीं हुई :: स्थानीय मुसलमानों के हथकण्डे !

नैनी जेल में मालवीय जी की दशा चिन्ताजनक होने के कारण वे सिविल-हस्पताल भेजे गए !

(१७ वीं दिसम्बर की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—आज सर्दार वल्लभभाई पटेल का मुक़दमा प्रेज़िडेन्सी मैजिस्ट्रेट मि० दस्तूर की अदालत में प्रारम्भ हुआ। उन पर दण्ड-विधान की धारा १७-१ और १७-२ का अभियोग लगाया गया है। यह अभियोग उनके उस भाषण पर लगाया गया है, जो उन्होंने प्रेज़िडेण्ट की हैसियत से नए खद्दर हाउस का उद्घाटन करते समय दिया था। आज चार गवाहियों के ब्यान हुए। इलाहाबाद से आए हुए ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर ने ६वीं नवम्बर की ६ ज़ब्त चिट्ठियाँ पेश कीं जिन पर स्थानापन्न सेक्रेटरी के हस्ताक्षर थे और जिनमें यह लिखा हुआ था कि सर्दार पटेल कॉङ्ग्रेस तथा कार्य-कारिणी कमिटी के नए प्रेज़िडेण्ट नियुक्त किए गए हैं। पुलिस इलाहाबाद और अहमदाबाद से कुछ गवाह, यह सबूत करने के लिए बुलाना चाहती है, कि सर्दार ने ग़ैर-क़ानूनी सभा के सञ्चालन में सहायता पहुँचाई। उनका मुक़दमा २० ता० के लिए स्थगित कर दिया गया है।

—कलकत्ते के 'बङ्गवाणी' पत्र को मालूम हुआ है कि डम-डम स्पेशल जेल में चेचक की बीमारी फैल गई है जिसके कारण वहाँ के तीन रानैतिक क़ैदी प्रेज़िडेन्सी जेल की अस्पताल भेज दिए गए हैं।

—कलकत्ता के वकीलों की आज एक सभा होगी, जिसमें उन एडवोकेटों के सम्बन्ध में विचार किया जायगा, जो वायसराय के स्वागत में सम्मिलित न होने का प्रस्ताव पास हो जाने पर भी हाईकोर्ट में वायसराय के उत्सव में सम्मिलित हुए थे।

—वर्धा के गाँधी-चौक में गत रविवार को मोतीलाल दिवस मनाया गया था। उस दिन वहाँ की जनता ने पण्डित जी के जल्दी स्वस्थ होने के लिए ईश-प्रार्थना की थी।

—१०वीं दिसम्बर को इलाहाबाद के 'खद्दर-भण्डार' पर पुलिस ने सवेरे ही धावा बोल दिया। धावे का उद्देश्य इलाहाबाद के ज़िला कॉङ्ग्रेस-कमिटी और शहर कॉङ्ग्रेस-कमिटी के सम्बन्ध में, जो ग़ैर क़ानूनी क़रार दे दी गई हैं, तलाशी लेना था। तलाशी लगातार दो घण्टे तक हुई और भण्डार का सब खद्दर तितर-बितर कर दिया गया। पुलिस अपने साथ कुछ राष्ट्रीय झण्डे, कॉङ्ग्रेस-कमिटियों के दो साइन बोर्ड और 'स्टूडेण्ट्स एसोसिएशन' के कुछ काग़ज़ ले गई। पुलिस ने 'खद्दर-भण्डार' का अर्थ सब मकान समझ लिया था और इसलिए उस मकान में जितने दुकानदार थे, सबकी तलाशी ली गई थी। 'प्रयाग-बुक डिपो' का ताला तोड़ कर उसकी भी तलाशी ली गई थी।

बङ्गालिन महिला मुसलमान हुई या नहीं ?

('भविष्य' के विशेष सम्बाददाता द्वारा)

पाठकों को स्मरण होगा, कुछ दिन हुए एक बङ्गालिन महिला और उसकी युवती कन्या के स्थानीय जुमा-मसजिद में 'इस्लाम-धर्म स्वीकार करने के अभिप्राय' से जाने के कारण सारे ज़िले में एक सनसनी फैल गई थी। इस सम्बन्ध में स्थानीय मुसलमानों ने जो 'हाय-तोबा' मचाई थी, इसका विस्तृत समाचार 'भविष्य' की १० वीं संख्या में प्रकाशित हो चुका है। पाठकों को यह भी स्मरण होगा कि, विगत २६ वीं नवम्बर को हड़ताल और जुलूस आदि निकालने के अतिरिक्त मुसलमानों का एक डेपुटेशन उस महिला को वापस माँगने के लिए डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट और पुलिस-सुपरिन्टेन्डेण्ट से भी मिला था और इन अफ़सरों ने मुसलमानों को इस बात का आश्वासन दिया था, कि शीघ्र ही वे उस महिला का कलकत्ते से (क्योंकि वह तुरन्त ही कलकत्ते भगा दी गई थी) ब्यान मँगाने का प्रबन्ध करेंगे। अस्तु,

अभी-अभी 'भविष्य' के विशेष सम्बाददाता को विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि इलाहाबाद से एक दारोग़ा साहब उस महिला का ब्यान लेने के लिए ख़ास तौर से कलकत्ते भेजे गए थे। उनके साथ ही मुसलमानों की ओर से एक मुसलमान बैरिस्टर साहब भी गए थे। बड़ी कठिनाइयों से उस बङ्गालिन महिला का ब्यान लिया जा सका। अपने ब्यान में उस महिला ने कहा है कि उसने स्थानीय जुमा-मसजिद की बड़ी प्रशंसा सुनी थी और वह अपनी लड़की सहित केवल उसे देखने के अभिप्राय से वहाँ गई थी ! महिला ने मुसलमानों के इस हथकण्डे की तीव्र आलोचना करते हुए कहा है, कि यह सरासर झूठ है कि पुलिस आने के पहिले ही वह तथा उसकी कन्या इस्लाम-धर्म में दीक्षित हो चुकी थी।

हमारे विशेष सम्बाददाता ने अपनी रिपोर्ट में उन मुसलमान बैरिस्टर साहब से बड़ी समवेदना प्रगट की है, जिन्हें इस बुरी तरह कलकत्ते से निराश होकर वापस लौटना पड़ा !

—देहरादून कॉङ्ग्रेस-कमिटी ने १४वीं दिसम्बर को झण्डा फहरा कर और सन्ध्या समय सभा कर खादी-सप्ताह का उद्घाटन किया है।

पञ्जाब में जेलों का दिवाला पिट गया

अमृतसर का १५वीं दिसम्बर का समाचार है कि स्थानीय 'अकाली ते परदेशी' को मालूम हुआ है कि राजनीतिक क़ैदियों की संख्या बढ़ जाने के कारण लगभग ५०० साधारण क़ैदी म्याद पूरी होने के पहले ही कई जेलों से मुक्त कर दिए गए हैं। सूचना के अनुसार ३८ गुजरांवाला जेल से, १०० दिल्ली जेल से, २५० मुल्तान जेल से और ६० माण्टगोमरी जेल से रिहा किए गए हैं।

डॉक्टर अन्सारी भी बीमार

गुजरात (लाहौर) स्पेशल जेल की रिपोर्ट से मालूम पड़ता है कि डॉ० अन्सारी गत शनिवार को अचानक बीमार हो गए थे। उसी समय उनकी चिकित्सा का प्रबन्ध किया गया था। अब वे स्वस्थ हो रहे हैं।

—हुगली का समाचार है कि यूनियन बोर्ड अस्पताल उन लोगों को दवाई नहीं देती, जिन लोगों ने चौकीदारी टैक्स अदा नहीं किया है।

महामना मालवीय जी शूल से पीड़ित

१७ दिसम्बर को १२ बजे दिन को महामना मालवीय जी नैनी जेल से इलाहाबाद के यूरोपियन सिविल हॉस्पिटल में लाए गए। कई दिनों से आप शूल से पीड़ित हैं, इससे संयुक्त प्रान्त की सरकार ने इन्हें सिविल हस्पताल में लाने की अनुमति दे दी है। आप मोटर एम्बुलेन्स में अस्पताल लाए गए। इलाहाबाद के सिविल सर्जन आपके साथ थे।

असल में आपको कल यहाँ लाना निश्चय किया गया था, परन्तु उसी समय आपको शूल उठा और पीड़ा के कारण आप यहाँ नहीं लाए जा सके।

श्रीमती मालवीय ने यू० पी० सरकार से आपके साथ रहने की अनुमति माँगी है।

—इलाहाबाद में १६ वीं दिसम्बर को कानपुर रोड पर हाई कोर्ट के एडवोकेट मि० बिशुननाथ के बँगले के सामने काङ्ग्रेस के वालण्टियरों ने आश्रम ख़ाली कराने के कारण एक जुलूस निकाला था। और उनके बङ्गले के भीतर राष्ट्रीय झण्डा लगा कर वहाँ अपना अड्डा जमा लिया था। वे भूखे-प्यासे रात्रि भर वहीं स्थान के लिए सत्याग्रह करते रहे। दूसरे दिन स्थान मिलने पर वापस चले गए और अब भी सत्याग्रही अपने सामान सहित आश्रम के द्वार पर बाहर डटे हैं।

—सिरसा (ज़िला हिसार, पञ्जाब) की नव-जवान सभा के प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत अर्जुनलाल मोंगा को एक साल की सज़ा दी गई है। आपसे पहले ज़मानत माँगी गई थी; पर आपने ज़मानत देने से इनकार किया और सज़ा भुगतना मञ्ज़ूर किया।

—पबना (बङ्गाल) के प्रमुख नेता श्रीयुत सिद्धेश्वर चक्रवर्ती को तारीख़ १० दिसम्बर को १० महीने की सज़ा दी गई। आपको यह सज़ा एक राज-विद्रोहात्मक व्याख्यान देने के सम्बन्ध में हुई है।

—लायलपुर से ख़बर आई है कि गोजरा (पञ्जाब) के डिक्टेटर सन्तराम दास को ४ महीने की सज़ा दी गई है। इसी स्थान के एक और डिक्टेटर श्रीयुत तुलसीदास जी को ६ महीने की सज़ा का हुक्म हुआ है।

—दिसम्बर तारीख़ ४ को सैनिक-सम्पादक कुँवर सरदारसिंह वर्मा राज-विद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। यह गिरफ़्तारी "दो सरकारें" शीर्षक लेख के सम्बन्ध में हुई है।

पुलिस का अत्याचार

वीरभूमि (बङ्गाल) ज़िले के मल्लारपूर गाँव में ८ दिसम्बर को प्रातःकाल क़रीब ६० पुलिस के सिपाही पहुँचे और उन्होंने गाँव को घेर लिया, इसके बाद ये गाँव वालों को जगा-जगा कर उनके घरों की तलाशी लेने लगे। इस तलाशी में कहा जाता है, कई ग़रीब बेक़सूर किसान मारे-पीटे गए और इनकी कई हज़ार की सम्पत्ति ख़राब की गई। इसके बाद पुलिस ने श्रीमती सत्यबाला देवी तथा चार प्रमुख कॉङ्ग्रेस के कार्य-कर्ताओं को गिरफ़्तार किया और वहाँ से चले गए।

राष्ट्रपति की सास गिरफ़्तार

श्रीमती राजपति कौल, जोकि श्रीमती कमला नेहरू की माता हैं और हाल ही में दिल्ली की डिक्टेटर नियुक्त हुई थीं—तारीख़ ११ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर ली गईं।

अमरावती में गढ़वाली दिवस

अमरावती (मध्य प्रान्त) से ख़बर आई है कि वहाँ के निवासियों ने १२ दिसम्बर को "गढ़वाली दिवस" मनाया। उन्होंने इसी सम्बन्ध में शाम को एक जुलूस निकालना तथा सभा करना निश्चित किया था; पर कलेक्टर ने इसको बन्द कर दिया। वहाँ के निवासियों ने अपना कार्य-क्रम पूरी तौर से कर दिखाया। इस सम्बन्ध में रात को १२ बजे बरार के नवें डिक्टेटर तथा श्रीयुत कलोटी, दीक्षित और मालिनी गिरफ़्तार कर लिए गए। इनके अतिरिक्त श्रीमती डायडेकर, गोखले, लिमाए तथा मिस जावले और ज़िला वार-कौन्सिल के १३ सदस्य भी गिरफ़्तार किए गए हैं।

—सूरत के नए कॉङ्ग्रेस हाउस के मालिक श्रीयुत मोहनलाल वृजदास कॉङ्ग्रेस को सहायता देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—सारन (बिहार) के डिक्टेटर श्रीयुत पण्डित भारत मिश्र ९ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए।

—वाइसराय के आगमन के सम्बन्ध में "वाइसराय वापस जाओ" शीर्षक नोटिस बाँटने के अपराध में कलकत्ते के दो बङ्गाली युवकों को ६ हफ़्ते की सादी सज़ा दी गई है।

—१० दिसम्बर को अमृतसर के २५वें डिक्टेटर लाला सोहनलाल को छः मास की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है।

—अमृतसर के सरदार सन्तसिंह से ९ दिसम्बर को १०००) की ज़मानत माँगी गई थी। ज़मानत न देने पर आपको एक साल की सज़ा का हुक्म हुआ है। आपने जेल जाना ही स्वीकार किया है।

—मुज़फ़्फ़रपूर के डिक्टेटर श्रीयुत दरोगा शाही तारीख़ ९ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए।

—दिल्ली के विद्यार्थी-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत अमीरचन्द को १३ दिसम्बर को ६ महीने की कड़ी सज़ा दी गई है। आप 'सी' दर्जे में रक्खे गए हैं।

—दिल्ली की पुलिस ने तारीख़ १३ दिसम्बर को सीताराम बाज़ार के एक मकान की तलाशी ली और १४ गोरखा स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया।

—दिल्ली के दसवें डिक्टेटर श्रीयुत रामकुमार मारवाड़ी, १३ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री कुमारी कौशल्या देवी, १३ दिसम्बर को दिल्ली में गिरफ़्तार कर ली गईं। आपकी आयु केवल १६ वर्ष की है।

—लाहौर के "कॉमरेड" नामक साप्ताहिक पत्र के दफ़्तर की तारीख़ १२ को तलाशी ली गई। कुछ पुराने अङ्क ज़ब्त किए गए और पत्र के सम्पादक श्रीयुत रामलाल राजविद्रोह के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए।

—दिल्ली की एक प्रमुख कार्यकर्त्री श्रीमती सावित्री देवी, वल्लभ भाई पटेल-दिवस के अवसर पर एक वक्तव्य देने के अपराध में तारीख़ १२ को गिरफ़्तार कर ली गईं।

—मदारीपुर (बङ्गाल) के एक उत्साही कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता श्रीयुत पूरनचन्द्र दास, जिन्होंने अपना सारा जीवन देश-सेवा में बिताया है—१२ दिसम्बर को फिर से गिरफ़्तार कर लिए गए। आप ७ दिसम्बर को अलीपुर जेल से छूट कर आए थे!

—१३ दिसम्बर को कलकत्ते के दो नवयुवक द्विजेन नाग और सुशील बनर्जी को १८ महीने की कड़ी सज़ा दी गई। यह सज़ा जवाहर-दिवस मनाने के सम्बन्ध में हुई है।

—दिल्ली के नए डिक्टेटर मौलाना शराफ़त अली १५ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए।

—बड़ा बाज़ार में पिकेटिङ्ग करने के अपराध में १३ दिसम्बर को कलकत्ते की ७ महिलाएँ तथा ३ युवक गिरफ़्तार किए गए।

—फ़रीदपुर के तीन प्रमुख कार्यकर्त्ता श्रीयुत सत्यरञ्जन दास गुप्त, श्रीयुत प्रमोद रञ्जन सेन गुप्त तथा श्रीयुत प्रमथनाथ सरकार तारीख़ १२ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए।

—कानपूर में ११ दिसम्बर को झण्डे के सम्बन्ध में फूलबाग़ के सामने सत्याग्रह करने के अपराध में श्रीयुत सेवाराम और श्रीयुत रामसहाय गिरफ़्तार किए गए। १२ तारीख़ को दो और स्वयंसेवक, श्रीयुत बद्रीप्रसाद दुबे और लोटन पासी गिरफ़्तार किए गए।

—विदेशी वस्त्र पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में कलकत्ते में १५ दिसम्बर को श्रीमती प्रबाला सेन तथा अन्य ५ महिलाओं पर ५०) रुपए का जुर्माना किया गया। जुर्माना देने से इनकार करने पर इन लोगों को दो महीने की सादी क़ैद भुगतने का हुक्म हुआ।

—१४ दिसम्बर को कलकत्ते की महिला राष्ट्रीय-सङ्घ की स्वयंसेविकाओं ने श्रीमती सरजू बोस, श्रीमती सावित्री चटर्जी तथा श्रीमती कुन्दबालासिंह के नेतृत्व में, विदेशी वस्त्र पर धरना दिया। पुलिस ने दो स्वयंसेविकाओं को गिरफ़्तार किया।

—१४ दिसम्बर को कलकत्ते की जोर बागान कॉङ्ग्रेस कमिटी के स्वयंसेवकों ने नातुन बाज़ार की विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर धरना दिया। पुलिस ने उन्हें लाठी मार कर भगाना चाहा। लाठियों की मार से एक स्वयंसेवक मुनीर अहमद को बहुत चोट आई है। एक और स्वयंसेवक श्री० भोलानाथ बनर्जी गिरफ़्तार कर लिया गया। और कई भागों में पिकेटिङ्ग हुई, पर कोई गिरफ़्तारी नहीं हुई।

—बारीसाल से ख़बर आई है कि श्रीयुत धीरेन्द्र रायचौधरी को, जोकि पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में कलकत्ते के जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, छः मास की और सख़्त क़ैद देने का हुक्म हुआ है। आप बारीसाल कॉलेज के विद्यार्थी थे और आपने उस समय में विद्यार्थियों को कॉलेज छोड़ने के लिए प्रार्थना की थी। यह सज़ा आपको इसी सम्बन्ध में दी गई है।

—बागेरहाट (बङ्गाल) के ४ स्वयंसेवक विदेशी वस्त्र पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए। इनमें से एक श्रीयुत महेशचन्द्रदत्त की आयु ७० वर्ष की है।

बम्बई के "बॉम्बे क्रॉनिकल" के प्रतिभाशाली सम्पादक श्री० ब्रेलवी, जिन्हें ६½ मास का दण्ड दिया गया है और जो "बी" क्लास में रक्खे गए हैं।

—दिल्ली के विद्यार्थी-सङ्घ के मन्त्री श्रीयुत गिरधारी लाल खोसला को १४ दिसम्बर को ६ महीने की कड़ी सज़ा का हुक्म सुनाया गया है। आप "सी" दर्जे में रक्खे गए हैं।

—बोरसद की दो महिला-स्वयंसेविका श्रीमत बेन तथा रुकमनीबेन शराब की दूकान के सामने धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार की गईं। १४ दिसम्बर को इन महिलाओं को २ महीने की सज़ा दी गई और वे "सी" दर्जे में रक्खी गईं। ये दोनों महिलाएँ साबरमती सत्याग्रह-आश्रम से आई थीं।

—दिल्ली के नेता चौधरी हरनामसिंह तारीख़ १२ दिसम्बर को गिरफ़्तार कर लिए गए। आपने सरदार पटेल को बधाई देने के उद्देश्य से की गई सभा में एक वक्तव्य दिया था। यह गिरफ़्तारी उसी सम्बन्ध में हुई है।

—१३ दिसम्बर को अमृतसर के १३ और स्वयंसेवकों को, जो विदेशी वस्त्रों पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए थे, १ महीने से लेकर तीन महीने की कड़ी सज़ा का हुक्म हुआ है।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखिए)

—अमृतसर वार-कौन्सिल के नवें डिक्टेटर श्रीयुत बशीर अहमद रज़वानी, जोकि लाहौर जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, बहुत बीमार हैं। आपका वज़न बहुत घट गया है।

—सरदार जमीयतसिंह सेठी, जो कि बम्बई के स्वयंसेवकों के कप्तान हैं और बम्बई के अकाली-दल के अधिष्ठाता हैं, नासिक जेल के अस्पताल में कई दिनों से बीमार पड़े हैं। आपको कड़ी सज़ा दी गई थी। आपके गले तथा नाक में शिकायत है, इसीसे आप बीमार हैं। नासिक की जल-वायु इनके स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं है। पर तब भी आप वहाँ से हटाए नहीं गए हैं।

भारत के यहूदी, पारसी और ईसाई पूर्ण स्वराज्य चाहते हैं

श्रीयुत बी० जी० हॉर्निमेन की अध्यक्षता में तारीख़ ६ दिसम्बर को बम्बई के यहूदी, ईसाई तथा पारसियों ने एक विराट सभा की। सभा में यह प्रस्ताव पास किया गया कि भारत के ईसाई, पारसी तथा यहूदी चाहते हैं, कि बिना देर किए अब भारत को पूर्ण स्वराज्य मिल जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम लोग भारत के स्वराज्य-आन्दोलन से पूर्ण सहानुभूति रखते हैं।

दूसरे प्रस्ताव में उन्होंने भारतीय सरकार की दमन-नीति का घोर विरोध किया और कहा कि विशेषकर स्त्रियों के साथ जो बर्ताव किया जा रहा है, वह बहुत ही निन्दनीय है।

इस सभा में उन्होंने जातीय प्रतिनिधि प्रणाली का घोर विरोध किया और कहा कि जातीयता का भाव राष्ट्रीयता के भाव के विरुद्ध है।

आख़िर में उन्होंने भारत-सरकार से प्रार्थना की, कि श्रीयुत विट्ठल भाई पटेल, जो कि जेल में अस्वस्थ हैं, शीघ्र ही रिहा कर दिए जावें।

कलकत्ते में वाइसराय का स्वागत

सूनी सड़कें और बन्द दूकानें!

भारत के वाइसराय महोदय तारीख़ ६ दिसम्बर को कलकत्ता पहुँचे। वहाँ के भारतीयों ने पूर्ण हड़ताल मनाई। दिन भर शहर की सब दूकानें बिलकुल बन्द रहीं। सड़कों में कोई भी आदमी नज़र नहीं आता था, शहर का सारा काम एकदम बन्द था। पुलिस के सिपाही तथा अधिकारियों के अतिरिक्त सड़कों पर कोई दर्शक भी नहीं देख पड़ता था!

—लाहौर क्रिश्चियन कॉलेज की छात्रा मिस श्यामा ज़ुतशी, जो कि श्रीमती लाडोरानी ज़ुतशी की सुपुत्री हैं, कॉलेज से निकाल दी गई हैं। आपसे फिर से कॉलेज में पिकेटिङ्ग न करने का वचन माँगा गया था, आपने इससे इनकार किया। इसीलिए इन्हें यह सज़ा दी गई है।

—बङ्गाल कॉङ्ग्रेस कमिटी के वाइस प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत ललितमोहन दास तारीख़ १० दिसम्बर को जेल से छोड़ दिए गए। आपको छः मास की सज़ा दी गई थी।

—संयुक्त प्रान्त कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रेज़िडेण्ट श्रीयुत पुरुषोत्तमदास जी टण्डन का स्वास्थ्य अब बिलकुल ठीक है। कमज़ोर होने पर भी उन्होंने काम करना आरम्भ कर दिया है।

—गोहाटी (आसाम) से ख़बर आई है कि कामरूप ज़िले के कलेक्टर ने सरित, चरपाड़ा और बेजनी नामक गाँवों के निवासियों की १०६ बन्दूकें ज़ब्त कर ली हैं। यह ज़ब्ती जङ्गल के क़ानून तोड़ने के सम्बन्ध में हुई है।

—सुना जाता है कि अलीगढ़ के एक प्रमुख रईस श्रीयुत ज्वालाप्रसाद जिज्ञासु जेल में बहुत बीमार हैं। आप अलीगढ़ म्युनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन तथा शहर कॉङ्ग्रेस कमिटी के डिक्टेटर थे। आप 'ए' दर्जे में रक्खे गए हैं; परन्तु बहुमूत्र रोग से आप बहुत अस्वस्थ हैं और आपका वज़न बहुत घट गया है। अलीगढ़ के निवासी आपके विषय में बहुत चिन्तित हैं।

—अलीगढ़ के निवासी पण्डित रमाशङ्कर याज्ञिक, जिन्हें गवर्नमेण्ट हाई स्कूल में राष्ट्रीय झण्डा लगाने के अपराध में सज़ा हुई थी, तारीख़ १० को जेल से छूट कर आ गए।

झङ्ग जेल में कपड़ों की कमी

सुना जाता है कि झङ्ग (पञ्जाब) जेल के एक राजनैतिक बन्दी का स्वर्गवास हो गया है। आपको ओढ़ने तथा बिछाने के लिए इतने कम वस्त्र दिए गए कि आपको जेल में निमोनिया हो गया और कहा जाता है कि उसी में आपकी मृत्यु हो गई। और क़ैदियों को भी यही तकलीफ़ है। वहाँ आजकल बहुत ज़ोर की ठण्ड पड़ रही है, पर जेल के अधिकारी उन्हें न अपने कपड़े काम में लाने देते हैं, न जेल के ही कपड़े देते हैं।

'पुलिस के नृशंस और पाशविक अत्याचारों से भारत की स्थिति बेहाथ हो गई है'

लन्दन का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि ६ ता० को श्री० पाल के भाषण के सम्बन्ध में 'मेनचेस्टर गार्जियन' ने 'सोसाइटी ऑफ़ फ्रेण्ड्स' की एक बम्बई स्थित महिला सदस्या के पत्र से कुछ अंश प्रकाशित किए हैं, जिसमें पुलिस के उन अत्याचारों और उसकी उस नृशंसता का वर्णन किया गया है, जिसका नमूना उसने सितम्बर में होने वाले उपद्रवों के अवसर पर दिखाया था। अपने एक सम्पादकीय लेख में 'गार्जियन' लिखता है कि पत्र से यह स्पष्ट हो जाता है कि पुलिस ने अपना कर्त्तव्य-पालन करने के लिए, कई अवसरों पर जिस नृशंसता और पाशविकता का उपयोग किया है, उससे भारत की स्थिति और भी ख़राब हो गई है। पुलिस के अत्याचारों की वृद्धि के साथ भारतीय आन्दोलन की प्रगति भी अत्यन्त प्रबल वेग से बढ़ी है।

—नागपूर से ख़बर आई है कि १३ दिसम्बर से विदेशी वस्त्र-बहिष्कार का आन्दोलन वहाँ बहुत ज़ोरों से शुरू किया गया है। पिकेटिङ्ग भी बहुत ज़ोरों से की जा रही है। बहुत से फुटकर बेचने वालों ने भी अपने विदेशी कपड़ों पर सील लगवा ली है।

—मध्य-प्रान्त के एक प्रमुख नेता श्रीयुत डॉक्टर खरे, जो कि नागपुर जेल में सज़ा भुगत रहे हैं, बीमार हैं।

—बरेली ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्रीयुत सेठ दामोदरस्वरूप, जो कि नमक-सत्याग्रह के अपराध में जेल भेजे गए थे, तारीख़ १२ दिसम्बर को फ़ैज़ाबाद जेल से छोड़ दिए गए। कारावास अवधि में आपका वज़न २० पौण्ड घट गया है और आप आजकल बहुत कमज़ोर हैं।

अमृतसर में लाठियों की वर्षा

सैकड़ों आदमी घायल

अमृतसर के विदेशी वस्त्र के व्यापारी श्रीयुत तुलसीराम करमचन्द ने ६ दिसम्बर को कुछ विदेशी माल बाहर भेजने का प्रयत्न किया। इसकी ख़बर पाते ही कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक वहाँ जा पहुँचे और उन्होंने पिकेटिङ्ग करना शुरू कर दिया। कुछ स्वयंसेवकों ने 'सियापा' भी मनाया। पुलिस ने वहाँ पहुँच कर कई स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। इससे प्रोत्साहित होकर तारीख़ १० दिसम्बर को और ज़ोरों से धरना दिया गया और ४ बजे शाम तक गिरफ़्तारियों की संख्या १०० तक पहुँच गई। इस तमाशे को देखने के लिए प्रातःकाल दर्शकों की बहुत बड़ी भीड़ वहाँ इकट्ठी थी। पुलिस ने इस जनता पर बड़ी क्रूरता से लाठियों का वार किया। कई लोग दौड़ा-दौड़ा कर भी पीटे गए।

इस क्रूरता का यहीं अन्त नहीं हुआ, उसी दिन दोपहर को कुछ स्वयंसेवकों ने विदेशी वस्त्र के व्यापारियों का एक जनाज़ा निकाला, इस जुलूस में बहुत सी जनता शामिल थी। सिटी मैजिस्ट्रेट ने जनता को हट जाने का हुक्म दिया। इस हुक्म का अनादर करने पर पुलिस ने जनता पर लाठियाँ चलाईं। इस सम्बन्ध में शाम को शहर में एक बड़ा भारी जुलूस निकाला गया; पर पुलिस ने उसे सुनरियाँवाला बाज़ार में रोक दिया और जुलूस में इकट्ठी हुई जनता को वहाँ से हट जाने का हुक्म हुआ। उनके इनकार करने पर क़रीब ३५ कार्यकर्ता, जिनमें श्रीयुत स्वामी आनन्द तथा कई महिलाएँ थीं, गिरफ़्तार कर लिए गए। इसके बाद पुलिस ने फिर लाठियाँ चलाईं, जिसमें क़रीब दो सौ आदमी बुरी तरह घायल हुए। किसी की उम्र या इज़्ज़त का ख़याल ज़रा भी नहीं किया गया और नन्हें-नन्हें बच्चों से लेकर बूढ़ों तक पर क्रूरता से लाठियाँ चलाई गईं। पुलिस वालों ने वहाँ इकट्ठी हुई महिलाओं को बुरी-बुरी गालियाँ दीं और उन पर कूड़ा फेंका। छत पर से तमाशा देखने वाली महिलाओं पर भी आक्षेप किए गए। इस तीन बार की लाठियों की वर्षा से अमृतसर के क़रीब ३०० मनुष्य घायल हुए हैं। घायलों की संख्या का बिलकुल ठीक पता नहीं चला है। फ्री प्रेस की रिपोर्ट से तो मालूम होता है कि क़रीब २०० आदमियों को चोटें आई हैं। सेवा-समिति के स्वयंसेवकों ने घायलों का उपचार किया। पुलिस वालों ने इन लोगों पर भी वार किया और कई स्वयंसेवकों को भी घायल किया गया।

—श्रीयुत विट्ठल भाई पटेल को, जो कि अस्वस्थावस्था में कोइम्बटूर लाए गए हैं, अभी भी पेट की पीड़ा से बहुत कष्ट है। हाल की यात्रा से आपका वज़न एक पौण्ड और घट गया है। आपको भोजन की सुविधा के लिए जेल में एक गुजराती रसोइए का प्रबन्ध किया गया है।

सरदार पटेल दन्त-रोग से पीड़ित

सरदार वल्लभ भाई पटेल को, जो हाल में फिर से गिरफ़्तार कर लिए गए हैं, दाँत की पीड़ा से बहुत कष्ट है। बम्बई जेल में पहुँचने पर जेल के डॉक्टर ने आपका निरीक्षण किया, पर उससे आपको कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। अब आपको अपने डॉक्टर श्रीयुत देसाई से इलाज करवाने की अनुमति मिल गई है। डॉक्टर देसाई ने एक्स-रे द्वारा आपका निरीक्षण किया है और कुछ दवा भी दी है। दाँत की पीड़ा से आपको बहुत कष्ट है और आप बहुत कमज़ोर मालूम होते हैं।

बम्बई में विदेशी वस्त्र भरी लॉरी के नीचे दब कर स्वयंसेवक की अकाल मृत्यु

१२ दिसम्बर को क़रीब ११ बजे मूलजी जेठा बाज़ार से दो विदेशी वस्त्रों से भरी हुई लॉरियाँ चलीं। ये लॉरियाँ मेनचेस्टर के कारख़ाने के एजेण्ट मिस्टर जॉर्ज फ़्रेजर की थीं। वे पुलिस की सहायता से विदेशी वस्त्र एक मुसलमान दूकानदार के यहाँ तक ले जाने की कोशिश कर रहे थे। इसको रोकने के लिए ६ स्वयंसेवक सड़क पर लेट गए। पर इन्हें पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया। धीरे-धीरे भीड़ इकट्ठी हो गई, और उन्होंने राष्ट्रीय नारे लगाना आरम्भ किया, पर इससे लॉरी वालों पर कुछ असर न पड़ा, वे लॉरियाँ बढ़ा ले गए।

इतने ही में एक और लॉरी निकली; इसमें भी विदेशी वस्त्र भरे थे। दो स्वयंसेवक राह में लेट गए, पर पुलिस ने इन्हें गिरफ़्तार कर लिया। आगे दो और स्वयंसेवकों ने इसी तरह लॉरी को रोकने का प्रयत्न किया, पर वे भी गिरफ़्तार कर लिए गए। इस तरह लॉरी बढ़ती ही गई। भीड़ भी बेतरह इकट्ठी हो गई। लॉरी के पीछे-पीछे एक पुलिस की मोटर थी, जिसमें दो सार्जेण्ट और १० सिपाही बैठे थे। लॉरी के दो पहियों में पङ्क्चर हो गया था। फिर भी वह कालबा देवी रोड तक पहुँच गई। यहाँ इस भीड़ ने भयानक रूप धारण कर लिया। इसमें से एक व्यक्ति ने, कहा जाता है, लॉरी के ड्राइवर को नाक में मार कर उसे बेहोश कर दिया। यह देख कर पुलिस सार्जेण्ट क्लिटर ने दौड़ कर लॉरी को चलाने का प्रयत्न किया। इस प्रयत्न में एक स्वयंसेवक श्रीयुत बाबू गनू को धक्का लगा, वह गिर पड़ा और लॉरी उसके ऊपर से चली गई। उसे इससे बहुत गहरी चोट आई और उसकी मृत्यु हुई! चोट लगने के समय से मृत्युकाल तक उसे ज़रा भी होश नहीं आया। आपकी आयु केवल २२ वर्ष की थी। मृत्यु के बाद आपका शव कॉङ्ग्रेस के नए अस्पताल में लाया गया।

स्वर्गीय बाबू गनू के मृत्यु-स्थल पर शाम तक बहुत सी भीड़ इकट्ठी रही। क़रीब साढ़े दस बजे रात को पुलिस वहाँ पहुँची और भीड़ को हटाने के लिए उसने लाठियाँ चलाईं, जिसमें ७ मनुष्य तथा एक महिला को चोटें आईं। इस क्रूरता से जोश में आकर क़रीब के रहने वालों ने उस स्थल पर विदेशी वस्त्रों का एक ढेर इकट्ठा किया और उसकी होली जलाई। रात भर यह रास्ता बन्द रहा और वहाँ पर पुलिस का पहरा भी रहा।

बम्बई के पुलिस-सारजण्टों का स्त्रियों से हाथापाई करने का एक साधारण दृश्य

५वीं दिसम्बर को 'गाँधी-दिवस' के अवसर पर आज़ाद मैदान में राष्ट्रीय झण्डे के अभिवादन की भी योजना की गई थी, जिसे इधर पुलिसवालों ने सफल न होने देने की शपथ खा ली थी और उधर स्त्रियों ने इस बात की शपथ खाई थी, कि बिना ज़ख़्मी अथवा विवश हुए, वे भी राष्ट्रीय झण्डे को छीनने न देंगी। पाठक इस चित्र में देखेंगे कि पुलिस के गोरे-सारजण्ट कितनी निर्दयता से स्त्रियों पर बल-प्रयोग कर रहे हैं!

अहमदाबाद में लाठियों की वर्षा

१४ दिसम्बर को अहमदाबाद के खादिया वार्ड कॉङ्ग्रेस कमिटी ने एक जुलूस निकालना निश्चय किया। जुलूस के बाद एक सभा होने वाली थी, जिसमें ज़ब्त पुस्तकें पढ़ने का विचार किया गया था।

जैसे ही जुलूस निकला, पुलिस ने उसे रोक दिया और पाँच कार्यकर्ताओं को गिरफ़्तार कर लिया। इससे वहाँ बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई और एक दूसरा जुलूस, जिसमें स्त्रियाँ सब से आगे चल रही थीं, दूसरी ओर से बढ़ा। पुलिस ने स्त्रियों को जुलूस से अलग करके उन्हें पुलिस-चौकी में बन्द कर दिया। इसके बाद जुलूस पर लाठियाँ चलाईं। पर भीड़ बढ़ती ही गई और कई छोटे जुलूस निकाले गए। पुलिस ने सब पर लाठियाँ चलाईं। आहत मनुष्य कॉङ्ग्रेस अस्पताल में रक्खे गए हैं।

बाद को स्त्रियाँ छोड़ दी गईं, पर इस सम्बन्ध में नौ आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं।

बम्बई में लाठियों की वर्षा से ७५ मनुष्य घायल :: बाबू गनू के शव का जुलूस रोका गया

१३ दिसम्बर को प्रातःकाल ८ बजे बाबू गनू के शव का एक जुलूस नए कॉङ्ग्रेस अस्पताल से निकला। यह एक लम्बा चक्कर लेकर चौपाटी पर जा रहा था, जहाँ पर अन्त्येष्टि क्रिया करना निश्चय किया गया था। परन्तु चौपाटी से कुछ दूर पर ही पुलिस और अङ्गरेज़ी फ़ौज ने इनका रास्ता रोक दिया। जुलूस के लोग वहीं बैठ गए। क़रीब १२॥ बजे पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, जिससे कुछ लोग घायल हुए। इससे प्रोत्साहित होकर जुलूस की महिलाएँ आगे बढ़ कर बैठ गईं और लाठी खाने को तैयार हो गईं। सारा जुलूस सड़क पर बैठा रहा।

क़रीब १॥ बजे श्रीयुत मुन्शी तथा श्री० जमनादास मेहता घटना-स्थल पर पहुँचे और पुलिस कमिश्नर से बहुत देर बात करने के बाद उन्होंने चौपाटी पर अन्त्येष्टि क्रिया करने का विचार छोड़ दिया। इससे पुलिस और फ़ौज हटा ली गई। क़रीब ३ बजे सोनापूर में स्वर्गीय बाबू गनू की अन्त्येष्टि क्रिया की गई। इस स्थान पर तथा रॉयल ऑपेरा हाउस, जहाँ पर जुलूस रोका गया था, रात तक बराबर भीड़ इकट्ठी रही। इसको हटाने के लिए पुलिस ने कई बार लाठियाँ चलाईं। क़रीब ३॥ बजे शाम को रॉयल ऑपेरा हाउस के सामने इकट्ठे हुए लोगों ने कहा जाता है, कुछ पत्थर फेंके, इस पर पुलिस ने लाठियाँ चलाईं। क़रीब ५० आदमी आहत हुए। इस दिन के लाठियों के वार से क़रीब ७५ मनुष्यों को उपचार की आवश्यकता पड़ी। इनमें से २० अभी तक बिस्तर पर पड़े हैं।

शाम को इस सम्बन्ध में एक बड़ा जुलूस निकाला गया। जुलूस में भाग लेने वाले सब लोग नङ्गे सिर थे। जुलूस के बाद आज़ाद मैदान में एक विराट सभा हुई।

विदेशी वस्त्र का गोदाम जला दिया गया

जिस गोदाम से विदेशी वस्त्र हटाने के सम्बन्ध में बम्बई के कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक बाबू गनू की मृत्यु हुई थी, १२ तारीख़ की रात को किसी ने उसके सारे कपड़ों के गट्ठों में आग लगा दी। इस सम्बन्ध में पुलिस जाँच कर रही है। अभी एक भी गिरफ़्तारी नहीं हुई है।

पण्डित मोतीलाल का स्वास्थ्य

इस हफ़्ते की दैनिक रिपोर्ट के पढ़ने से मालूम होता है कि इस हफ़्ते में पण्डित जी का स्वास्थ्य काफ़ी ठीक रहा। आपके थूक के साथ ख़ून भी नहीं निकला और ज्वर भी नहीं आया। आप धीरे-धीरे निरोग हो रहे हैं।

—९ दिसम्बर को लाहौर की महिलाओं ने एक विराट सभा की, जिसमें उन्होंने पण्डित मोतीलाल जी को शीघ्र आरोग्य करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

—१४ दिसम्बर को मध्य प्रान्त की मराठी ज़िलों की युद्ध-समिति ने पण्डित मोतीलाल जी को आरोग्य करने के लिए प्रार्थना-दिवस मनाना निश्चय किया था। उस दिन प्रत्येक शहर में जुलूस निकाले गए और सभाएँ की गईं जिनमें पण्डित जी की शीघ्र निरोग करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की कार्यकारिणी सभा ने इलाहाबाद निवासियों का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है। इसलिए इस संस्था की अगामी बैठक इलाहाबाद में होगी।

बम्बई में फिर से लाठी वर्षा

कालबादेवी रोड के उस स्थान पर, जहाँ कि कॉङ्ग्रेस स्वयंसेवक बाबू गेनू की मृत्यु हुई है, प्रति दिन बहुत भीड़ इकट्ठी होती है। लोग उस स्थान पर फूल और कुङ्कुम चढ़ाते हैं और धूप जलाते हैं। १४ दिसम्बर की रात को वहाँ बहुत सी जनता इकट्ठी हुई। हटाने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, जिससे १२ आदमियों को चोटें आईं।

बहिष्कार का परिणाम

६ करोड़ २० लाख गज़ कपड़ा सन् १६३० में कम आया

'बम्बई मिल-मालिक एसोसिएशन' की नवम्बर की मासिक रिपोर्ट हाल ही में प्रकाशित हुई है, जिससे बहिष्कार के विदेशी कपड़े के व्यापार के सम्बन्ध में बहुत उपयोगी और ज्ञातव्य बातों का पता चलता है। रिपोर्ट से मालूम हुआ है, कि भारत के हर एक प्रान्त में—और विशेषतः बम्बई में विदेशी कपड़े के आयात में बहुत कमी हुई है।

रिपोर्ट में प्रकाशित संख्या के अनुसार इस साल विदेशी कपड़ा भारत में ६ करोड़ २० लाख गज़ कम आया है। सन् १९२९ के केवल अक्टूबर मास में सूती कपड़े का कुल आयात १३,५०,००,००० गज़ था, परन्तु सितम्बर सन् १९३० में उसका आयात ४,९०,००,००० गज़ और अक्टूबर, सन् १९३० में ४,३०,००,००० गज़ ही रह गया !!

बेलगाँव में लाठी चली

बेलगाँव के सिटी मैजिस्ट्रेट ने वहाँ की प्रभात-फेरी को रोकने के लिए उन पर १४४ दफ़ा लगा दी है। फिर भी १५ दिसम्बर को प्रभात-फेरी वाले निकले, पर पुलिस ने उन्हें घेर लिया और ३५ आदमियों को गिरफ़्तार किया। इनमें से एक के अतिरिक्त सब शाम को छोड़ दिए गए। १६ तारीख़ को फिर प्रभात-फेरी वालों को पुलीस ने रोक लिया और ६० स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया। जब पुलिस गिरफ़्तार किए हुए लोगों को ले जा रही थी तब कहा जाता है, पुलिस और जनता में मुठ-भेड़ होगई और जनता को भगाने के लिए पुलिस ने लाठियाँ चलाईं, जिससे क़रीब १२ आदमी घायल हुए।

—'बॉम्बे क्रॉनिकल' के प्रकाशक तथा मुद्रक श्रीयुत सोराब जी कपाडिया ने, जिन्हें 'बॉम्बे क्रॉनिकल' के सम्पादक श्रीयुत ब्रेलवी के साथ कारावास का दण्ड दिया गया था, बम्बई हाईकोर्ट में जो अपील की थी, जो १६ दिसम्बर को ख़ारिज कर दी गई।

श्रीयुत पटेल का स्वास्थ्य

मद्रास से ख़बर आई है कि श्रीयुत विट्ठल भाई की बीमारी से चिन्तित होकर १६ दिसम्बर को श्रीयुत शमुखम चेट्टी राय, एम० एल० सी०, श्रीयुत रत्न सभापति, एम० एल० सी० और श्रीयुत सी० वी० वेङ्कट रामाल आयङ्गर कोइम्बटूर से मद्रास आए। और उन्होंने मद्रास के लॉमेम्बर से मुलाक़ात की। उन्होंने कहा कि क़रीब एक हफ़्ते से श्रीयुत पटेल का स्वास्थ्य बहुत ख़राब है। इसलिए उन्हें ऐसे डॉक्टर के उपचार में रखना चाहिए, जिस पर उन्हें पूर्ण विश्वास हो। उन्होंने कहा कि श्रीयुत पटेल को कोइम्बटूर की आबहवा से ख़ास शिकायत नहीं है। पर आप क़ब्ज़, हरनिया और बवासीर से पीड़ित हैं। उन्होंने यह भी कहा कि श्रीयुत पटेल वहाँ अकेले घबराते हैं, इसलिए कुछ "ए" दर्जे के क़ैदी कोइम्बटूर भेज दिए जावें। लॉमेम्बर ने इन सब बातों पर ध्यान देने का वचन दिया है।

क़िस्मत का फेर !

एसेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट को एक अदना पुलिस-ऑफ़िसर की आज्ञा के सामने नत-मस्तक होना पड़ा !!

दिल्ली के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में एसेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट पटेल और पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० अली के सम्बन्ध में निम्न घटना प्रकाशित हुई है :—

"भाग्य का चक्र विचित्र होता है। प्रेज़िडेण्ट पटेल की अम्बाला से दिल्ली तक की यात्रा के सम्बन्ध में हाल ही में एक मनोरञ्जक घटना का पता लगा है। मालूम हुआ है कि श्री० पटेल को अम्बाला जेल से दिल्ली लाने वालों में पुलिस के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० अली भी थे। ये वे ही महाशय हैं, जिन्हें प्रेज़िडेण्ट पटेल ने अपने नए शासन में असेम्बली का 'वाच एण्ड वार्ड' ऑफ़िसर नियुक्त किया था। जिस समय श्री० पटेल दिल्ली में गिरफ़्तार हुए थे, उस समय इन्हीं महाशय ने उनका दिल्ली जेल के फाटक पर स्वागत भी किया था। जिस समय जेल के फाटक पर श्री० पटेल मोटर से उतरे मि० अली ने सदैव की भाँति उन्हें सलाम किया; इस पर श्री० पटेल व्यङ्गपूर्वक हँसे और उन्होंने कहा कि "अभी अब कोई ऑर्डर नहीं है, असेम्बली सदैव के लिए स्थगित कर दी गई है।" जब मि० अली उन्हें दिल्ली स्टेशन पर लाए तब भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट ने इस बात पर बहुत अधिक ज़ोर दिया कि उन्हें रात्रि में दिल्ली में ही रक्खा जाय, क्योंकि मोटर-यात्रा से उनका अस्वस्थ शरीर और भी अधिक निर्बल हो गया था। पुलिस ने प्रत्युत्तर में कहा कि उन्हें श्री० पटेल को सीधा मद्रास ले जाने की आज्ञा मिली है। श्री० पटेल ने एक निराशा-भरी हँसी हँस कर कहा—"अली! मुझे दुःख है, अब मैं किसी के विरोध की अवहेलना नहीं कर सकता!" इतना कह कर वे स्टेशन पर खड़ी हुई मद्रास-मेल पर जाने के लिए तैयार हो गए।"

वायसराय के प्रति शोलापूर की स्त्रियों की प्रार्थना

शोलापूर के १४ स्त्री-सङ्घों की ओर से लेडी लक्ष्मीबाई जगमोहनदास ने वायसराय को तार दिया है। उसमें उन्होंने प्रार्थना की है कि शोलापूर के उन अपराधियों को, जिनको फाँसी का दण्ड दिया गया है, क्षमा प्रदान की जावे। इसी उद्देश्य से एक और तार लेडी इरविन को भी दिया गया है।

दिल्ली के वकीलों के घरों पर पिकेटिङ्ग

खद्दर पहिनने से इनकार करने पर दिल्ली के दो एडवोकेट श्रीयुत रावबहादुर रामकिशोर तथा श्रीयुत ख़ानबहादुर अब्दुल रहमान के घरों पर १६ दिसम्बर को धरना दिया। कुछ दिन पहिले दिल्ली के बार-एसोसिएशन ने खद्दर पहिनने का प्रस्ताव पास किया था। फिर दिल्ली की महिला-स्वयंसेविकाओं ने भी यह नोटिस दिया था कि जो वकील खद्दर पहिनने से इनकार करेगा उसके घर पर धरना दिया जावेगा। परन्तु इस पर भी इन दो वकीलों ने खद्दर पहिनने से इनकार किया। इससे इनके घरों पर पिकेटिङ्ग की गई।

इसके फलस्वरूप उसी दिन शाम को रावबहादुर रामकिशोर ने खद्दर पहिनने का वचन दे दिया, पर अभी ख़ानबहादुर का दिल नहीं पसीजा है।

हाईकोर्ट द्वारा श्री० नगीनदास मास्टर की सज़ा रद्द कर दी गई

श्री० नगीनदास मास्टर

श्रीयुत नगीनदास मास्टर, जो कि बम्बई की युद्ध-समिति के डिक्टेटर थे और जो नवें ऑर्डिनेन्स के अनुसार १५वीं अक्टूबर को गिरफ़्तार किए गए थे, तारीख़ ११ दिसम्बर को नासिक जेल से रिहा कर दिए गए। बम्बई के हाईकोर्ट के न्यायाधीशों ने कहा कि चूँकि बम्बई युद्ध-समिति को ग़ैर-क़ानूनी ठहराने का नोटिस देने के पहिले ही आप गिरफ़्तार कर लिए गए थे, आपकी गिरफ़्तारी क़ानून के ख़िलाफ़ है। इसलिए हाईकोर्ट ने आपकी सज़ा रद्द कर दी।

श्री० मनीलाल कोठारी राजकोट से निकाल दिए गए

मोटरों और चारपाइयों से रास्ता रोका गया !

बधवान सिटी का १३ वीं दिसम्बर का समाचार है कि राजकोट स्टेट से श्री० मनीलाल कोठारी, जो एक अत्यन्तावश्यक निमन्त्रण मिलने के कारण सन्ध्या समय वहाँ से मोटर से रवाना हुए थे—६६ मील की यात्रा के बाद जिस समय उनकी मोटर ६ बजे राजकोट से २ मील दूर आनन्दपुर गाँव में पहुँची, उसी समय राजकोट स्टेट के पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट ने, जो बीच रास्ते में मोटर खड़ी किए था, उन्हें मोटर खड़ी करने का हुक्म दिया और मोटर खड़ी होने पर उसने उन्हें शासन सभा के श्री० आफ़ और श्री० देवशङ्कर दवे का वह ऑर्डर दिखाया, जिसमें उन्हें राजकोट में

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम के नीचे देखिए)

अण्डाकार-मेज़ के 'प्रतिनिधियों' को मि० चर्चिल का थप्पड़

गाँधीवाद और उसके समस्त साधनों को कुचल डालने का प्रस्ताव

भारत को स्वराज्य कदापि नहीं मिल सकता !!

"अभी तक भारतीयों को मीठी बातों के सिवाय, न तो भारतीय गवर्नमेण्ट ने कुछ दिया और न सम्राट की गवर्नमेण्ट ने। इसलिए स्पष्ट रूप से यह घोषित कर देना अत्यन्तावश्यक प्रतीत होता है, कि भारत पर से शासन की बागडोर ढीली करने की ब्रिटेन की तनिक भी इच्छा नहीं है और गोलमेज़ परिषद को शासन-विधान बनाने का कोई अधिकार नहीं है। उसके निर्णयों को मानने के लिए पार्लामेण्ट न तो नैतिक दृष्टि से बाध्य है और न क़ानून की दृष्टि से।...सन्, १९२० का एक्ट अचल चट्टान की नाईं स्थित रहेगा।...... गाँधीवाद और उसके सब साधनों को जितनी जल्दी हो सके कुचल डालना चाहिए। शेर को बिल्ली का मांस खिला-खिला कर सन्तुष्ट करना निरर्थक है।......सम्राट के मुकुट में से वह अमूल्य हीरा, जो सब उपनिवेशों और संरक्षित राज्यों से अधिक मूल्यवान है और जिस पर ब्रिटिश साम्राज्य की समस्त शक्ति और वैभव निर्भर है, निकाल फेंकने की हमारी तनिक भी इच्छा नहीं है।"

लन्दन में ११वीं दिसम्बर को 'भारतीय साम्राज्य सोसाइटी' के उपलक्ष में शहर के व्यापारियों की एक सभा हुई थी, जिसके सम्बन्ध में यह घोषणा की गई थी, कि उसका राजनीति से कोई सम्बन्ध न रहेगा। इस सभा में मि० चर्चिल ने एक वक्तृता दी थी, जिसमें उन्होंने कहा है, कि अभी तक भारतीयों को मीठी बातों के सिवाय, न तो भारतीय गवर्नमेण्ट ने ही कुछ दिया है और न सम्राट की गवर्नमेण्ट ने। इसलिए स्पष्ट रूप से यह घोषित कर देना अत्यन्तावश्यक प्रतीत होता है, कि भारतीयों के जीवन और उनकी उन्नति के अधिकारों पर से शासन की बागडोर ढीली करने की ब्रिटेन की तनिक भी इच्छा नहीं है और गोलमेज़ परिषद को शासन-विधान बनाने का कोई अधिकार नहीं है! उसके निर्णयों को मानने के लिए पार्लामेण्ट, न तो नैतिक दृष्टि से बाध्य है और न क़ानून की दृष्टि से। उन्होंने कहा कि हाउस ऑफ़ कॉमन्स में इस समय भी अधिकांश संख्या ऐसे सदस्यों की है, जो भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य नामक कोई चीज़ देने के कट्टर विरोधी हैं; और यह निश्चित है कि 'गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया एक्ट' पार्लामेण्ट के सामने पेश होने के पहले ही इङ्गलैण्ड में नए 'हाउस ऑफ़ कॉमन्स' का प्रादुर्भाव हो जायगा। "इसलिए लगातार सत्य को छिपाने और समस्याओं का दृढ़तापूर्वक सामना न करने का परिणाम यह होगा, कि उससे झूठी आशाओं का सञ्चार होगा और उससे अन्त में झगड़ा और कष्ट बढ़ेगा।" मि० चर्चिल की सम्मति से यदि भारत स्वतन्त्र कर दिया जाय, तो उसका वैसा पतन हो जायगा, जैसा चीन का हुआ है! भारतीय मनोवृत्ति में जो परिवर्तन हुआ है, उसका कारण भारतीय प्रजा नहीं है, बल्कि उसका प्रधान कारण हमारी राजनीति का पतन और हमारी मानसिक निर्बलता है! उन्होंने भारतीय प्रजा को इस बात की चेतावनी दी है कि 'उसके मित्र' ऊपरी दिखावट के चकमे में आने वाले नहीं हैं। पश्चिमीय प्रजातन्त्र राजनीति पर वादविवाद होता रहेगा और गोलमेज़ में हवाई महल बनते रहेंगे, परन्तु भारत पर (ब्रिटिश लोगों का) शासन कार्य सञ्चालित होता रहेगा। भारत के २४ हज़ार राजनीतिज्ञ या वञ्चक समस्त देश में जेलों में बन्द हैं! अशान्ति का दमन कर दिया गया है और गाँधी के आन्दोलन पर विजय प्राप्त की जा चुकी है। मि० चर्चिल ने ब्रिटिश राष्ट्र से अपनी शक्ति का अनुभव करने की और उसके सहारे भारत में दृढ़ शासन स्थापित करने की प्रार्थना की है।

'कॉङ्ग्रेस को कुचल डालो'

उन्होंने इस बात की घोषणा की कि यदि जल्दी औपनिवेशिक स्वराज्य देने की आशा न दी जाती, हमने भारतीय प्रजा की आर्थिक दशा उन्नत बनाने के सम्बन्ध में अपनी शक्ति एकत्र की होती, यदि लाहौर की कॉङ्ग्रेस, जिसने 'यूनियन जैक' जलाया था, भङ्ग कर दी गई होती और उसके नेता निर्वासित कर दिए गए होते, और यदि गाँधी उसी समय गिरफ़्तार कर लिए गए होते, जब उन्होंने नमक-क़ानून भङ्ग किया था, तो अभी इतनी क़ानूनी कार्यवाही की आवश्यकता न पड़ती।

कुमारी मनीबेन पटेल तथा कुमारी नौरोजी जेल से छूट आईं
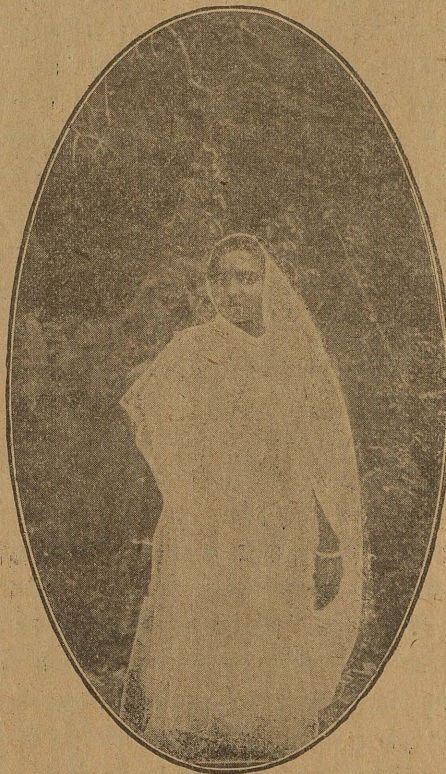
सरदार वल्लभभाई पटेल की विदुषी पुत्री कुमारी मनीबेन पटेल

सरदार वल्लभ भाई पटेल की सुपुत्री कुमारी मनीबेन पटेल और स्वर्गीय दादाभाई नौरोजी की पौत्री कुमारी के० नौरोजी ८ दिसम्बर को जेल से छूट आईं।

उन्होंने कहा कि १९२० का एक्ट अचल चट्टान की नाईं स्थित रहेगा।

नई पार्लामेण्ट को इस बात का निश्चय करना होगा कि भारत के सम्बन्ध में अब क्या करना चाहिए। 'भारत के शासन-विधान के निर्णय सम्बन्धी हमारे अधिकार और हमारी शक्ति में कोई दख़ल नहीं दे सकता।' हम सुधार बन्द करने और उन्हें वापस लेने में स्वतन्त्र हैं। यह स्पष्ट है कि समस्त भारत के लिए शासन-विधान का विचार मात्र ही बहुत बुरा है। उनके विचार से केन्द्रीय-शासन के स्थान में भारत के प्रान्तों को स्वराज्य के अधिकार दिए जायँ और उनके उन्नत होने पर समस्त भारत के लिए एक गवर्नमेण्ट स्थापित की जाय।

गोलमेज़ के प्रतिनिधि सच्चे भारत के प्रतिनिधि नहीं हैं

उन्होंने श्रोताओं का ध्यान इस बात पर आकर्षित किया कि वे भारतीय, जो गोलमेज़ परिषद में एकत्र हुए हैं, भारत की उन शक्तियों के सच्चे प्रतिनिधि नहीं हैं, जिसने भारत में ब्रिटिश राज्य को चैलेञ्ज दे दिया है। उन्हें अपने निर्णयों के अनुसार कॉङ्ग्रेस पार्टी को बाँधने का अधिकार नहीं है। सोशियालिस्ट गवर्नमेण्ट के सुधार देने से क्रान्तिकारियों की माँगें बढ़ती ही जायँगी। सच बात तो यह है कि गाँधीवाद और उसके सब साधनों को जितनी जल्दी हो सके, शिकञ्जे में जकड़ कर कुचल डालना चाहिए। शेर को बिल्ली का मांस खिला-खिला कर सन्तुष्ट करना निरर्थक है।

अन्त में मि० चर्चिल ने कहा कि "हमारी इच्छा सम्राट के मुकुट में से वह अमूल्य हीरा, जो अन्य सब उपनिवेशों और संरक्षित राज्यों से अधिक मूल्यवान है और जिस पर ब्रिटिश साम्राज्य की समस्त शक्ति और वैभव निर्भर है, निकाल फेंकने की तनिक भी नहीं है। हमें अभी भी यह सीखने की आवश्यकता है, कि उस राष्ट्र का, जिसने इतना वैभव सम्पन्न किया है, आत्म-विश्वास की कमी और नैतिक पतन के कारण, अधःपतन हो जायगा।"

इस सभा के सभापति विस्काउण्ट समनर थे और लॉर्ड इञ्चकेप, लॉर्ड इस्लिङ्गटन, लॉर्ड डेम्सफ़ोर्ट, सर माइकिल ओडायर और सर रेगीनाल्ड क्रेडक आदि महामना सभा में उपस्थित थे।

* * *

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

सेक्रेटरिएट के फाटक बन्द !

पुलिस का सख़्त पहरा; अफ़सरों तक को पास दिए गए

कलकत्ते का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि भविष्य में षड्यन्त्रकारियों के उपद्रव से रक्षा करने के लिए 'राइटर्स बिल्डिङ्ग' के डेलहाउज़ी स्क्वायर वाले दरवाज़े को छोड़ कर और सब दरवाज़े जनता के लिए बन्द कर दिए गए हैं। मालूम हुआ है कि बड़े-बड़े अफ़सरों को पास दिए जायँगे और साधारण कर्मचारी धातु के बने डिस्कों का उपयोग करेंगे। फाटक पर पुलिस का सख़्त पहरा लगा दिया गया है। यह भी कहा जाता है कि दर्शकों को अन्दर जाने की आज्ञा देने के लिए एक विशेष अफ़सर नियुक्त किया गया है।

तलाशी लेते समय बम फटा

चिटगाँव में १०वीं दिसम्बर को सवेरे पुलिस ने शहर भर में लेफ़्टिनेण्ट-कर्नल सिमसन की हत्या के सम्बन्ध में २२ घरों की तलाशी ली। जिस समय पुलिस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के हेड क्लर्क बाबू विनोद चौधरी के घर की तलाशी ले रही थी, उस समय ऊपर की मञ्ज़िल में एक बम फटा और उससे एक बुढ़िया घायल हुई। पुलिस उसी समय ऊपर के मञ्ज़िल में दौड़ी गई और उसने कीलें, काँच के टुकड़े और तार बटोर लिए। बम के रसायनों के प्रमुख इन्स्पेक्टर, जो इस समय वहाँ चिटगाँव शस्त्रागार षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में गवाही दे रहे हैं, उस घर की तलाशी ले रहे हैं। श्री० चौधरी तथा बङ्किम कोतवाली में रोक लिए गए हैं, और उनके भतीजे नारायण चौधरी, जो मैट्रिक क्लास के विद्यार्थी हैं, हिरासत में रख लिए गए हैं।

—चिटगाँव का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि नारायण चौधरी ने सब-डिवीज़नल मैजिस्ट्रेट के सम्मुख एक लम्बा बयान दिया है, जिसके परिणाम स्वरूप उसका पड़ोसी सुधीर चटर्जी भी गिरफ़्तार कर लिया गया है। विनोद चौधरी और कलेक्टर के ऑफ़िस के क्लर्क बङ्किम को ज़मानत देने की आज्ञा दी गई है। १२ ता० को और भी बहुत से घरों की तलाशी ली गई। पुलिस उनमें से बहुत सी किताबें उठा ले गई है।

इलाहाबाद की धर्मशाला में बम फटा :: तीन गिरफ़्तार हुए

इलाहाबाद में ११वीं दिसम्बर को सवेरे मुट्ठीगञ्ज में एक नाई की मृत्यु हो जाने के सन्देह में तीन आदमी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। पुलिस का कहना है कि नाई की मृत्यु बम के रासायनिक द्रव्यों के भभकने से हुई है। पुलिस ने इन रासायनिक द्रव्यों के भभकने के स्थान का भी पता लगा लिया है। उसने मुट्ठीगञ्ज में नाई के घर के पास की धर्मशाला की तलाशी ली और वहाँ एक कमरे में उसे निम्न पदार्थ प्राप्त हुए :—

सलफ़र साल्टपीटर, लोहे की कीलों के टुकड़े, काँच के टुकड़े। एक ख़ाली नारियल और आदमी के मांस के टुकड़े (मृतक नाई के एक हाथ की अँगुलियाँ द्रव्य भभकने के कारण उड़ गई थीं।)

धर्मशाला की दीवार पर उस प्रकार के निशान भी बने थे, जैसे बम फटने से या गोली चलाने से बन जाते हैं। पोस्ट मार्टम के समय नाई के शरीर में से भी कुछ ऐसे द्रव्य निकाले गए थे। वे पुलिस को दे दिए हैं।

मालूम होता है कि पुलिस ने इन बातों से यह निष्कर्ष निकाला है, कि नाई बम या बम की तरह कोई पदार्थ बना रहा था, जिसके उद्देश्य का पता नहीं लगता। परन्तु प्रयोग में सफलता प्राप्त करने के पहले ही रसायनों के दुरुपयोग से वे फट पड़े। कोतवाली से जो समाचार प्राप्त हुए हैं, उनके अनुसार धर्मशाला का मालिक फुनई पण्डा, धर्मशाला का एक चपरासी और लाला मल्लाह, जो पुलिस के कहने के अनुसार फुनई का दोस्त है, गिरफ़्तार किए गए हैं। पुलिस को मालूम हुआ है, कि बुधवार को ४ या ५ बजे शाम को एक धड़ाका हुआ था, परन्तु जिस समय पुलिस नाई के घर पहुँची थी उस समय लोगों ने उसे कोई पता नहीं दिया।

—लाहौर का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि ग्वालमण्डी बम-केस में एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के सम्मुख बयान देते हुए हरचरण दयाल ने कहा है कि समाचार-पत्र पढ़ने के उपरान्त उसने बिना किसी लक्ष्य के जङ्गल में प्रयोग करने के लिए बम बनाने का विचार किया। अनारकली के कारीगर के लड़के ने मुक़द्दमे के पक्ष में गवाही दी। यशपाल ने कहा कि अनारकली में उसके पिता का दवाख़ाना है। अभियुक्त हरचरण दयाल, जो डॉक्टर हंसराज का कम्पाउण्डर था, दवाइयाँ ख़रीदने उसकी दूकान पर आया करता था। लगभग डेढ़ माह पहले अभियुक्त ने दूकान से सल्फ़रिक एसिड, पोटेशियम क्लोराइड और कॉर्बोलिक एसिड ख़रीदा था। साइकिल मरम्मत करने वाले चुन्नीलाल ने कहा कि वह अभियुक्त के लिए ढाई माह पहले एक ख़ाली नारियल लाया। दिखाने पर उसने बम का ख़ोल पहचान लिया।

—लाहौर का १०वीं दिसम्बर का समाचार है कि लाहौर के नए षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में स्पेशल ट्रिब्यूनल ने यह स्पष्ट कर दिया है कि केस इस माह में प्रारम्भ न हो सकेगा। सरकारी गवाहों और उनके बयानों की लिस्ट पूरी न हो सकने के कारण केस १५ ता० को स्थगित कर दिया गया। इसके उपरान्त पञ्जाब के क्रिमिनल लॉ अमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार अभियुक्तों को मामले का अध्ययन करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया जायगा और २३ दिसम्बर से २री जनवरी तक अदालत क्रिस्मस के कारण बन्द रहेगी। इस प्रकार मामला २री जनवरी के पहले प्रारम्भ न हो सकेगा। १०वीं दिसम्बर को अभियुक्त क्रान्तिकारी नारे लगाते हुए अदालत में प्रविष्ट हुए थे। अभियुक्तों ने अदालत से वकीलों के ख़र्च के लिए ३००) मञ्ज़ूर करने के लिए कहा। अदालत ने उनकी प्रार्थना लोकल गवर्नमेण्ट के पास भेजना मञ्ज़ूर कर लिया है। अभियुक्त कृष्णगोपाल ने कहा कि कल ता० ६ को एक मैजिस्ट्रेट गवाहों के साथ जेल में आया था और उसने उन्हें अभियुक्तों को बतलाया था। ट्रिब्यूनल ने यह विरोध उपयुक्त अवसर पर उठाने के लिए कहा।

—ढाका का ६वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ कर्नल सिमसन की हत्या के सम्बन्ध में सबेरे बहुत से घरों की तलाशी ली गई है। बङ्गाल-ऑर्डिनेन्स के अनुसार निम्न पाँच आदमी गिरफ़्तार किए गए हैं। स्थानीय पुस्तकालय के मालिक और स्पोर्टिङ्ग क्लब के सेक्रेटरी श्री० सुरेन्द्रलाल दत्त, श्री० अमूल्य नवजीवन दत्त, पेन्शन याफ़्ता डिपुटी मैजिस्ट्रेट रायबहादुर गिरीशचन्द्र नाग के पुत्र श्री० प्रभातचन्द्र नाग और ढाका मेडिकल स्कूल के विद्यार्थी श्री० कामाख्य मुकर्जी—ये मिटफ़र्ड अस्पताल में उस समय गिरफ़्तार किए गए थे जब वे अपनी ड्यूटी पर थे।

—लाहौर का ६वीं दिसम्बर का समाचार है कि दशहरा बम केस के अभियुक्त श्री० अब्दुलग़नी को स्पेशल मैजिस्ट्रेट ने सेशन्स सुपुर्द कर दिया है। पाठकों को स्मरण होगा, कि सन् १९२८ में लाहौर में दशहरे के जुलूस पर एक बम फेंका गया था, जिसके परिणाम स्वरूप ६ आदमी मर गए थे और बहुत से घायल हुए थे। अभियुक्त पर उसी सम्बन्ध में मामला चलाया जा रहा है।

—कलकत्ते का १२वीं दिसम्बर का समाचार है कि दक्षिण कलकत्ते के मकान में बड़े तड़के चुन्नीलाल मुकुर्जी अपने घर में गिरफ़्तार कर लिया गया। तलाशी लेने पर उसके पास एक रिवॉल्वर और बहुत से कारतूस मिले। पुलिस ने यह धावा मि० सिमसन की हत्या के सम्बन्ध में किया था।

षड्यन्त्रकारी सुरेश को आजन्म कालापानी

कलकत्ते का १५वीं दिसम्बर का समाचार है कि अलीपूर के स्पेशल ट्रिब्यूनल ने, जिसके सभापति २४ परगनों के डिस्ट्रिक्ट और सेशन्स जज मि० आर० आर० गार्लिक थे—सुरेशचन्द्र दास को, जिस पर १७वीं अक्टूबर की रात्रि को आर्मीनियन स्ट्रीट में सशस्त्र डकैती के अभियोग में मुक़द्दमा चल रहा था, आजन्म कालेपानी का दण्ड दे दिया। पुलिस के बयानों में कहा गया था कि चार युवक, रिवॉल्वरों और बर्छियों के साथ एक व्यापारी के मकान की दूसरी मञ्ज़िल पर चढ़े थे और मार डालने की धमकी देकर तीन हज़ार रुपए लेकर वहाँ से भागे थे। दरबान के रोकने पर वह गोली से मार डाला गया था। अन्य तीन अभियुक्त भाग गए थे, केवल सुरेश ही गिरफ़्तार किया जा सका था।

दिनेश गुप्त की स्थिति ख़तरनाक

कलकत्ते से समाचार आया है कि गत शनिवार को सबेरे कर्नल सिमसन के घातक दिनेश गुप्त की दशा कुछ अच्छी थी, परन्तु सन्ध्या समय स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक हो गई। उसकी छाती और हाथों के जोड़ों में बहुत दर्द था।

विनय कृष्ण बोस का स्वर्गवास

श्मशान में २ बजे रात्रि को बन्देमातरम की गूँज

१३ दिसम्बर का ६॥ बजे सबेरे श्रीयुत विनय कृष्ण बोस का, जिन पर बङ्गाल पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल लोमैन तथा बङ्गाल के जेलों के इन्स्पेक्टर-जनरल कर्नल सिमसन की हत्या का अभियोग लगाया जाता है, कलकत्ते के मेडिकल कॉलेज के अस्पताल में स्वर्गवास हो गया।

आपकी मृत्यु के बाद आपका पोस्ट मार्टम किया गया। और क़रीब दो बजे कलकत्ते के कॉरोनर श्रीयुत ए० सी० दत्त ने आपके शव का निरीक्षण किया।

श्रीयुत विनय के ज्येष्ठ भ्राता श्रीयुत विजय कृष्ण बोस ने आपकी लाश की अन्त्येष्टि-संस्कार करने की दरख़ास्त दी। इस पर उनसे कहा गया कि आप श्रीयुत विनय की लाश ले जा सकते हैं, पर वह आपको ९ बजे रात के पहिले नहीं मिल सकती। फिर आपको इस शव को पुलिस द्वारा बताए रास्ते से ले जाना पड़ेगा। आपको श्रीयुत विनय की अन्त्येष्टि क्रिया नीमतल्ला में करनी पड़ेगी। इस पर उनके ज्येष्ठ भ्राता ने केवड़ा टोला में अन्त्येष्टि क्रिया करने की प्रार्थना की, पर वह नामञ्ज़ूर कर दी गई।

(शेष मैटर ८वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के अन्त में देखिए)

गोलमेज़ की गाड़ी हिन्दू-मुस्लिम समस्या के दलदल में अटक गई

गोलमेज़ परिषद की गाड़ी हिन्दू-मुस्लिम समस्या के रोड़े में अटकी है ब्रिटिश प्रधान-मन्त्री मैकडॉनल्ड स्वतः इस विषय में काफ़ी दिलचस्पी दिखा रहे हैं, पर इससे अभी तक यह समस्या कुछ ठीक तरह से हल नहीं हुई है।

तारीख़ १० से लेकर १४ तक प्रधान सचिव के घर पर मुख्य-मुख्य हिन्दू तथा मुसलमान सदस्य इकट्ठे हुए। हिन्दुओं ने इस विषय में प्रधान-मन्त्री की राय मानना मञ्ज़ूर किया, पर मुस्लिम सदस्यों ने कहा है कि हम इन की राय को सुनने के बाद अपना मत प्रकट करेंगे। इतने दिनों की बातचीत के बाद भी कुछ समझौता नहीं हो पाया। मुसलमान सदस्य अधिकतर श्रीयुत जिन्ना की १४ शर्तों पर ज़ोर दे रहे हैं। हिन्दू सदस्य इनमें से बहुत सी शर्तों के ख़िलाफ़ हैं। हिन्दू सदस्य सम्मिलित चुनाव चाहते हैं और सिन्ध को अलग प्रान्त बनाने के ख़िलाफ़ हैं। बङ्गाल तथा पञ्जाब में मुसलमानों को विशेष अधिकार देने का भी प्रश्न बहुत झगड़े का है, इस विषय में भी समझौता करने में बड़ी कठिनाइयाँ पड़ रही हैं।

राउण्डटेबिल परिषद के कई सदस्य तो अभी से हिम्मत हार बैठे हैं। उनका विश्वास है कि अब समझौता नहीं हो सकता, पर लिबरल-दल वाले अभी फिर से बातचीत शुरू करने का प्रयत्न कर रहे हैं। सर तेज बहादुर सप्रू ने इस विषय में श्रीयुत मैकडॉनल्ड तथा भारत-मन्त्री श्रीयुत वेजवुड बेन से १५ और १६ तारीख़ को बातचीत की है। और प्रधान सचिव ने इस सम्बन्ध में आग़ा ख़ान से भी बातचीत की है। भारत की हिन्दू तथा मुसलमान सभाओं ने सदस्यों को कई तार भेजे हैं जिसमें उन्होंने अपने-अपने जाति के सदस्यों से कहा है कि यदि वे बिना उनके लाभ का ख़याल किए हुए समझौता कर लेवेंगे तो हम उसे अस्वीकार करेंगे। इन तारों में मुसलमान जिन्ना की १४ शर्तों का समर्थन करते हैं और हिन्दू डॉक्टर मुञ्जे के विचारों से पूर्णतया सहमत हैं। ऐसी दशा में समझौता होना बहुत कठिन मालूम होता है।

ब्रह्मदेश-समिति

गोलमेज़ परिषद में ब्रह्मदेश को अलग करने का प्रस्ताव पास हो जाने के उपरान्त ब्रह्मदेश की शासन-प्रणाली निर्माण करने के लिए एक अलग समिति बनाई गई है। ब्रह्मदेश के निवासियों ने वहाँ के सदस्यों को तार दिया है कि भारत से अलग होने के बाद यदि हमें औपनिवेशिक स्वराज्य देने का वचन न दिया जावेगा तो हम भारत से अलग होना स्वीकार नहीं करते।

उनके प्रतिनिधि श्रीयुत बा० पे ने इसके उत्तर में कहा है कि यदि ब्रिटिश सरकार हमें औपनिवेशिक स्वराज्य देने का वचन नहीं देगी तो हम भारत से अलग होना पसन्द नहीं करेंगे।

प्रान्तीय शासन भारतीयों को सौंप दिया जावे

फ़ेडरल-कमिटी भारतीयों तथा भारतीय रियासतों के अधिकारों को तय करने की कोशिश कर रही है। अभी तक इसमें कोई भेद-भाव नहीं हुआ है। भारतीय रियासतों के महाराजा इस विषय में बड़ी उदारता दिखा रहे हैं।

फ़ेडरल-कमिटी ने भारत की भविष्य शासन-प्रणाली का नक़्शा तैयार कर लिया है। केन्द्रीय शासन के लिए दो सभाएँ बनाना निश्चय हुआ है। दोनों सभाओं में रियासतों के प्रतिनिधि होंगे, यह भी तय किया गया है कि प्रान्तीय शासन का पूरा भार भारतीयों को दे दिया जावे।

(७वें पृष्ठ का शेषांश)

श्मशान-यात्रा

यद्यपि बिनय का शरीर ६ बजे रात्रि को देने का वचन दिया गया था, पर वह १ बजे रात्रि तक नहीं दिया गया। ६ बजे रात्रि से ही चीर घर के पास बहुत सी जनता इकट्ठी हो गई थी। और बिनय कृष्ण की अन्तिम झाँकी देखने की राह देख रही थी। क़रीब १० बजे पुलिस वहाँ पहुँची और उसने भीड़ को वहाँ से भगा दिया।

रात्रि को १ बजे श्रीयुत बिनय की लाश दी गई और बिनय के पिता श्रीयुत रेवती मोहन बोस, उनके भाई तथा अन्य बान्धव उन्हें फूलों से सजे विमान में नीमतल्ला घाट तक ले गए। साथ में पुलिस का एक ज़बरदस्त जत्था गया था। और इसके पीछे जन-समूह! बारम्बार 'बन्देमातरम्' की आवाज़ें रात्रि के सन्नाटे में गूँज उठती थीं।

श्मशान घाट पर

पुलिस की रुकावट से रास्ते भर जनता को विनय कृष्ण के अन्तिम दर्शन करने का मौक़ा नहीं मिला, पर समाचार-पत्रों द्वारा उन्हें मालूम हो गया था, कि दाह-क्रिया नीमतल्ला में होने वाला है। अँधेरी रात थी, सर्दी भी कड़ाके की पड़ रही थी, फिर भी ६ बजे से कलकत्ते की जनता नीमतल्ला पर इकट्ठी होने लगी। रात को दो बजे विनय कृष्ण का विमान वहाँ पहुँचा, तब तक सारी भीड़ वहाँ ठण्ढक में ठिठुरती हुई डटी रही। विमान के पहुँचते ही "बन्देमातरम" की ध्वनि से सारा आकाश गूँजने लगा। प्राचीन कर्म काण्ड के अनुसार अन्त्येष्टि-क्रिया और चिता में अग्नि प्रज्वलित की गई। कुछ देर बाद उनके सुगठित शरीर के स्थान पर थोड़ी सी राख शेष रह गई, जो जान्हवी के पवित्र जल में बहा दी गई।

* * *

(पाँचवें पृष्ठ का शेषांश)

प्रवेश करने की मनाही की गई थी। जैसा कि ऑर्डर से पता चलता है, उनका प्रवेश रोकने का मुख्या-उद्देश्य यह था, कि वे ब्रिटिश भारत से निर्वासित किए गए थे और उनकी उपस्थिति से राजकोट में सनसनी फैलने की आशङ्का थी।

कुछ ही क्षण बाद पश्चिमीय भारतीय रियासतों की एजेन्सी के चार अफ़सर; एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० बैज़लगेट आई० सी० एस०, पुलिस के डिपुटी सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० डावर, ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर जैचन्द और हेड कॉन्स्टेबिल मोहनलाल वहाँ आ गए और उन्होंने अपनी मोटरों और चारपाइयों से रास्ता बिलकुल रोक लिया। इसके बाद उन्हें कॉन्स्टेबिल ने पश्चिमी रियासतों के एजेण्ट का नोटिस दिया, जिसमें उन्हें राजकोट की हद में प्रवेश न करने की आज्ञा दी गई थी। परन्तु श्री० कोठारी ने उस पर दस्तख़त करने से इन्कार कर दिया। उनके स्वागत के लिए राजकोट के २०,००० निवासी शहर के बाहर आ गए थे, परन्तु आनन्दपुर गाँव तक, जहाँ वे रोके गए थे, थोड़े से ही आदमी मोटर से आने पाए। अभ्यागतों से थोड़ी देर बात कर श्री० कोठारी वहाँ से चले गए और उन्होंने ब्रह्मनबनं गाँव के डाक-बङ्गले पर रात्रि बिताई। सवेरे वे बधवान चले गए। वहाँ से वे दूसरे दिन काठियावाड़ की विदेशी वस्त्र-वहिष्कार समिति की बैठक में सम्मिलित होने भावनगर गए।

* * *

श्रीजगद्गुरु का फ़तवा

[हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष]

"मरतिहु बार कटक संहारा" के अनुसार लॉर्ड इरविन के अन्तिम ऑर्डिनेन्स ने अपनी मृत्यु से पहले इलाहाबाद की तमाम राजनीतिक संस्थाओं को 'ग़ैर-क़ानूनी' विघोषित कर दिया है। लेहाज़ा इलाहाबाद से तो यू० पी० की सरकार के साथ ही अपने राम भी निश्चिन्त हो गए। अब यू० पी० के लाट साहब को चाहिए कि एक दिन त्रिवेणी-तट पर भङ्ग-बूटी की व्यवस्था करें और भविष्य के लिए इलाहाबादियों के गले में काल-भैरव का काला 'गण्डा' बाँध दें ताकि टोना-वोना लगने का भय सदा के लिए दूर हो जाय।

* * *

मगर इतने ही से बस न समझ लीजिएगा; क्योंकि यू० पी० की सरकार बुद्धिमानी पर अच्छी तरह कमर बाँध चुकी है। उपर्युक्त पुण्यपूत कार्य के साथ ही उसने बनारस 'योनिभ्रष्टी' की सहायता भी बन्द कर दी है। इसका कारण यह है कि सारे फ़साद की जड़ युनिवर्सिटियाँ ही हैं। इन कलमुँही सौतों का अस्तित्व अगर इस देश में न होता तो किस में ताब थी, जो सखी नौकरशाही की ओर आँखें उठाने का साहस कर सकता? फलतः अपने परिश्रम की कमाई से सौतों की सहायता न करना ही बुद्धिमानी है।

* * *

परन्तु हिज़ होलीनेस के लँगोटिया यार श्री० शास्त्री लम्बोदरानन्द जी का कहना है कि नौकरशाही ने अगर युनिवर्सिटी की सहायता बन्द कर दी तो अच्छा हुआ; 'वेश्या रूठी धर्म बचा!' युनिवर्सिटी बेचारी ग़ुलामी के बन्धन से मुक्त हुई। ईश्वर उन्हें सुबुद्धि दे और देश की सारी यूनिवर्सिटियों को इसी तरह अपने प्रेम-पाश से विमुक्त कर दें, तो देश का प्रभूत कल्याण हो!

* * *

श्री० काका कालेलकर का कहना है कि महात्मा गाँधी का वज़न १२४ पौण्ड से घट कर १०१ पौण्ड रह गया है, क्योंकि यरवदा जेल का पानी उपयुक्त न होने के कारण उन्हें अजीर्ण हो गया है। मगर अपने राम की तो राय है कि सखी-नौकरशाही ने उनके लिए लेह्य-पेयादि उपादेय खाद्य-पदार्थों की जो व्यवस्था कर रक्खी है, उसीसे अजीर्ण हो गया है। रह गया वज़न का घटना, सो यह तो नौकरशाही के मेहमांसरा की विशेषता ही ठहरी!

* * *

(दूसरे पृष्ठ का शेषांश)

—दिल्ली की जमीयतउलउलेमा के प्रमुख कार्यकर्ता श्रीयुत मौलवी आसफ़ अली १२ दिसम्बर को गिरफ़्तार किए गए।

—विदेशी वस्त्र पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में गिरफ़्तार किए गए अमृतसर के ४५ स्वयंसेवकों को २ मास से लेकर ६ मास तक की कड़ी सज़ा दी गई।

—लायलपूर के ६ स्वयंसेवकों को जो विदेशी वस्त्र पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार हुए थे, १२ दिसम्बर को सज़ा का हुक्म सुनाया गया। इनमें से एस० भगतसिंह और कॉमरेड देवसिंह को एक माह की सज़ा दी गई है। श्रीयुत मङ्गलदास और तेज को १ हफ़्ते की सादी सज़ा दी गई है। और अन्य दो स्वयंसेवकों को ५०) जुर्माना देने का हुक्म सुनाया गया है; जुर्माना न देने पर इनको भी एक हफ़्ते की सादी क़ैद भुगतनी पड़ेगी।

* * *

मि० ब्रेलसफ़र्ड की भविष्यवाणी

"जब तक स्वराज्य न हो जायगा हम लगान न देंगे"

गोलमेज़ पर मृतक भारत की प्रेतात्मा बैठी है !

हर एक भारतीय के हृदय में विजेताओं की श्रेष्ठता और उनके प्रगल्भ और मदपूर्ण आचरण से एक गहरा घाव बन गया है। यदि भारत के सम्बन्ध में सोच-विचार करने में देर की जायगी, तो यह संग्राम केवल महीनों के लिए नहीं, वर्षों के लिए बढ़ जायगा। गुजरात से लगानबन्दी के आन्दोलन की हवा इलाहाबाद बह आई है और वहाँ से दूसरे भागों में फैलते देर न लगेगी। यह किसानों की ग़रीबी की समस्या हल कर देगा। मैंने स्वयं किसानों को यह घोषणा करते हुए सुना है, कि 'जब तक स्वराज्य नहीं हो जायगा, हम लगान न देंगे।' उनका विश्वास है कि इससे उनके बच्चों को घी-दूध मिलने लगेगा। जो कल राष्ट्रीय क्रान्ति थी, उसके भविष्य में भूमि सम्बन्धी विद्रोह में परिवर्तित होने की आशङ्का है। गवर्नमेण्ट की आमदनी का मुख्य द्वार ख़तरे में है और इस विद्रोह का अन्त वह भयङ्कर हानि सह कर लगान बिल्कुल बन्द किए बिना नहीं कर सकती।

निम्न लेख मि० ब्रेलसफ़र्ड ने 'जवाहर-दिवस' के अवसर पर लिखा था :—

"इस सप्ताह में मैंने इलाहाबाद में उस व्यक्ति से मुलाक़ात की, जिसका महात्मा गाँधी के बाद सब से अधिक प्रभाव है। हम दोनों की मुलाक़ात जेल में हुई थी। जब से यह युद्ध प्रारम्भ हुआ है, तब से पण्डित जवाहर को केवल आठ दिन की स्वतन्त्रता मिली है। 'ए' क्लास के क़ैदियों को नज़रबन्द क़ैदियों से कुछ कम दण्ड नहीं दिया जाता और मैं उन अधिकारियों का कृतज्ञ हुए बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने मुझे एक ऐसे व्यक्ति से मुलाक़ात करने की आज्ञा दी, जो व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से गवर्नमेण्ट का कट्टर दुश्मन है।

आन्दोलन का प्रतिबिम्ब

"वह व्यक्ति इस आन्दोलन का प्रतिबिम्ब है। कुछ वर्ष पहिले वह एक इङ्गलिश यूनीवर्सिटी से शिक्षा-प्राप्त युवक की नाईं अङ्गरेज़ी पोशाक में रहता था। परन्तु आज वह हाथ की कती और बुनी हुई उस पोशाक में रहता है, जिसमें भारत के राष्ट्रीय संग्राम के सैनिक रहते हैं। भारत पश्चिम की नक़ल करने से अब थक गया है। मुलाक़ात होने पर सब से पहले हृदय में यह भाव उत्पन्न होता है, कि वह सच्चे वीरों की नाईं सभ्य और अत्यन्त नम्र है। परन्तु, शीघ्र ही इस बात का भी पता लग जाता है कि इस सौम्यता की ओट में उसके हृदय में विद्रोह की भयङ्कर आग प्रज्वलित हो रही है। वह असाधारण साहस से समस्याओं पर विचार करता है और उस मार्ग का, जिस पर उसका तर्क उसे ले जाता है, बड़ी वीरतापूर्वक अवलम्बन करता है।

असन्दिग्ध दूरदर्शिता

"वह अपनी दूरदर्शिता से भविष्य की थाह अपने अनुयायियों से अधिक दूर तक लेता है। उसे शीघ्रता से या आसानी से विजय मिलने का भ्रम नहीं है और न उसे इस बात का भय है कि इस युद्ध के बाद भारत में सामाजिक, आर्थिक उथल-पुथल मच जायगी। वह वाक्पटु है और उसकी वाणी में जादू है तथा उसे युवक-भारत ने अपना नेता चुना है। भारतीय अपने नेताओं की जितनी उपासना करते हैं, उतनी उपासना करने वाली पश्चिम में बहुत ही कम जातियाँ मिलेंगी। उनके जेल के चहारदीवारी के अन्दर बन्द हो जाने पर वे उन्हें भुला नहीं देते। युवक-नेहरू की गिरफ़्तारी और सज़ा के विरोध में भारत के शहर अपनी फ़ेक्टरियाँ और दुकानें दो बार बन्द कर चुके हैं। कल समस्त भारत में उसकी ४१वीं वर्ष-गाँठ मनाई जायगी।

"मैं पण्डित मोतीलाल जी से भी मिला था और जेल से रिहा होने के बाद मैंने उन्हें अत्यन्त अस्वस्थ पाया। मेरी मुलाक़ात के एक दिन पहिले ही उनकी एक पुत्री और भतीजी जेल से रिहा होकर आई थीं। मेरी उनसे भी मुलाक़ात हुई थी। जिन्होंने उनकी भावनाएँ और उत्साह देखा है, उन्हें सरलता से इस बात का अनुभव हो जाता है, कि इस आन्दोलन में पुरुषों को आगे बढ़ाने और उनका साहस स्थिर रखने में भारतीय स्त्रियों ने कितना अधिक त्याग किया है।

सन्धि का प्रस्ताव

"हम गत अगस्त के समझौतों की असफलता की, गाँवों में आन्दोलन फैलने और कभी-कभी गोलमेज़ परिषद् की बातचीत किया करते हैं, जिसे अधिकांश भारतवासी घृणापूर्ण दृष्टि से देखते हैं। गोलमेज़ पर तो केवल मृतक भारत की प्रेतात्मा बैठी है।

"पिछले ग्रीष्म-ऋतु का सन्धि-प्रस्ताव क्यों असफल हुआ ? मैंने दोनों पक्षों का विचारपूर्वक विश्लेषण किया है और अन्त में इस परिणाम पर पहुँचा हूँ, कि हमने अपनी इच्छाएँ स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं कीं, और उन्होंने ऐसी शर्तें रख कर, जिनसे अनुभवहीनता टपकती थी, समस्या को और भी उलझा दिया। सन्धि-प्रस्ताव इसलिए असफल हुआ, कि कॉङ्ग्रेस ने अभी अपनी पूरी शक्ति नहीं लगाई थी।

समस्या का निरूपण

"सब से पहली कठिनाई मनोवृत्ति सम्बन्धी है। इङ्गलिश मस्तिष्क किसी वस्तु में धीरे-धीरे क्रम-क्रम से परिवर्तन करने की बात सोचा करता है। जब वह परिस्थिति के कारण बाध्य हो जाता है, तब औपनिवेशिक स्वराज्य या स्वतन्त्र राज्य की ओर क्रम भूल कर छलाँग मार देता है। परन्तु, भारतीय मस्तिष्क की विचार-धारा इससे बिल्कुल विरुद्ध बहती है। वह अब इस बात के लिए मचल रहा है कि "मेरा गौरव" मेरी स्वतन्त्रता और मेरा बराबरी का दर्जा अभी दो ! हमें वह दे दो और उसके बाद हम प्रसन्नता से क्रमपूर्वक अधिकार-परिवर्तन की बात करेंगे।

"इन दो प्रबल मनोवृत्तियों का अन्तर समझने के लिए, यह बात ध्यान में रखने की अत्यन्तावश्यकता है, कि हर एक भारतीय के हृदय में विजेताओं की श्रेष्ठता और उनके प्रगल्भ और मदपूर्ण आचरण से एक गहरा घाव बन गया है। यदि हम अपने समय और पीढ़ी के विवेकपूर्ण आदमी हैं, तो हमें भारत के नए शासन-विधान के पहले वाक्य में भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य दे देना चाहिए और उसके साथ ही उसका वह गौरव, जो एक ऐसे उपनिवेश की थाती है। यदि उसे औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया जायगा, तो अधिकार-परिवर्तन के नियम बनाने में आशातीत सफलता प्राप्त होगी। परन्तु सेन्ट्रल गवर्नमेण्ट को उन अधिकारों से बहुत अधिक मिलना चाहिए, जिनकी सिफ़ारिश भारतीय गवर्नमेण्ट ने की है। भारतीय अर्थ-विभाग अपने हाथ में लिए बिना वे कभी सन्तुष्ट न होंगे।

"भारतीय सम्बन्ध-विच्छेद करने का अधिकार प्राप्त करने पर वे क्यों तुले हुए हैं ? इस प्रश्न का उत्तर भी उपर्युक्त मनोवृत्ति है। यदि एक विजित राष्ट्र को हम बराबरी का दर्जा देना चाहते हैं, तो उसे इस बात की स्वतन्त्रता अवश्य होना चाहिए, कि वह अपनी इच्छानुसार सम्बन्ध विच्छेद या स्थापित कर सके। किसी अन्य प्रकार के सम्बन्ध की स्थापना केवल तलवार के बल पर ही हो सकती है।

"सचमुच में, ऐसे क्रान्तिकारी समय में भी, सभी भारतीय (ब्रिटेन से) सम्बन्ध-विच्छेद नहीं करना चाहते। कुछ लोग, यहाँ तक कि कॉङ्ग्रेस नेता भी—यह बात स्वीकार करने के लिए तैयार हो जायँगे, कि सम्बन्ध-विच्छेद के लिए फ़ेडरल कैबिनेट के, जिसमें राज्य-भक्त देशी राजा-महाराजा भी सम्मिलित रहेंगे, दो तिहाई सदस्यों की स्वीकृति की आवश्यकता पड़ेगी। मैं इस बात पर बहस नहीं करना चाहता; परन्तु अपना यह विश्वास स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यदि भारत के सम्बन्ध में सोच-विचार करने में देर की जायगी तो यह संग्राम केवल महीनों के लिए ही नहीं, वर्षों के लिए बढ़ जायगा।

भारतीय ऋण की समस्या

"एक दूसरी माँग, जिसके कारण अगस्त की सन्धि असफल हुई, यह थी कि भारत का ऋण-निर्णय एक पक्षपात-रहित ट्रिब्युनल करे। कॉङ्ग्रेस ने इस माँग पर बहुत अधिक ज़ोर नहीं दिया था, परन्तु गवर्नमेण्ट को यह कहने का बहाना मिल गया, कि यह क़र्ज़ अदा न करने का प्रस्ताव था। परन्तु उसका वह मतलब नहीं था। उससे कॉङ्ग्रेस का मन्तव्य केवल इतना ही था, कि

(शेष मैटर ३२वें पृष्ठ के दूसरे और तीसरे कॉलम में देखिए)

बारदोली में शैतान का नग्न-नृत्य !

गाँवों में सरकारी कर्मचारियों की नृशंस नादिरशाही !!

कुर्की और नीलामी की सूचना जानवरों की पूँछ में बाँध दी जाती है !!

स्त्रियों की अस्मत ख़तरे में :: डाकुओं के रोमाञ्चकारी उपद्रव !

सर लल्लूभाई सामलदास का घोर असन्तोष

बारदोली में लगान वसूल करने के सम्बन्ध में आजकल वहाँ के किसानों पर जो अत्याचार हो रहे हैं और उससे वहाँ के वायु-मण्डल पर जो दूषित प्रभाव पड़ा है, उसका हाल सहयोगी 'बॉम्बे-क्रानिकल' के कई अङ्कों से यहाँ सङ्कलित किया जाता है :—

"बारदोली की वीर-प्रसविनी भूमि से आज यही आवाज़ आ रही है कि वे महात्मा गाँधी और सरदार पटेल की आज्ञा के बिना लगान की एक पाई भी देने के लिए तैयार नहीं हैं। इस प्रतिज्ञा के पालन में चाहे उनके बच्चे भूखे मरें, उनके घर नीलाम हों, जायदाद लूटी जावे, वे स्वयं नेस्तनाबूद हो जावें। महात्मा गाँधी और सरदार पटेल की बातों का उन्हें वेद-वाक्यों से भी अधिक विश्वास है। अपनी इस वीर प्रतिज्ञा के पालन में बारदोली के किसानों ने घर-बार छोड़ कर जङ्गल का रास्ता लिया है। प्रकृति का सुन्दर बाग़ लगानबन्दी आन्दोलन की पतझड़ से वियाबान हो गया है। तमाम ताल्लुक़ा सुनसान पड़ा हुआ है। आज से दो माह पूर्व, जिसने बारदोली की प्राकृतिक लावण्य से परिपूर्ण भूमि के दर्शन किए होंगे, वे वहाँ के निवासियों के सौभाग्य से ईर्षा करते होंगे; परन्तु आज वहाँ का वायु-मण्डल हाहाकार की आवाज़ से गूँज रहा है।

लगान वसूल करने के अमानुषिक तरीक़े

"एक ओर लगान न देने की भीषण प्रतिज्ञा है, तो दूसरी ओर लगान वसूल करने की। इसके लिए किसानों पर अत्यन्त नृशंस और पैशाचिक अत्याचार किए जाते हैं। पुलिस के झुण्ड के झुण्ड इलाक़ों में चक्कर लगाते हैं। गाँवों में उन्हें दो-चार मूर्तियों से अधिक कुछ नज़र नहीं आता। सत्याग्रही किसानों की ज़मीन और जायदाद कुर्क करना एक साधारण-सी बात हो गई है। जिन सत्याग्रही किसानों की ज़मीन कुर्क होती है, उन्हें उसकी इत्तला दी जाती है। तलाटी खेतों में स्वयम् जाता है और अपने साथियों को डुग्गी पीटने की आज्ञा देता है। डुग्गी तो पिट जाती है, परन्तु उसे सुनने वाला तलाटी के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति उपस्थित नहीं रहता। तलाटी डुग्गी पीट कर इतने ही में सन्तोष कर लेता है कि उसने 'लैण्ड रेवेन्यू कोड' की आज्ञा का पालन कर लिया। परन्तु आजकल तलाटी को गाँव में न तो डुग्गी पीटने के लिए कोई आदमी मिलता है और न ढोल। किसानों के गाँव छोड़ देने के कारण ढोल की जगह पीतल की थाली भी नहीं मिलती। जब तलाटी हताश हो जाता है, तब वह गाँव भर में मिट्टी के तेल का ख़ाली कनस्तर ढूँढ़ने के लिए चक्कर लगाता है और यदि उसे वह मिल गया, तो उसे बजा कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेता है।

"ढोल पीटने की रस्म अदा हो जाने के बाद तलाटी कुर्क़ी का नोटिस बबूल के पेड़ से गोंद निकाल कर किसी पेड़ की डाली से चिपका देता है। पेड़ न होने पर तलाटी उसे किसी काँटेदार, झाड़ी में या खेत में ही मिट्टी के ढेले से चिपका देता है। भैंसें कुर्क करने के लिए यह नोटिस उनके चमड़े पर या सींग पर चिपका दिया जाता है और या पूँछ से बाँध दिया जाता है। जिस काग़ज़ पर यह नोटिस लिखा जाता है, वह अत्यन्त हास्यास्पद होता है। पाठकों का शायद यह अनुमान होगा कि जब हज़ारों रुपए की ज़मीनें कुर्क होती हैं तब उनके नोटिस किसी अच्छे क़ीमती काग़ज़ पर छपते होंगे और उन पर गवर्नमेण्ट की मुहर और कलेक्टर के दस्तख़त रहते होंगे। परन्तु आज ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के नाम से गाँव का अदना पुलिस-पटेल नोटिस पर दस्तख़त कर देता है; और जिस काग़ज़ पर यह नोटिस लिखा जाता है उसकी लम्बाई-चौड़ाई दो इञ्च से अधिक नहीं होती। बड़ी-बड़ी क़ुर्क़ियों और नीलामों में भी केवल इतनी ही रस्म अदा की जाती है। जिन किसानों की ज़मीन और जायदाद क़ुर्क होती है, उनके कानों तक मुश्किल से उसकी ख़बर पहुँचती है। काग़ज़ का छोटा सा टुकड़ा (नोटिस) हवा में उड़ कर लापता हो जाता है।

घर जला कर ख़ाक में मिला दिए गए

"बोरसद का ३०वीं नवम्बर का समाचार है कि २७ ता० की रात्रि को वासना गाँव के तीन घर, जिनकी कीमत ५ और ६ हज़ार के बीच में होगी, जल कर ख़ाक में मिल गए। गाँव के सब निवासी गाँव छोड़ कर बड़ौदा रियासत में चले गए हैं। और गाँव सुनसान पड़ा है। रात्रि को ८ बजे तीन घरों में से एक घर में आग की लपटें दिखाई दीं और जब तक लोग वहाँ इकट्ठे हुए तब तक तीनों ख़ाक में मिल गए!

अस्मत पर हाथ

"लगान वसूल करने में जिन तरीक़ों से काम लिया जाता है वे अत्यन्त घृणास्पद हैं। बारदोली के शासक निर्दोष प्रजा का रक्त चूसने पर उतारू हो गए हैं। रायण गाँव में पुलिस के कुछ कर्मचारियों ने वहाँ की स्त्रियों को तङ्ग किया और उनसे कहा कि अगर तुम्हारे पति लगान न देंगे, तो तुम्हें पकड़ कर सिन्ध में बेच कर लगान वसूल किया जायगा! इस अफ़वा के कारण गाँव को पुलिस के एक दल ने चारों ओर से घेर लिया और दो भाइयों के सिर पकड़ कर एक-दूसरे से टकरा दिए। फिर लोगों से धमका कर कहा कि "हम तुम्हें स्त्रियों के योग्य न छोड़ेंगे।" सरभौन की घटना तो और भी अधिक भयङ्कर और रोमाञ्चकारी है। वहाँ महिलाओं के लिए अत्यन्त घृणित भाषा का प्रयोग और उनके साथ दुर्व्यवहार भी किया गया। बोरसद में लोगों को लाठियों से पीट कर जिस क्रूर-काण्ड का अभिनय किया गया है, उसे देख कर अङ्गरेज़ी पत्रकार मि० ब्रेल्सफ़र्ड का हृदय भी पानी-पानी हो गया था।

डाकुओं का प्रकोप

"अत्याचारों की क्रिया यहीं समाप्त नहीं हो जाती। प्रजा को नेस्तनाबूद करने के लिए डाकुओं के दल भी घूमा करते हैं, जो नौकरशाही के चाटुकारों की प्रेरणा से उनके साथ इस अत्याचार की आग में ईंधन डाल कर उसे महाबवण्डर बनाते हैं! एक गाँव में इन्होंने एक बूढ़े का सिर कुल्हाड़ी से फाड़ कर उसी समय उसका काम तमाम कर दिया। बोरसद का मामलतदार मोहनशाह, जो छोटे कमिश्नर के नाम से मशहूर है, बड़ौदा राज्य में पहुँचा। वहाँ बोरसद से भागे हुए कुछ किसान रहते थे। कई लोगों से उनका पता पूछने पर जब उसे ठीक पता न लगा तब उसने एक व्यक्ति को इतनी नृशंसता से मारा कि कहा जाता है कि वह वहीं समाप्त हो गया। इस प्रकार की वीभत्स और हृदयद्रावक घटनाएँ बारदोली में प्रायः रोज़ हुआ करती हैं।

ज़ब्ती और क़ुर्क़ियों की भीषणता

"रास में कुछ दिन पहले पुलिस ने तीन मकानों के ताले तोड़ कर अपने ताले लगा दिए थे। कहा जाता है कि वहाँ से पुलिस नाथजी भाई माथुर भाई के घर से ११३ रु० ८ आ० का, आशा भाई देसाई भाई के घर से २६० रु० का, मङ्गल भाई नारायण भाई के घर से ७२ रु० का, और काशी भाई कालिदास के घर से ४० रु० का माल उठा ले गई है। रास में अब पुलिस की करतूतों का निरीक्षण करने के लिए प्रतिदिन सवेरे झोपड़ियों से ५ आदमी जाते और सन्ध्या समय वापस आ जाते हैं। उन्हें इस पर गालियाँ और धमकी दी जाती हैं, वे पीटे भी जाते हैं, पर वे वहाँ प्रतिदिन जाते हैं और पुलिस के कैम्प के पास ही ठहरते हैं। कुछ दिन पहले पुलिस के कर्मचारी खदाना गए थे, वहाँ वे मोती भाई रणछोड़ भाई के मकान में घुस कर एकतल्ले पर चढ़ गए और डॉक्टर वहलीबैन के कान से तीन कुण्डल उतार कर भी उनसे टैक्स माँगने लगे, श्रीमती वहलीबैन ने निर्भीकतापूर्वक उन्हें उत्तर दिया कि "मेरा सारा घर छान डालो और मेरा सर्वस्व लूट लो, पर टैक्स के नाम से तुम्हें एक पाई न मिलेगी।

अमेरिकन पत्रकार के अनुभव

"बोस्टन (अमेरिका) के 'बोस्टन ईवनिङ्ग ट्रान्सक्रिप्ट' पत्र के मि० ई० एच० जेम्स ने, जो आजकल भारत की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने के लिए यहाँ भ्रमण कर रहे हैं, एक दिन बोरसद ताल्लुक़े के गाँवों में भी भ्रमण किया था। वे बोचसन, रास, सुनाम, सैजपुर, खानपुर और बोरसद गए थे और उन्होंने अपनी आँखों से वहाँ

के किसानों को भयङ्कर कष्ट झेलते हुए देखा था। वे झोपड़ियों में किसानों से मिले थे और पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित रास के व्यक्तियों और खानपुर और सैजपुर के जले हुए घरों की फ़ोटो भी ली थी। सत्याग्रह उनके लिए बिलकुल नई चीज़ थी और जिस सफलता से उसका पालन हो रहा है, उसे देख कर उनके आश्चर्य की सीमा नहीं थी। उन्होंने कहा कि अमेरिका के लोग भारत की सच्ची परिस्थिति जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक हैं। उनकी आन्दोलन के साथ पूर्ण सहानुभूति है। मि० जेम्स बोरसद के नृशंस मामलतदार 'छोटा कमिश्नर' से मिलने और उनका फ़ोटो लेने गए थे, परन्तु दुर्भाग्य से उनसे मुलाक़ात न हो सकी।"

* * *

गवर्नमेण्ट के दोस्त उसके दुश्मन बन रहे हैं

गुजरात के बोरसद, बारदोली तथा और तालुक़ों में पुलिस पर जो लाञ्छन लगाए गए हैं, उनके विरुद्ध गवर्नमेण्ट ने हाल ही में एक विज्ञप्ति प्रकाशित की थी। गवर्नमेण्ट की इस विज्ञप्ति के विरोध में १२वीं नवम्बर को सर लल्लूभाई सामलदास-जैसे सुप्रसिद्ध और नरम-दल के नेता ने अपनी गुजरात की यात्रा के आधार पर एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसका सार नीचे दिया जाता है :—

"सारबाब गाँव, जो बारदोली संग्राम के समय प्रसिद्ध हो गया था, बिलकुल उजाड़ हो गया था। पुरानी सत्याग्रही छावनी गवर्नमेण्ट ने ज़ब्त कर ली है और अब वहाँ एक पुलिस-थाना है। बारदोली संग्राम के समय वहाँ के एक बग़ीचे और उसके बीच के मकान में अस्पताल खोला गया था और उसका सञ्चालन बम्बई यूनीवर्सिटी के कुछ ग्रेजुएट करते थे। एक ऐसी परोपकारी संस्था की हत्या करना कोरे 'शान्ति और क़ानून' की रक्षा के वहिमातियों के लिए भले ही जायज़ हो, परन्तु मेरे जैसे सुधारक की दृष्टि में तो उसका सदुपयोग उसकी रक्षा करके ही हो सकता था। केवल इसलिए कि उस संस्था का सञ्चालन असहयोगियों के हाथ से होता था, वह संस्था गवर्नमेण्ट के लिए हानिकारक नहीं कही जा सकती।

"वहाँ के गाँवों के कुछ समाज-सुधारक स्त्री-पुरुषों ने शराब की दुकानों पर पिकेटिङ्ग प्रारम्भ की है; और मुझे उन स्त्री-पुरुषों पर अभिमान है, जो जेलों के कष्ट सह कर भी अपने कार्य में दृढ़ हैं। भारत के अगणित कुटुम्बों को इस दुर्व्यसन ने स्वाहा कर दिया है। अङ्गरेज़, वायसराय के पिकेटिङ्ग-ऑर्डिनेन्स के घातक प्रभाव का अनुभव नहीं कर सकते। उसने गवर्नमेण्ट के नए दुश्मन उत्पन्न कर दिए हैं। जो उसके मित्र थे, वे भी इस बात का अनुभव करने लगे हैं, कि गवर्नमेण्ट देश के इन साधारण सुधारों में भी ज़बरदस्त रोड़ा है। गवर्नमेण्ट ने लगान वसूल करने में अन्याय और ज़ुल्म से काम लेकर कुछ कम दुश्मन उत्पन्न नहीं किए। लगान वसूल करने के लिए उन लोगों को भी नोटिस दे दिए जाते हैं, जिन्होंने लगान न देने की प्रतिज्ञा नहीं की। और जिन लोगों को नोटिस दिए जाते हैं, उनसे लगान वसूल करने के लिए गवर्नमेण्ट गाँव के तलाटी और रेवेन्यू-अफ़सर के स्थान पर पुलिस की सहायता पर अधिक विश्वास करती है। इसका परिणाम यह हुआ है कि जो थोड़े बहुत राज्य-भक्त बच रहे हैं, उनके हृदय में भी गवर्नमेण्ट के प्रति क्रोध और घृणा उत्पन्न होती जाती है।

पुलिस का आतङ्कपूर्ण शासन

"ऐसा प्रतीत होता है कि गवर्नमेण्ट की शक्ति रेवेन्यू अफ़सरों के हाथ से पुलिस के हाथों में जा रही है! इस परिवर्तन से गवर्नमेण्ट की मान-मर्यादा और उसके भेद-भाव रहित न्याय में अवश्य बट्टा लगेगा। पुलिस लगान वसूल करने के लिए मनमाने अत्याचार करती है और इस नीति के उपयोग से कलेक्टरों का विचार केवल यही प्रतीत होता है, कि वे जनता के हृदय पर गवर्नमेण्ट की शक्ति का आतङ्क छा देना चाहते हैं। इसका प्रभाव बिलकुल विपरीत हुआ है और जब तक प्रजा के हृदय में विश्वास उत्पन्न न किया जायगा, तब तक यह आन्दोलन बढ़ता जायगा और उसके साथ ही गवर्नमेण्ट की आमदनी की क्षति भी बढ़ती जायगी।"

* * *

ज़िम्मेदार कौन है ?

अच्छे हो जायें जल्द मोतीलाल !!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]
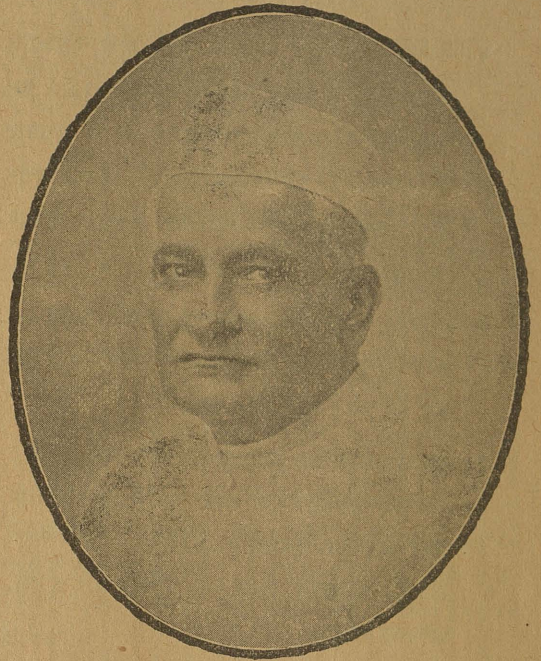
त्यागमूर्ति पं० मोतीलाल जी नेहरू

आस्माँ चल रहा है, क्या-क्या चाल !
पहुँचे अहले-ज़मीं को, जिससे मलाल !
इसका मतलब है, रञ्ज दिल को हो !
नहीं करता, कभी किसी का ख़्याल !
देश वालों को, जिसकी हसरत है,
आज उसका, ख़राब देखा हाल !!
रात दिन, काम है तड़पने से,
एक-एक साँस, एक-एक है साल !
शेर था जो कभी गरजने में,
उससे गूँजा ऐसेम्बली का हाल !
उसकी क़ुर्बानियाँ, ग़ज़ब की हैं,
मिल नहीं सकती है कहीं भी मिसाल !
लीडरी की, तो लीडरी में भी—
हर तरह का दिखा दिया है कमाल !
आन रखने को, शान रखने को,
उसने पैदा किया जवाहरलाल !
रात-दिन ख़ून थूकता है वह,
उसके जीने का हर जगह है सवाल !
सब दुआ दिल से माँगें ऐ "बिस्मिल",
अच्छे हो जायें जल्द मोतीलाल !!

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक वृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।
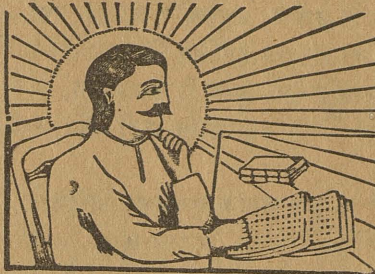
—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर
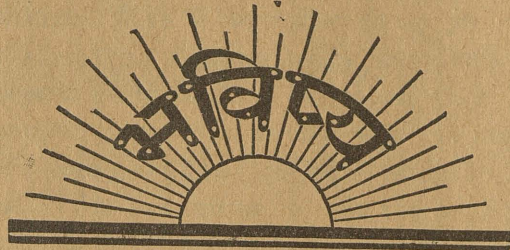
१८ दिसम्बर, सन् १९३०

क्या कीजिएगा हाले-दिले-
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

महायुद्ध का भयङ्कर प्रभाव

युद्ध का समय १९१४ से १९१८ तक

विशाल नरमेध-यज्ञ की भयावह आहुतियाँ

संसार की शक्ति

९०,००,००० मनुष्य युद्ध में मारे गए; २,००,००,००० मनुष्य घायल हुए; ५६,०८,९९,००,००० पौण्ड का युद्ध के ख़र्च में स्वाहा हुआ।

ब्रिटिश साम्राज्य की क्षति

१०,९०,००० मनुष्य युद्ध में मारे गए; २०,००,००० मनुष्य घायल हुए; १३,५७,७९,००,००० पौण्ड का युद्ध के ख़र्च में स्वाहा हुआ।

महायुद्ध का सन् १९३० में भयङ्कर प्रभाव

संसार पर

१,५०,००,००० बेकार हो गए; ८९,००,००,००० पौण्ड प्रति वर्ष युद्ध की सामग्री तैयार करने में व्यय होने लगा।

ग्रेट ब्रिटेन पर

२२,३७,५०१ बेकार हो गए; ११,५०,००,००० पौण्ड प्रति वर्ष युद्ध की सामग्री तैयार करने में व्यय हुआ।

* * *

फ़ौजी अफ़सर गोली का शिकार

लाहौर का समाचार है कि ९वीं दिसम्बर को केप्टेन पी० जे० डबल्यू० मेकलेगन एम०सी० लाहौर कण्टोमेण्ट के १०वें बेटेलियन के ८वें रेजिमेण्ट के एक लैन्स नायक द्वारा मार डाले गए। ख़बर है कि केप्टेन मैकलेगन ने लैन्स नायक गिरराज को एक स्काड के परेड करते समय पास नहीं किया और उसके दर्जे पर एक हवलदार को चढ़ा दिया। इस घटना से क्रोधित होकर उसने उस हवलदार को, जो उसके पद पर नियुक्त हुआ था और फिर केप्टेन मैकलेगन को गोली से मार डाला। परेड के सिपाहियों ने गिरराज पर गोली चलाई, पर वे निशाना चूक गए। गिरराज ने अपने हाथ से बन्दूक़ का मुँह फेर कर गोली मार ली और मर गया। केप्टेन मैकलेगन की आयु ३२ वर्ष की है।

* * *

भारतीय रमणी की वीरता

डाकुओं से युद्ध करने में मारी गई

लाहौर का ६ठी दिसम्बर का समाचार है कि होशियारपुर ज़िले के सराव गाँव में सशस्त्र डाकुओं ने गोकुलचन्द मालवाराम के घर पर धावा किया, और उनकी युवती पत्नी ने वीरतापूर्वक उनका सामना किया। बाद में गाँव वाले भी उसकी सहायता के लिए आ गए। डाकुओं का सामना करते समय युवती रमणी उनकी गोली से मारी गई और दो ग्रामीण सख़्त घायल हुए।

* * *

धरना

[श्री० रामेश्वरप्रसाद जी श्रीवास्तव, एम० ए०]

सेठ जगनलाल ने अपनी दूकान खोली ही थी, कि दो स्वयंसेवक हाथ में झण्डा लिए आकर दूकान के दोनों तरफ़ खड़े हो गए। जगनलाल ने डाँट कर पूछा—यह क्या ?

एक स्वयंसेवक ने उत्तर दिया—कॉङ्ग्रेस कमेटी ने आज से विदेशी कपड़े की दूकानों पर धरना देने का निश्चय किया है।

जगनलाल की भौहें चढ़ गईं। उन्होंने क्रोधपूर्वक कहा—धरना ? धरना कैसा ? मेरी दूकान पर धरना देने का कॉङ्ग्रेस को क्या अधिकार ? क्या कॉङ्ग्रेस वाले कोई ख़ुदाई दावेदार हैं ? बैठे-बैठे हुकुम निकाल दिया, जैसे कोई उनके बाप का नौकर है, जो उनका हुकुम माना करे। जाओ मेरी दूकान से भागो !

इतना कह कर सेठ जी गद्दी पर बैठ गए, किन्तु उनकी आज्ञा का पालन न किया गया। दोनों स्वयंसेवक पहले की तरह चुपचाप खड़े रहे। उनके मुँह से एक शब्द भी न निकला। परम शान्ति से उन्होंने सेठ जी की फटकार सह ली।

सेठ जी उनको फिर खड़ा देख कर आपे से बाहर हो गए। एक स्वयंसेवक से उन्होंने गरज कर कहा—अबे तूने सुना, या नहीं ? मैं तुझसे कह चुका कि तू यहाँ से चला जा, पर तू फिर खड़ा है। अब जाएगा या कुछ लेगा ?

स्वयंसेवक पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा रहा। उसकी गम्भीरता देख कर सेठ जी को और भी क्रोध आ गया। उन्होंने कड़क कर कहा—कमीना कहीं का, ढोंग रचने आया है। बेहया, जा यहाँ से नहीं तो जूतों से ख़बर ली जायगी !

दोनों स्वयंसेवकों का मुख लाल हो गया, किन्तु ज़बान से उन्होंने एक शब्द भी इस घोर अपमान के बदले में न कहा। दोनों ने सर झुका लिया।

जगनलाल अपनी जगह पर जा बैठे। उनका चेहरा उतरा हुआ था, किन्तु दो ग्राहकों को आता देख कर यह उदासी प्रसन्नता में परिणत हो गई। सेठ जी ने तरह-तरह के विदेशी थान लाकर उनके सामने रख दिए। उन दोनों ने कपड़ों में हाथ लगाया ही था, कि एक स्वयंसेवक ने आगे बढ़ कर कहा—महाशय जी, क्या आप भारतवासी नहीं हैं ; क्या आपकी नसों में भारतीय रक्त नहीं बहता, जो आप महात्मा जी की आज्ञा की अवहेलना करके विदेशी वस्त्र ख़रीदने जा रहे हैं ? श्रीमान, आप उन करोड़ों देशवासियों के ऊपर दया कीजिए जो भूखे और नङ्गे घूमते हैं। विदेशी वस्त्र का एक-एक तार उनके रक्त में रँगा है ! उनकी पीड़ा का इलाज है विदेशी वस्त्र-बहिष्कार !!

दोनों ग्राहक उठ खड़े हुए और स्वयंसेवकों को धन्यवाद देकर खद्दर-भण्डार की ओर चले गए। उनके जाते ही जगनलाल क्रोध से काँपते हुए बोले—क्यों बे, तू मेरे ग्राहकों को भड़काने वाला कौन है ?

एक स्वयंसेवक ने विनीत स्वर में उत्तर दिया—सेठ जी, भारत-माता का एक क्षुद्र सेवक।

"बड़ा भारत-माता का सेवक बनने वाला"—कहते हुए सेठ जी ने एक तमाचा उस स्वयंसेवक के मुँह पर मार दिया। उसका मुख लाल हो गया, किन्तु उसने हाथ न उठाया। सेठ जी ने दो-चार हाथ और लगाए, परन्तु फिर भी वह शान्त ही रहा। इसके पश्चात जगनलाल दूसरे स्वयंसेवक की ओर झपटे ही थे, कि लोगों ने बीच-बचाव करा दिया।

सेठ जी के इस दुर्व्यवहार और स्वयंसेवकों की सहनशीलता का जनता के ऊपर बड़ा अद्भुत प्रभाव पड़ा। जगह-जगह इस पर आलोचना होने लगी। कोई सेठ जी को कड़े शब्दों में धिक्कारता, तो कोई स्वयंसेवकों की प्रशंसा करता।

इस निन्दनीय कार्य के पश्चात् सेठ जी की दूकान पर और कड़ा धरना दिया गया। शाम होते-होते दो स्वयंसेविकाएँ भी आकर उनकी दूकान पर आकर डट गईं। अब क्या था, सेठ जी का पारा चढ़ गया। वे दूकान में इधर से उधर टहलने लगे। आख़िर उनसे न रहा गया और उन्होंने एक स्वयंसेविका से पूछा—तुम क्यों आई हो ?

उसने उत्तर दिया—अपने भूले भाइयों को सीधे रास्ते पर लगाने के लिए।

जगनलाल—छिः-छिः ! तुझे ग़ैर आदमियों से बोलते लज्जा नहीं आती। क्या यही तेरा धर्म है ? राम ! राम !! यह घोर कलियुग नहीं, तो क्या है ? अच्छी और नेक स्त्रियाँ कभी भी ऐसा काम करने को तैयार नहीं हो सकतीं !!

उस स्वयंसेविका का सारा शरीर काँप उठा, परन्तु उसने अपने क्रोध को उभरने न दिया। उसने चुपचाप सर झुका लिया। सेठ जी ने फिर कहा—"ऐसी ही बड़ी शर्मीली थीं, तो सैकड़ों मनुष्यों के बीच में आईं ही क्यों ?" इतने में जनता में से किसी व्यक्ति ने सेठ जी को बहुत धिक्कारा। अब सेठ जी का क्रोध और दूना हो गया। उन्होंने स्वयंसेविकाओं को जा-बेजा सुनाते हुए कहा—"यदि ऐसी ही बड़ी शरीफ़ज़ादी हैं, तो यहाँ क्यों आईं ? यहाँ तो गालियाँ ही हैं और अगर कल फिर दिखाई दीं, तो इससे भी ज़्यादा बुरी तरह से पेश आऊँगा।"

इस पर बहुत से मनुष्य बिगड़ खड़े हुए। वे दूकान पर चढ़ आए और सेठ जी को मारने ही वाले थे, कि एक स्वयंसेविका ने आगे बढ़ कर कहा—हाँ-हाँ, यह आप लोग क्या करते हैं ? शान्ति से काम लीजिए।

किसी ने कहा—सेठ जी ! इन्हें तो आपको अपनी बेटियों के तुल्य समझ कर सभ्य व्यवहार करना चाहिए था ! ख़ैर, अब आगे ऐसे अश्लील शब्द मुँह से न निकालिएगा।

भीड़ हट गई। सेठ जी गद्दी पर बैठते-बैठते बोले—मेरी बेटियाँ ऐसी कुलटा नहीं, जो बाज़ार में घूमें।

* * *

उसी रोज़ शाम को मिसेज़ जौहरी के सभापतित्व में स्त्रियों की एक विराट सभा हुई। मिसेज़ कमला द्विवेदी का भाषण बड़ा ही जोशीला हुआ। उन्होंने विदेशी व्यापार का भीषण परिणाम दिखलाने के पश्चात्, कहा—बहिनो ! कपड़े के व्यापार ही ने अङ्गरेज़ों को अमीर बना दिया, कपड़े के व्यापार ही ने भारत का जीवन-रक्त चूस लिया, इसी की बदौलत आज हमारे करोड़ों भाई और बहिनें एक-एक दाने को तरसती हैं। हमारा धर्म है, कि हम इस सर्वनाशकारी व्यापार का अन्त करें। इसके लिए यदि हमारी जान भी जाय, तो चिन्ता नहीं ! हमें कपड़े के व्यापारियों को समझाना होगा, कि वे विदेशी माल न मँगाएँ, और यदि समझाने से काम न चले, तो ज़ोरदार धरना भी देना होगा। मैंने सुना है कि बहुत से व्यापारी हमारी विनती पर ध्यान देने से इनकार करते हैं ! ऐसों के यहाँ धरना देना अपना कर्तव्य है ; किन्तु इसके लिए स्वयंसेविकाओं की आवश्यकता है, क्योंकि यह काम जितना अच्छा स्त्रियाँ कर सकती हैं, उतना पुरुष नहीं कर सकते। अब मुझे देखना है कि कितनी बहिनें स्वतन्त्रता की इस लड़ाई में जान देने को राज़ी हैं ?

सैकड़ों हाथ उठ गए। एक-एक करके स्त्रियाँ आ-आ करके अपना नाम लिखाने लगीं। मिसेज़ जौहरी ने कहा—हर्ष है कि इतनी बहिनें भारत-माता पर अपने प्राण निछावर करने को उत्सुक हैं। इस समय केवल सौ बहिनों की आवश्यकता है। जब शराब की दूकानों पर धरना दिया जायगा, तो और स्वयंसेविकाएँ बना ली जायँगी।

स्वयंसेविकाओं के दस जत्थे बनाए गए। दूसरे दिन के धरने के लिए श्रीमती विमला देवी की अध्यक्षता में दो जत्थों का भेजना निश्चित हुआ। विमला देवी के हर्ष का ठिकाना न था और हर्ष होना ही चाहिए था। देश-प्रेम का सर्वोत्तम पुरस्कार इससे बढ़ कर और क्या हो सकता है, कि प्राणी को मातृ-भूमि पर अपने प्राणों को बलि देने का सुअवसर मिले ?

* * *

दूसरे दिन सुबह विमला देवी अपने जत्थे के साथ रवाना हुईं। हर एक के हाथ में झण्डा था। राष्ट्रीय गान गाती हुईं और शहर के मुख्य-मुख्य सड़कों से होती हुईं, ये वीर बालाएँ बज़ाजे में जा पहुँचीं। सारे चौक में हलचल मच गई। विदेशी कपड़ों के दूकानदार थर्रा उठे। एक ने कहा—भाई बड़े असमञ्जस में फँसे। कुछ करते-धरते नहीं बनता। यदि कॉङ्ग्रेस का कहना मानते हैं, तो दिवाला निकलता है और यदि नहीं मानते, तो लोग देश-द्रोही कहते हैं !

दूसरा—हम लोग तो सच ही बेमौत मरे।

तीसरा—भाई हमको तो सब मूर्खता ही मालूम पड़ती है। भला इससे फ़ायदा ? जिस रोज़गार से देश की दौलत और इज़्ज़त बढ़ती है, उसी व्यापार को रोकना मूर्खता नहीं, तो क्या है ? चार रोज़ बाद सब टाँय-टाँय फ़िस हो जायगा। गाँधी जी ने पहले भी तो यह आन्दोलन चलाया था, आख़िर क्या नतीजा हुआ ?

दूसरे ने कहा—भाई सो तो होना ही है, लेकिन इस समय यह विपत्ति कैसे टले। समझाने-बुझाने से काम चलने का नहीं। मार-पीट से और दङ्गा होने का भय है और फिर मार-पीट भी करें तो किससे ? अब तो औरतों ने धरना देना शुरू किया है !!

तीसरा—देखो, आज जगनलाल के यहाँ कैसी निबटती है।

चौथा—कल तो बेचारा पिटते-पिटते बच गया।

पहला—उन्होंने कल बहुत बुरा किया। भला मार-पीट से कहीं काम चलता है।

लोगों की आलोचना समाप्त भी नहीं हुई थी, कि हर एक दूकान पर दो-दो स्वयंसेविकाएँ आकर खड़ी हो गईं। दूकानदार हाथ पर हाथ रख कर बैठ गए। यदि कोई ग्राहक आता भी, तो उन खद्दरधारी स्त्रियों की त्याग-मूर्ति, उनके कठिन परिश्रम तथा उनकी

निर्भीकता को देख कर और उनकी तिरस्कार-मिश्रित कोमल वाणी से मर्माहत होकर, शीघ्र ही बिना कुछ ख़रीदे ही वापस चला जाता !

सेठ जगनलाल की दूकान पर भी यही हाल था। कोई ग्राहक न टिकने पाता था। सेठ जी ख़ून का घूँट पी-पीकर रह जाते थे। एक बार उन्होंने कहा भी—यदि स्त्रियों की जगह पर पुरुष होते, तो आज उन्हें मैं इसका मज़ा चखा देता।

इस पर किसी रास्ता चलने वाले ने कह दिया—अबे जा, कल तो पिटते-पिटते बच गया, और आज उसी औरत से, जिसने कल तुझे बचाया था, अकड़ रहा है !

श्रीमती जमनाबाई देवीसिंह राठौर, बी० ए०

आप महाराजा साहब गोण्डल (काठियावाड़) की मन्त्रिणी नियुक्त हुई हैं। देशी रियासतों के इतिहास में इस उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर नियुक्त होने वाली आप सर्व-प्रथम महिला-रत्न हैं।

अब क्या था, सेठ जी और बिगड़ खड़े हुए। चिल्ला कर कहने लगे—"कौन साला मारने वाला था ? और किस हरामज़ादी ने मुझे बचाया था ? भला कोई हाथ तो लगा ले, देखूँ तो किसमें इतनी हिम्मत है, कि सेठ जगनलाल को आँख भी दिखा सके, मारना तो बहुत दूर है, आँखें निकाल लूँ, आँखें ! और अब देखूँ मेरी दूकान पर कौन धरना धरने आता है। मैं कोई तिनकौड़ीमल थोड़े ही हूँ, कि ज़रा-से में डर कर कह दिया, कि साल भर तक विलायती माल न बेचूँगा ! क्यों न बेचूँ ? किसी ने इन धरना वालों के बाप का क़र्ज़ा खाया है।" इतना कह कर, उन्होंने स्वयंसेविकाओं से चले जाने को कहा, परन्तु वे कब टलने वाली थीं ? उनको खड़ी देख कर सेठ जी उबल पड़े और कहने लगे—"अब सीधे-सीधे जाती हो या अपनी बेइज़्ज़ती कराओगी ?"

स्वयंसेविकाओं के चेहरे सुर्ख़ हो गए। एक ने डाँट कर कहा—सेठ जी, बहुत हुआ ! हम तो आपको भाई समझती थीं, लेकिन आपके असभ्य व्यवहार ने साफ़-साफ़ दिखा दिया, कि आप इस योग्य नहीं ! भला इतने हिन्दू भाइयों के रहते हम लोगों की बेइज़्ज़ती कौन कर सकता है ?

दूसरी स्वयंसेविका, जो अधेड़ थी, बोली—सेठ जी, हम लोग तो आपकी माँ, बहिनों और बेटियों की तरह हैं। आपको ऐसा असभ्य व्यवहार न करना चाहिए था ; हम लोग कोई अपने फ़ायदे के लिए यहाँ धूप में मारी-मारी नहीं फिरतीं ! आख़िर आप भी तो भारतवासी हैं ; फिर आप उसको स्वतन्त्र करने में मदद क्यों नहीं देते ? मदद न दें न सही, परन्तु कम से कम बीच में रुकावट तो न डालिए।

सेठ जी—जा-जा, मेरी बहू-बेटियाँ बाज़ार में धक्के खाने नहीं जातीं ! मैं यह सब कुछ नहीं जानता, सीधे-सीधे चली जा, इसीमें भलाई है।

दूकान पर भीड़ लग गई। फिर दङ्गा होने की सम्भावना देख कर, एक स्वयंसेविका ने जाकर विमला देवी को सारी बातों से सूचित कर दिया। विमला देवी कुछ समय तक सोचती रहीं और फिर बोलीं—यदि कहो तो दो स्वयंसेवक तुम्हारे साथ भेज दूँ। वे तुम्हारी सहायता करेंगे।

स्वयंसेविका ने कहा—देवी जी, स्वयंसेवकों से काम न चलेगा। कल उन्होंने एक स्वयंसेवक को मारा था।

विमला—छिः-छिः ! क्या भारत में ऐसे भी मनुष्य हैं ! मैं उनको ऐसा न समझती थी।

स्वयंसेविका—क्या आप उनसे परिचित हैं ?

विमला—हाँ, कुछ ऐसे ही।

स्वयंसेविका—तब तो आप ही उनको समझाइए, कदाचित आपके कहने का उन पर कुछ असर हो, ऐसे तो उनमें मनुष्यत्व रत्ती भर भी नहीं है।

विमला ने शरमा कर सर झुका लिया। उसका मुख मलीन था। कुछ क्षण पश्चात उसने कहा—अच्छा जाओ, जगनलाल जी की दूकान से धरना उठा लो !

स्वयंसेविका—क्यों ?

विमला—मैं स्वयं उस दुकान पर धरना दूँगी।

ऐसा ही किया गया। जगनलाल की ख़ुशी का ठिकाना न था। उन्होंने कहा—देखा, कैसा धरना हटवाया ! अगर मैं दब जाता, तो बस मेरा भी दिवाला था। अरे भाई, ऐसे मौक़ों पर दबना ठीक नहीं !

दूसरे दूकानदार विमला की इस आज्ञा से बड़े ही असन्तुष्ट थे। एक ने कहा—वाह ! क्या हमी निर्बल हैं जो दबे रहें !!

दूसरा—ऐसा नहीं हो सकता कि जगनलाल की दूकान पर धरना न दिया जाय, और हम लोग दबाए जायँ।

तीसरा—और क्या, क्या जगनलाल के कोई सुरख़ाब का पर लगा है ?

दूकानदारों में यह बातचीत हो ही रही थी, ख़बर मिली कि विमला देवी स्वयं ही जगनलाल की दूकान पर धरना देने जा रही हैं। लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, किन्तु बात सत्य ही थी।

विमला जाकर जगनलाल की दूकान पर खड़ी हो गई। सेठ जी ने यह दूसरी बला देख, कुपित होकर कहा—यह क्या ? अब तू आई है, क्या मैं तुझे छोड़ दूँगा ? देख, मैं तुझे बतलाए देता हूँ कि मेरी दूकान पर सिवा बेइज़्ज़ती के और कुछ नहीं धरा है।

विमला ने घूम कर कहा—आपकी जो इच्छा हो कीजिए।

सेठ जी बबड़ा कर उठ खड़े हुए और विमला को ध्यान से देख कर बोले—कौन ? विमला ?

विमला—जी हाँ, मैं ही हूँ।

सेठ जी—क्या तू भी इन्हीं में मिल गई ?

विमला—क्या मैं भारत की सन्तान नहीं हूँ ? क्या मुझमें भारत का रक्त नहीं बहता ? क्या मेरे हृदय में स्वदेश-प्रेम की लहर नहीं उमड़ती ? जो मैं घर में बैठ कर चुपचाप चैन की रोटी खाऊँ और भारत-माता को ख़ून के आँसू रोते देखूँ ?

सेठ जी—तो तू क्या चाहती है ?

विमला—यही कि आप भी भारत-माता को स्वतन्त्र करने में सहायता दीजिए, भारत के अन्य सपूतों की तरह आप भी अपना सर्वस्व उस पर निछावर करके अपने को कृतार्थ कीजिए, यही मेरी प्रार्थना है।

इतना कह कर विमला हाथ जोड़ कर सेठ जी के चरणों में गिर पड़ी। सेठ जी के नेत्र डबडबा आए। विमला को उठाते हुए उन्होंने कहा—विमला उठ, मैं तेरी इच्छा पूरी करूँगा। तुझ ऐसी पुत्री का पिता यदि इतना भी न करे तो उसे धिक्कार है !

सारे बज़ाजे में यह बात फैल गई। सेठ जी की दूकान से धरना उठ गया।

* * *

मिश्र का स्वाधीनता-संग्राम

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

अफ़्रिका का पूर्वोत्तर भाग 'मिश्र' देश के नाम से विख्यात है। इसकी दक्षिण ओर नोविया, पश्चिम में सहारा मरुभूमि, उत्तर की ओर ट्रिपोली और रूम-सागर तथा पूर्व की ओर लाल-सागर है। इस देश के मध्य भाग में 'नील' नामक महानद है, जो इसका सर्वस्व है, क्योंकि इसके किनारे की भूमि अत्यन्त उपजाऊ है। मिश्र का जलवायु बिल्कुल शुष्क है। वर्षा केवल उत्तरीय मिश्र में कभी-कभी थोड़ी-सी हो जाती है। मिश्र मुस्लिम-धर्म-प्रधान देश है। यहाँ के निवासी काकेशस, अरब और तुर्क हैं। कुछ यूरोपियन भी रहते हैं। यहाँ की प्रधान भाषा अरबी है। मिश्र में रुई, दाल, और शक्कर की पैदावार अच्छी होती है। ये चीज़ें यहाँ से दूसरे देशों को भी भेजी जाती हैं। कपड़ा तथा धातु की बनी चीज़ें बाहर से आती हैं। मिश्र के बराय-नाम बादशाह या शासक को 'ख़दीव' कहते हैं। पहले यह तुर्किस्तान के सुलतान के अधीन था। परन्तु गत महासमर के बाद से अङ्गरेज़ों के अधीन है। कैरो या काहिरा मिश्र की राजधानी है। यह नोल नद के किनारे बसा हुआ विशाल नगर अफ़्रिका का सब से बड़ा नगर माना जाता है। एलगज़ेण्डरिया यहाँ का प्रधान बन्दरगाह है। यहीं वह संसार का मशहूर स्वेज़ नाम की नहर है, जिस पर अधिकार जमाने के लिए यूरोपियन जातियाँ लालायित रहती हैं।

भारतवर्ष तथा मिश्र की प्राकृतिक अवस्था बहुत कुछ मिलती-जुलती है। जिस तरह यहाँ की भूमि उपजाऊ है, उसी तरह मिश्र में भी खाने की चीज़ें बहुतायत से पैदा होती हैं। फलतः खाद्य पदार्थ सुलभ होने के कारण भारतवासियों की तरह मिश्री भी आराम-तलब और आलसी हो गए थे और इसी से भारतवर्ष की तरह मिश्र को भी अपनी स्वाधीनता खोकर विदेशियों की ग़ुलामी करनी पड़ी थी! परन्तु, जिस तरह ईश्वर की विमल-विभूतियों के आविर्भाव ने इस सोए हुए भारत को जाग्रत किया है, उसी तरह मिश्र की महान आत्माओं ने भी उसे स्वाधीनता की ओर परिचालित किया है; इस समय जैसा उज्ज्वल भविष्य भारतवर्ष का है, उससे कहीं उज्ज्वल मिश्र का है।

आज से हज़ारों शताब्दी पूर्व, दुर्भाग्यवश एक बार हिकसस जाति के लोगों ने मिश्र पर अधिकार जमा लिया था। उस समय इनके अत्याचारों से सारा मिश्र थर-थर काँप रहा था। हिकससों के विरुद्ध सर उठाने की भी किसी में ताक़त न थी। उस समय दक्षिण-मिश्र में एक छोटा सा कद राज्य था। वहाँ का राजा था तो एक छोटी रियासत का मालिक, परन्तु उसमें तेजस्विता थी। वह हिकससों का अत्याचार नहीं सह सका। उसने देश के प्रमुख व्यक्तियों को बुला कर एक गुप्त सभा की और उन्हें समझाया कि ये विदेशी हमारे धन, मान और धर्म को खुले-ख़ज़ाने लूट रहे हैं। उनके अत्याचारों और उत्पातों से देश तबाह हो रहा है, दरिद्रता बढ़ रही है; देशवासी हीनवीर्य हो रहे हैं और हम कानों में तेल डाले पड़े हैं—अवस्था के दास बन गए हैं। क्या हम मनुष्य नहीं हैं, जो ऐसे अत्याचार चुपचाप सह रहे हैं?

देशवासियों ने कड़क कर उत्तर दिया—हम मनुष्य हैं। विदेशियों के अत्याचार अब हर्गिज़ बर्दाश्त न करेंगे और उन्हें अपने देश से निकाल कर ही दम लेंगे!

देशवासियों का उत्साह देख कर राजा ने विद्रोह का झण्डा खड़ा कर दिया। उत्तर में हिकससों ने भी अत्याचार की मात्रा बढ़ा दी। हिकससों के राजा अपेप ने विद्रोही नरेश को लिखा कि थिवेस नगर की झील से अपने हाथियों को फ़ौरन हटा लो, क्योंकि उनकी चिङ्घाड़ से मेरी नींद में बाधा पड़ती है।

आजकल हमारे देश में गाएँ जितनी पूज्य और पवित्र मानी जाती हैं, उन दिनों मिश्र में हाथी भी वैसे ही पूज्य और पवित्र माने जाते थे। दूसरे, वह झील, जहाँ मिश्रियों के पूज्य हाथी चिङ्घाड़ा करते थे, राजा अपेप के आरामगाह से सैकड़ों मील के फ़ासले पर था। इसलिए मिश्री समझ गए कि यह महज़ छेड़खानी है। अपेप को उनकी स्वतन्त्रता छीन कर ही सन्तोष नहीं है। वह उन्हें अच्छी तरह कुचल डालना भी चाहता है। यह सोच कर मिश्री भी तैयार हो गए। उपर्युक्त करद-नरेश सेकनेनरा के सेनापतित्व में एक महती सेना तैयार हो गई। भीषण संग्राम छिड़ गया। एक ओर मुक्ति-कामी मिश्री युवक और दूसरी ओर शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हिकसस-सेना थी। परन्तु वीर-वर सेकनेनरा ने शत्रुओं के दाँत खट्टे कर दिए। उसकी तीक्ष्ण धार तलवार के सामने विपक्षी योद्धाओं का एक क्षण ठहरना भी दूभर हो गया!

अन्त में युद्ध करते-करते सेकनेनरा शत्रुओं के व्यूह में घुस गया। चारों ओर शत्रु-सेना थी और बीच में रण-बाँकुरा सेकनेनरा था। मानों द्रोण के चक्र-व्यूह में सप्त-महारथियों से घिरा हुआ अभिमन्यु खेल रहा हो! हिकससों ने देखा कि सम्मुख समर में इस नर-केसरी से लोहा लेना टेढ़ी खीर है। इसलिए उन्होंने एक अत्यन्त घृणित उपाय का अवलम्बन किया। एक गुप्त घातक ने पीछे से जाकर सेकनेनरा पर आक्रमण किया। सेकनेनरा आहत होकर गिर पड़ा। उसी समय एक-दूसरे हत्यारे ने उसके सिर में छुरा भोंक दिया! वीर के शरीर की रक्त-धारा से वसुन्धरा लाल हो गई! वीर-श्रेष्ठ सेकनेनरा की वे अन्तिम घड़ियाँ थीं। स्वर्ग की वीराङ्गनाएँ हाथों में जयमाला लिए उसके स्वागत के लिए स्वर्ग-द्वार पर खड़ी थीं। सेकनेनरा ने एक बार घृणापूर्ण दृष्टि से अपने कायर शत्रुओं की ओर देखा। इसके बाद उसने अपने साथियों को सम्बोधन करके कहा—"वीरो, मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए मर मिटना, परन्तु शत्रु को पीठ न दिखाना।" इसी समय किसी कायर ने अज्ञातवास से उसका मस्तक चूर्ण कर दिया। हिकससों ने ख़ुशी के नारे लगाए। किन्तु मिश्री युवक इससे ज़रा भी हतोत्साहित न हुए। आँख के सामने ही अपने सरदार की कायरतापूर्ण हत्या देख कर वे और भी उत्तेजित हो उठे और ऐसा सधा हुआ हाथ मारना आरम्भ किया, कि हिकससों को छठी का दूध याद आ गया! थोड़ी देर के बाद ही शत्रु-दल मैदान छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। मिश्र के आकाश में फिर से स्वाधीनता की पताका फहराने लगी।

पराजित हिकससों ने इसके बाद भी थोड़ा-बहुत उत्पात मचाया, परन्तु अन्त में राजा अमेस के ज़माने में, सदा के लिए मिश्र से विदा हो गए।

इस घटना के प्रायः एक हज़ार वर्ष बाद फ़ारस के राजा कैम्बिसस ने मिश्र पर अधिकार जमाया। मिश्रियों ने प्राणों की बाज़ी लगा कर कैम्बिसस को रोका था। परन्तु एक देशद्रोही मिश्री के विश्वासघात के कारण उन्हें हार जाना पड़ा! फ़ारस-नरेश ने मिश्र को तो जीत लिया, परन्तु मिश्रियों के हृदय को वे नहीं जीत सके! समय-समय पर बराबर विद्रोह की भीषण ज्वाला धधकती और बुझती रही। अन्त में दरायुस के ज़माने में, यह ज्वाला इतने ज़ोरों से धधक उठी, कि फ़ारसियों को मिश्र से अपना बोरिया-बँधना समेट लेने के लिए बाध्य होना पड़ा!

परन्तु साल भर के बाद फ़ारसियों ने फिर मिश्र पर चढ़ाई की। इस समय फ़ारस के राज-सिंहासन पर ज़ारज़ेक्सस नाम का नरेश आसीन था। उसकी अगणित सेना के सामने मिश्रियों को हार जाना पड़ा। मैदान शत्रुओं के हाथ रहा। ज़ारज़ेक्सस ने अपने छोटे भाई एकीमेनस को मिश्र के राज-सिंहासन पर बिठाया। एकीमेनस महाक्रूर और निष्ठुर स्वभाव का आदमी था। उसने मिश्रियों पर भीषण अत्याचार आरम्भ कर दिया; मिश्री दब गए।

सुदीर्घ बीस वर्ष बीत गए। इसी समय फिर मिश्र में जाग्रति के लक्षण दिखाई देने लगे। वीर साधक इनरास और अमीर तियास की ज्वालामयी वाणी से पराधीन मिश्र-निवासियों के मुर्दा-दिलों में पुनः जोश पैदा हुआ। स्वाधीनता के लिए मर-मिटने की लालसा से एक बार फिर मिश्री युवक बेचैन हो उठे। देखते-देखते भयङ्कर विद्रोहानल से मिश्र का कोना-कोना धधक उठा।

फ़ारस-नरेश ने यह ख़बर सुनी, तो क्रोध से आग-बबूला हो उठा और विद्रोहियों को कुचल डालने के लिए चार लाख पैदल सेना और दो सौ रण-पोत प्रेषित किया। उसे आशा थी, कि इतनी बड़ी सेना देखते ही मिश्री भाग खड़े होंगे। परन्तु फल विपरीत हुआ। मिश्रियों ने पहले ही प्रतिज्ञा कर ली थी, कि या तो स्वतन्त्र होकर रहेंगे, या स्वतन्त्रता प्राप्त करने की पुण्य-पूत चेष्टा में मर मिटेंगे।

इसके बाद भीषण संग्राम आरम्भ हुआ। एक लाख फ़ारसी खेत रहे, और बाक़ी तीन लाख प्राण लेकर भाग खड़े हुए।

फ़ारस-नरेश बौखला उठा! उसने फिर पाँच लाख सैनिकों को मिश्र पर चढ़ाई करने के लिए भेजा। मिश्रियों ने असीम साहस के साथ इस महती सेना का सामना किया। परन्तु दैव-दुर्विपाकवश उनका सेनानायक वीरवर इनरास घायल होकर गिर गया। देखते-देखते युद्ध की गति पलट गई। बेचारे मिश्र को एक बार फिर फ़ारसियों की अधीनता स्वीकार कर लेनी पड़ी। आहत इनरास की हत्या कर डाली गई! यह जघन्य कार्य देख कर मिश्री पागल हो उठे!! पुनः लोहा बजने की सम्भावना, मानो पर फैला कर मँडराने लगी। इस समय अगर कोई उपयुक्त सञ्चालक होता, तो निश्चय ही मिश्र वाले फ़ारसियों का तुमतुमा मिटा कर ही दम लेते। परन्तु मिश्र की साढ़ेसाती की आयु अभी पूरी नहीं हुई थी!

इस विजय के बाद फ़ारस-नरेश ने एक और चाल

निरोबी (अफ्रिका) के आर्य कन्या पाठशाला की कार्यकारिणी समिति के सदस्य और इस संस्था में पढ़ने वाली कुछ कन्याएँ

चली। उसने अपने भाई को हटा कर इनरास और अमीर तियास के लड़कों को मिश्र के राज-सिंहासन पर बिठाया और स्वयं उनका अभिभावक बन कर सेना आदि का इन्तज़ाम उसने अपने हाथ में रक्खा। परन्तु मिश्र वाले इस फन्दे में न आए। फ़ारस-नरेश की इस उदारता को उन्होंने एक व्यङ्ग समझा। यह उनके लिए घाव पर नमक हो गया !

इस बार मिश्रियों ने स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए ज़बरदस्त तैयारी की। सञ्चालक हुए अमीर तियास। अबकी बार मिश्रियों को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। फ़ारस-नरेश को मिश्र पर राज्य करने की आशा-भरोसा को सदा के लिए तिलाञ्जलि देकर चल देना पड़ा !

इसके बाद सदियों तक मिश्र स्वाधीन था। साम्राज्यवादी जातियों की नज़र तो उस पर अवश्य ही थी; परन्तु किसी ने उसकी ओर क़दम बढ़ाने का साहस नहीं किया। अन्त में तुर्किस्तान वालों ने अपने धार्मिक प्रभाव के कारण मिश्र के खदीव को अपने अधीन कर लिया, परन्तु उनकी नीति मिश्र की उन्नति के लिए विशेष घातक न थी और न वे उसे ग़ुलाम बना कर ही रखना चाहते थे।

मिश्र के प्राचीन इतिहास के उपर्युक्त दिग्दर्शन से पाठकों ने समझ लिया होगा, कि नील-नद विधौत मिश्र-देश प्राचीन सभ्यता का लीला-निकेतन है। आज भी इतिहास के पृष्ठों में उसका निदर्शन मौजूद है। मिश्र का कितनी बार उत्थान और पतन हुआ है, इसका कोई ठिकाना नहीं। परन्तु आज दुर्भाग्यवश मिश्र पराधीन है ! उसका ऐश्वर्य, प्राचीन सभ्यता और बाहुबल आज अन्तःविहीन अन्धकार के अतल-तल में तिरोहित हो गया है ! स्वाधीनता की बलिवेदी पर हँसते-हँसते प्राण विसर्जन करने वाला मिश्र, आज अङ्गरेज़ों का ग़ुलाम बना हुआ है ! उसकी दुर्गति का मूल कारण स्वेज़ की वह नहर है, वाणिज्य की सुविधा के लिए जिस स्वेज़ पर अधिकार जमाए रखना अत्यावश्यक है। और यह नहर मिश्र के मध्य भाग से निकाली गई है। इसलिए नहर को अपने क़ब्ज़े में रखने के लिए मिश्र को मुट्ठी में रखना अत्यावश्यक है। इसी मूल नीति के कारण अङ्गरेज़ मिश्र की गर्दन पर सवार हैं। इसके सिवा एशिया, अफ़्रिका और यूरोप के अधिकांश स्थानों पर अधिकार जमाए रखने के लिए भी मिश्र का अङ्गरेज़ों के अधिकार में रहना ज़रूरी है। इसीलिए इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञ स्वेज़ नहर के जन्मकाल से ही मिश्र पर अपना अधिकार जमाने की धुन में थे ? इसी समय मिश्र में एक जातीय दल का आविर्भाव हुआ। और उसने खदीव के विरुद्ध घोर आन्दोलन करना आरम्भ किया। ऐसे नायाब मौक़े से भला अङ्गरेज़ कब चूकने वाले थे ? उन्होंने फ़ौरन खदीव को ब्रिटिश साम्राज्य के सुशीतल छाया में आश्रय प्रदान किया ! और वैदेशिक स्वार्थ की रक्षा के बहाने स्वयं भी मिश्र में घुस आए !! उस समय मिश्र के जातीय दल के सूत्रधार थे, अरबी पाशा। उन्होंने उसी समय अपने देशवासियों को सावधान कर दिया कि इन भले आदमियों से होशियार रहने में ही कल्याण है ! अङ्गरेज़ों ने अरबी पाशा को निकाल बाहर किया। उस समय जातीय दल यथेष्ट बलशाली न था। इसलिए अङ्गरेज़ों ने बड़ी आसानी से मिश्र पर अपना सिक्का जमा लिया। देशद्रोही खदीव उनके हाथों का खिलौना बन गया; परन्तु जातीय दल भी चुप न था। वह बराबर आन्दोलन करता रहा।

इसी समय यूरोप में महासमर का भयङ्कर दावानल धधक उठा। इसलिए अङ्गरेज़ों की दृष्टि में मिश्र का महत्व और भी बढ़ गया और उन्होंने उसे एक समर-शिविर के रूप में परिणत कर दिया। भारतवर्ष, इङ्गलैण्ड तथा ऑस्ट्रेलिया से बहुत बड़ी-बड़ी पलटनें बुला कर वहाँ रक्खी गईं। साथ ही अङ्गरेज़ों की ओर से इस बात की आशा भी दिलाई गई, कि महासमर के बाद मिश्र की स्वाधीनता की भी रक्षा की जावेगी। भोले-भाले मिश्री अङ्गरेज़ों की इस चालबाज़ी को समझ न सके। उन्होंने नाना प्रकार की मुसीबतें उठा कर भी अङ्गरेज़ों की सहायता की, परन्तु महासमर के समाप्त होते ही अङ्गरेज़ों ने अपना असली रूप प्रकट कर दिया। मिश्र को भलाइयों का बदला घोर दमन और अमानुषिक अत्याचारों द्वारा चुकाया जाने लगा। हज़ारों स्वतन्त्रता-प्रेमी मिश्री जेल की चहारदीवारी के अन्दर बन्द कर दिए गए। जातीय आन्दोलन को समूल ध्वंस कर देने के लिए बड़ी ही निर्मम नीति से काम लिया गया ! सारे मिश्र में त्राहि-त्राहि मच गई। परन्तु आन्दोलन नहीं रुका। यह देख कर अङ्गरेज़ों ने दूसरे अमोघास्त्र का प्रयोग किया। लॉर्ड बेलफ़ोर, मि० लॉयड जॉर्ज, लॉर्ड कर्ज़न और सर वेलेन्टाइन शिरोल आदि ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने मार्सेई की अन्तिम शर्त का आश्रय लेकर मिश्र को ब्रिटेन के शासनाधीन रखने का दावा उपस्थित किया। उन्होंने सन्धि-सभा के प्रेज़िडेण्ट मि० उडरो विलसन को समझाया कि ग्रेट-ब्रिटेन, फ़्रान्स और मित्र शक्ति की अधीनस्थ जातियों के लिए 'आत्म-निर्णय' (Self-Determination) की नीति का अवलम्बन करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि ये सभी अपनी वर्तमान राजनीतिक अवस्था से अत्यन्त सन्तुष्ट हैं; ग्रेट-ब्रिटेन और फ़्रान्स के राम-राज्य में किसी को कोई कष्ट नहीं है।

परन्तु, मिश्र वाले ग्रेट-ब्रिटेन के राम-राज्य के सुख से अच्छी तरह अघा गए थे। उन्होंने एक क्षण के लिए भी विश्राम नहीं किया। अमेरिका के परम चतुर और उदार-हृदय राष्ट्र-पति मित्र राज्यों की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गए। दुर्बल राष्ट्रों को आत्म-निर्णय का अधिकार दिलाने की उनकी लालसा वन्ध्या के पुत्रवती होने की लालसा की तरह मन में विलीन हो गई ! परन्तु, मिश्र के स्वतन्त्र होने की अदम्य-लालसा का इससे बाल भी बाँका न हुआ। उपर्युक्त घटना के प्रायः दस वर्ष पूर्व की मार्सेई-सन्धि के अनुसार मिश्र पर अपना अप्रतिहत प्रभाव जमाए रखने का अधिकार ग्रेट-ब्रिटेन को प्राप्त हो गया। परन्तु, मिश्र ने इस चालबाज़ी को व्यर्थ करने के लिए कमर बाँध लिया था। मिश्र के चमकते हुए सूर्य स्वर्गवासी ज़ग़लुलपाशा ने स्वाधीनता-यज्ञ के प्रधान ऋत्विक का पद ग्रहण किया। उनके नायकत्व में मिश्र अपने लक्ष्य की ओर तेज़ी से बढ़ चला। महात्मा ज़ग़लुल तथा सहकर्मी कर्मवीरों ने समस्त जाति को अच्छी तरह समझा दिया, कि स्वाधीनता की आकांक्षा रखने वाली जाति को कोई प्रबल से प्रबल शक्ति भी पराधीनता की लौह-शृङ्खला में चिरकाल तक आबद्ध नहीं रख सकती। अगर तुम्हारी लगन सच्ची है, तो कोई भी बाधा-विघ्न तुम्हें रोक नहीं सकता। इसके उत्तर में ग्रेट-ब्रिटेन की उदारता आँखें ग़ुरेर कर खड़ी हो गई। बेचारे मिश्री, दमन की चक्की में अबाध गति से पीसे जाने लगे ! परन्तु स्वाधीनता के सच्चे पुजारियों पर अत्याचारियों की लाल-आँखों का कोई प्रभाव न पड़ा। स्वाधीनता के मरण-यज्ञ में वीरों ने हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुतियाँ प्रदान करना आरम्भ कर दिया। सचमुच वह दृश्य बड़ा मनोहर था, बड़ा मनोरम ! वीरवर ज़ग़लुल की दृढ़ता की कहानी और ग्रेट-ब्रिटेन के रोष-कम्पायित आँखों के अङ्गारे उगलने का हृदयग्राही वर्णन, पाठकों को एक बार मिश्र के इतिहास के पन्नों में अवश्य पढ़ना चाहिए।

[अगले अङ्क में समाप्त]

* * *

इटली-महाक्रान्ति की कुछ स्मृतियाँ

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

Italia ! by the passion of the pain,
That bent and rent thy chain
Italia ! by the breaking of the bonds
The shaking of the lands
Beloved, O men's mother. O men's Queen,
Arise, appear, be seen.

—*Swinberne.*

फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति के अग्नि-कुण्ड में प्राचीन रूढ़ियाँ धायँ-धायँ कर जल रही थीं और उन्हीं के साथ जल रहे थे 'एक-तन्त्रवाद' और उसकी सहचरी 'स्वेच्छाचारिता' ! इस महायज्ञ से निकली हुई चिनगारियाँ यूरोप के सब ही देशों में पहुँच गईं थीं और वहाँ के शासक प्रजासत्ता के इस रौद्र रूप को देख कर काँप रहे थे। बाहुबल की शक्ति बाहुबल को रोक सकती है, परन्तु बाहुबल विचार-धारा को रोकने में सदैव असमर्थ रहा है। जब-जब संसार में विचारों की उत्ताल-तरङ्गें उठी हैं, शक्ति-बल ने उसके सामने माथा झुका दिया है। बुद्ध का अहिंसावाद उठा और उसने एशिया को भिन्न रूप में बदल कर यूरोप तक अपना डङ्का बजाया, ईसा की 'प्रेम और भक्ति' ने संसार को और ही रङ्ग में रँग दिया और धार्मिक 'जहाद' की मतवाली तलवारों ने संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियों पर पदाघात किया ! वह धार्मिक युग था, उस समय राजनीति धर्म का एक अङ्ग मात्र थी, परन्तु फ़्रान्स की राज्यक्रान्ति ने राजनीतिक विषयों को सब से आगे लाकर रख दिया था।

इस महायज्ञ की चिनगारियाँ रोम राज्यों में पहुँचीं, वहाँ के नवयुवक आँख मल कर उठ बैठे। हा ! रोम ! यूरोप की आदि सभ्यता का आधार रोम पराधीन और परतन्त्र ! आग लग गई, उन तरुण हृदयों में ! ऑस्ट्रियन शासक, पीडमोण्ट और पोप की रियासतों ने उनके वीर-हृदय को कुचलना चाहा, पर स्वाधीनता के मतवाले युवक नहीं रुके। हज़ारों निर्वासित हुए और सैकड़ों ने मृत्यु का आलिङ्गन किया। इटली की जेलें और क़िले राजनीतिक क़ैदियों से भर गए !

* * *

बालक ऐटिलियो बेण्डियरा और ऐमीलो बेण्डियरा अभागे राजनीतिक क़ैदियों की दयाजनक स्थिति को देखते थे और उनका हृदय करुणा-क्रन्दन करने लगता था। इनका अपराध क्या है ? यही न, कि यह अपनी मातृ-भूमि को प्रेम करते हैं; उसको स्वतन्त्र करना चाहते हैं ! उन्होंने ग़रीबों को पीसा, सभ्य महान रोम को अनाथ और असहाय कर दिया, फिर यह क्यों चुप रहते ? क्या भयङ्कर स्वेच्छाचार और निरङ्कुशता को सहन करने से इनकार करना भी कोई पाप है ?

बेण्डियरा बन्धुओं ने धन और ऐश्वर्य में जन्म लिया था, उनके पिता एक ऑस्ट्रियन जङ्गी बेड़े के अध्यक्ष थे। विदेशियों ने धन देकर उन्हें ग़ुलाम बना लिया था, वे एक बड़े वेतन के परिवर्तन में अपने ही देश की आकांक्षा कुचलने में अपनी शान समझते थे। जनता उनकी धन-लोलुपता देखती और उँगली उन पर उठती थी। बेण्डियरा-बन्धु सोचते, ऐसा धन किस काम का, जिससे आत्मा का हनन हो ? लोकमत के परिवर्तन में इस पद का मूल्य ही क्या है ?

अपने पिता के प्रभाव से दोनों बन्धुओं को जल-विभाग में अच्छी नौकरी मिल गई, परन्तु उनके हृदय में तो क्रान्ति की आग धधक चुकी थी। देश स्वतन्त्र कैसे हो ? यह उनकी मानसिक चिन्ता उनमें घुन का काम कर रही थी।

* * *

आज 'तरुण-इटली' का प्रत्येक सदस्य एक विचित्र धुन में व्यस्त है। कल ज्योंही सूर्य भगवान अपनी प्रलयङ्करी रश्मियों सहित प्रकट होंगे, त्योंही शताब्दियों की परतन्त्रता के अन्त करने का अनुष्ठान प्रारम्भ हो जायगा। विप्लव महायज्ञ की आहुतियों से संसार चौंक उठेगा, इटली के नवयुवकों की तलवार वायु में कँपकँपी पैदा कर देगी, अत्याचार और निरङ्कुशता बिल में भागने के लिए स्थान खोजते हुए दिखाई देंगे। ओह ! कैसा पवित्र रोमाञ्चकारी दिन होगा वह !

पर यह क्या ? शासकों का यह ताण्डव-नृत्य क्यों ? क्या सूर्य अस्त होते ही इटली के देशभक्तों की आशाएँ भी अस्त हो गईं ? एक क्षण में सरकारी दूतों ने हज़ारों देशभक्तों की मुश्कें कस लीं। चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई।

मेज़िनी का मार्सलीज़ से भेजा हुआ एक बक्स जिनेवा के पोतालय में पकड़ा गया। इसमें कुछ काग़ज़ात और पत्र-व्यवहार करने के गुप्त चिन्हों की पुस्तक थी। पीडमोण्ट के शासकों को योजना करके सारा भेद खुल गया।

विप्लववादियों के एक नेता डॉक्टर जेकोपो सफ़्रियानी ने चारों ओर क्रान्तिकारियों को सन्देश भेजा कि शीघ्र सब विप्लववादी कार्यकर्ता इटली से बाहर हो जायँ और फ़्रान्स या स्विट्ज़रलैण्ड में शरण लें। सैकड़ों इटली के देशभक्तों ने अपनी मातृभूमि को प्रणाम किया और निर्वासन का दण्ड स्वयं अपने ऊपर ले, मातृ-भूमि से बिदाई ली, लेकिन जेकोपो सफ़्रियानी ? उसकी माता ने अश्रुपूरित नेत्रों से उससे अपनी रक्षा के लिए अन्य देश में शरण लेने की प्रार्थना की, पर यह क्या उसके लिए सम्भव था ? फिर क्रान्ति का झण्डा किसके हाथ में रहेगा ? मृत्यु के भय से सफ़्रियानी के हाथ से पताका न छूटेगी। क्या वह झण्डे की रक्षा के लिए मृत्यु से खेल खेलने में डरता है ? माँ ! मैं अपनी पताका लिए खड़ा होऊँगा, उधर से मृत्यु का झोंका आएगा, पताका और मैं एक साथ ही गिरेंगे, तनिक भी अन्तर न होगा। कैसा सुखद स्वप्न है यह ! इसके विचार-मात्र से ही आनन्दमय रोमाञ्च हो आता है। ऐसे आनन्द को छोड़ कर मैं कहाँ भागूँगा ?

सफ़्रियानी पकड़ा गया ! सफ़्रियानी का पिता मैजिस्ट्रेट था, उसके प्रभाव से जज ने कहा—"बचो ! हमसे सब साफ़-साफ़ कह दो ! हम तुम्हें छोड़ देंगे।" सफ़्रियानी हँसा और उसने जज से कहा—"कल आइएगा, इसका उत्तर मैं कल दूँगा।" जज बड़ी आशाएँ लेकर गया और शासक बचे हुए देशभक्तों की गिरफ़्तारी की तैयारी करने लगे।

दूसरे दिन सूर्य उदय हुआ। जेलर ने सफ़्रियानी को जज के पास ले जाने के लिए उसकी कोठरी में प्रवेश किया, पर फिर घबड़ा कर पीछे हटा। उसके शरीर को काठ मार गया, आँखें पथरा गईं और उसके मुँह से हल्की-सी एक चीख़ निकल गई। सफ़्रियानी की लाश ख़ून से तर-बतर ज़मीन पर पड़ी थी और दीवार पर ख़ून ही से लिखा था—"आततायियों को यही मेरा उत्तर है।"

सत्ता के पुजारियों ने उसकी प्राण-रहित देह गिद्धों को डाल दी, पर उसकी अमर आत्मा इटली के प्रत्येक शरीर में व्याप्त हो गई थी।

* * *

बेण्डियरा-बन्धुओं ने अन्त में धन के लोभ को लात मार दी और तरुण इटली के सदस्य बन गए। बेण्डियरा-बन्धु और निकोला फ़ेबरिज़ी के नेतृत्व में रोमाङ्गना और केलेबरिया प्रान्तों में विप्लव-अनुष्ठान की योजना की गई। अस्त्र-शस्त्र इकट्ठे किए जाने लगे।

परतन्त्रता भयङ्कर विष है। ग़ुलाम मनुष्य की अन्तरात्मा निर्बल होती है, वह स्वार्थी और तुच्छ हो जाता है। यही कारण था कि इटली की आत्मा का हनन करने के लिए शासकों को इटली के ही मनुष्य कुछ चाँदी के टुकड़ों के लोभ में मिल जाते थे। सरकार का ख़ुफ़िया-विभाग इन्हीं लोगों से भरा पड़ा था। शायद ही कोई ऐसा कुटुम्ब हो, जिसमें एक ख़ुफ़िया-विभाग का आदमी न हो। भाई भाई से और पिता पुत्र से शङ्काशील रहता था, कैसी भयावह स्थिति थी वह ! बेण्डियरा-बन्धुओं के एक मित्र ने सारा भण्डा-फोड़ कर दिया। बेण्डियरा-बन्धु आत्म-रक्षा के लिए भागे।

अपने देश को छोड़ कर अज्ञात यात्रा की तैयारी करना कितना कठिन है। माता-पिता का मोह ! नव-यौवना सुन्दरी पत्नी का प्रेम ! मित्रों का सहयोग ! नवजात शिशु का स्नेह ! सबको ठुकराना ! और वह भी सम्भवतः अनन्तकाल के लिए ! अटीलियो ने अपनी माता और पत्नी को लिखा :—

"Near or far, happy or unhappy, I shall ever love and desire thee, my Mariana, but I wish for thine own sake that thou should'st love me less and so suffer less...If only instead of writing I could wake up in thy arms !"

अर्थात्—"मैं दूर रहूँ या समीप ! सुखी रहूँ या दुखी, पर मेरे हृदय में तेरे प्रति प्रेम और आकांक्षा सदैव बनी रहेगी; परन्तु मेरी मेरियाना ! मैं तेरे हित के लिए चाहता हूँ, कि तू मुझे कम प्यार कर, जिससे तुझे कम पीड़ा हो...यदि मैं यह लिखने के स्थान में केवल तेरे बाहुओं में जग सकता......!" मेरियाना वीर पत्नी थी, देश के दुख में पति के भावों के साथ सहयोग करती थी, परन्तु उसने कब सोचा था, कि क्रान्ति के झोंके इतना शीघ्र उसके जीवन की नौका को बहा कर उसकी आँखों से विलीन कर देंगे !

* * *

बेण्डियरा-बन्धु सीरिया में निर्वासित जीवन व्यतीत करते थे। फ़्रान्स की सरकार की आज्ञा से मेज़िनी को भी मार्सलीज़ छोड़ कर लन्दन में शरण लेनी पड़ी थी। उसने सोचा, अङ्गरेज़ जाति स्वातन्त्र्य-प्रिय है, वहाँ दिन-दहाड़े अन्याय नहीं होता। इधर बेण्डियरा-बन्धु अत्यन्त आर्थिक कष्ट में थे, परन्तु उनकी आत्मा सब कष्टों को छोड़ कर एक ध्येय में लगी हुई थी। हाय ! अगर बेण्डियरा बन्धुओं को यही हृदय दिया था, तो उन्हें ऐश्वर्य-शाली माता-पिता के घर क्यों जन्म दिया था ? ग़रीब परिस्थितियों में जन्म लेने से निर्वासन की यह कठिनाइयाँ सहज तो हो जातीं !

बेण्डियरा-बन्धुओं की आत्मा आकुल थी। हम कब तक इस तरह देश को निरङ्कुशता में पिसते देखेंगे और शान्त रहेंगे ? यदि महान क्रान्ति का दिवस अभी नहीं आया, तो कब आवेगा ? फूँक-फूँक कर पैर आगे रखने की यह नीति क्या यह प्रकट नहीं करती, कि हमारी आत्माओं में भी अभी बल की कमी है ? जब हमें विदेशी पीस ही डालेंगे, तब क्या हो सकेगा ? बेण्डियरा ने अपने तप्त-अश्रुओं से भीगे हुए पत्र मेज़िनी को भेजे,

पर चोर की तरह लन्दन-सरकार इन पत्रों को पढ़ती थी और उनका तात्पर्य लन्दन-स्थित ऑस्ट्रियन दूत तक पहुँचा देती थी।

*　*　*

मेज़िनी ने बेण्डियरा-बन्धुओं को अभी अवसर की प्रतीक्षा करने के लिए लिखा। उनकी आत्मा विद्रोह कर बैठी। जब देश में आग लग रही हो, तब कैसी प्रतीक्षा? कार्य करने का भी अवसर शीघ्र मिल गया। कर्फ़ू के सागर में रुपया, अस्त्र और लड़ाई के सामान से भरा हुआ जहाज़ आया। उसके दो कप्तानों ने उन्हें सुनाया कि इटली में क्रान्ति की सब तैयारियाँ हो चुकी हैं, कोसेञ्जा, सिगलियानो और सेनग्यूवानी के पहाड़ों में
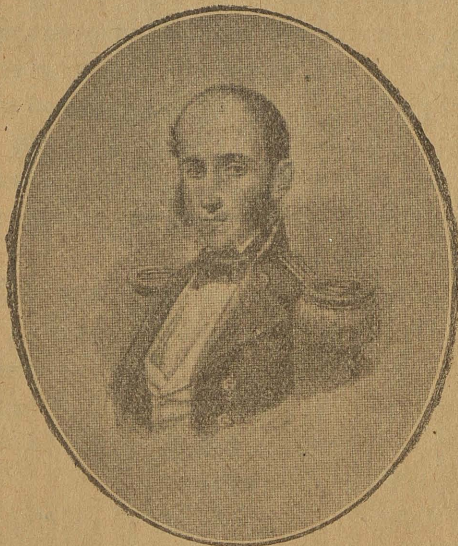
ऐमीलो बेण्डियरा

अनन्त शस्त्र क्रान्तिकारी इकट्ठे हो गए हैं, साधन की भी कमी नहीं है। आवश्यकता है केवल कुछ प्रभावशाली व्यक्तियों की, जो उन्हें महाक्रान्ति के अनुष्ठान में दीक्षित कर सकें। सरल हृदय बेण्डियरा-बन्धु ख़ुशी से उछल पड़े। देशभक्ति की ज्वाला ने उनके तर्क की आँखों को बन्द कर दिया। अट्ठारह साथियों सहित बेण्डियरा-बन्धु जहाज़ पर सवार हो गए।

*　*　*

बेण्डियरा-बन्धु केलेबरिया प्रान्त में काट्रोन के तट पर उतरे। उन्होंने इटली की भूमि का चुम्बन किया और कहा—"तूने हमें अपना जीवन दिया है, हम तुझे अपना जीवन देते हैं!" और फिर उन्होंने अपने मस्तक उठाए। पर यह क्या? यहाँ तो कोई क्रान्तिकारी नहीं मालूम होते? विश्वासघात! वे फिर तट की ओर दौड़े, पर जहाज़ चल दिया था। वे यह सोच ही रहे थे, कि उनकी ओर एक सरकारी सैनिकों की टुकड़ी आती हुई दिखाई दी, सैनिकों के आगे-आगे उनके ही अट्ठारह साथियों में से एक साथी बोशेग्पाई भी था। फिर क्या बोशेग्पाई सरकारी दूत है?

बेण्डियरा-बन्धु और उनके साथी आत्म-रक्षा के लिए तैयार हो गए। दुश्मन की जेलों में सड़ कर मरने से सैनिक-मौत मरना अच्छा है।

देशभक्तों की वीरता अद्भुत थी, एक सरकारी सैनिक मारा गया और कई घायल हुए, पर अधिक देर तक इतने अधिक सैनिकों का सामना करना सम्भव न था। बेण्डियरा-बन्धु और उनके साथी पकड़े गए।

फ़ौजी न्यायालय बैठा, बेण्डियरा बन्धुओं और उनके साथियों ने अपनी ओर से कोई वकील करना या सफ़ाई पेश करने से इनकार कर दिया। जहाँ मुद्दई और न्यायाधीश एक ही हों, वहाँ न्याय कैसा? तीन को फाँसी और बाक़ी को गोली से उड़ा देने की सज़ा मिली।

देश पर बलिदान होने वाली वीर आत्माओं ने फ़ैसला सुना और मृदु-हास्य से मुस्कुरा दिया।

*　*　*

आज २५ जुलाई सन् १८४४ का पवित्र दिन है। चारों ओर बेण्डियरा-बन्धु और उनके साथियों का ही ज़िक्र है। पापी शासक क्या सचमुच ही इन विकसित सुन्दर पुष्पों को कुचल ही डालेंगे? क्या उनके देखते ही उनकी आशा-लता इस तरह नष्ट कर दी जायगी? हा! इटली का दुर्भाग्य! हज़ारों स्त्री, बच्चे, पुरुष उस ओर चल दिए, जहाँ देशभक्तों को गोली से उड़ाया जाने वाला था।

ऐमीलो बेण्डियरा अपने सात साथियों सहित मृत्यु-भूमि में लाया गया। सबके शरीर काले बुर्क़ों से ढके हुए थे। शासकों ने सोचा था, इन वीरों की प्रतिभा बुर्क़ों की कालिमा में छिप जायगी, पर जिस तरह दिनकर का प्रकाश अन्धकार के कलेवर को फाड़ कर संसार की गोदी को आभा से भर देता है, उसी तरह अज्ञात मार्ग से इन शहीदों का तेज जनता के हृदय में आलोकित हो रहा था।

शहीदों की टोली में से एक ध्वनि निकली, उसमें सङ्गीत का माधुर्य था, पर इस्पात की दृढ़ता। *Chi per la patria muroro lissu to ha assai* (स्वदेश के लिए शहीद होने वाले अमर हैं) चारों ओर वायुमण्डल स्तब्ध था, जनता एकटक शहीदों की ओर देख रही थी।

सैनिकों ने बन्दूक़ें चढ़ाईं, अभियुक्तों को तैयार होने के लिए आज्ञा हुई। उनमें से प्रत्येक ने इटली की पवित्र भूमि को घुटने टेक कर नमस्कार किया, उसकी पवित्र रज माथे से लगाई। फिर आपस में एक-दूसरे से गले लग कर मिले और प्रेम से एक-दूसरे का चुम्बन किया। हज़ारों का जन-समूह इस तरह खड़ा था, जिस तरह वे मानों किसी कुशल-चित्रकार की क़लम के चमत्कार हों। सरकारी कर्मचारी भी किंकर्त्तव्य-विमूढ़ खड़े थे और सैनिकों को तो काठ मार गया था!

इतने में ही एक लड़खड़ाती पर तीखी आवाज़ सुनाई दी—"हाँ! छोड़ो!" सैनिकों ने हड़बड़ा कर बन्दूक़ें सँभालीं, जैसे वे नींद से जगे हों और निशाना लगा कर गोलियों की बाढ़ छोड़ी! दायँ! दायँ! पर यह क्या? गोलियाँ शहीदों के लगने की बजाय, हवा में ऊपर चली गई थीं। जनता ने हर्ष-ध्वनि की।

"साहस करो! अपना कर्त्तव्य-पालन करो! हम भी सैनिक हैं!"—एक देशभक्त ने सैनिकों को लक्ष्य करके कहा। सैनिकों ने रोते-रोते फिर बन्दूक़ें सँभालीं, जनता ने ऊँचे स्वर से शासकों को उनके मुँह पर ही गालियाँ देनी शुरू कीं। गोलियों की एक बाढ़ और छूटी, देशभक्तों के शरीर भूमि पर गिर कर तड़पने लगे, परन्तु '*Viva'l Italia*' 'इटली अमर हो' 'इटली की जय हो' आदि नारे उनके मुँह से तब भी निकलते रहे। फिर सब शान्त हो गया।

ऐमीलो बेण्डियरा ने अपने एक पत्र में फ़्रेज़िली को लिखा था—"और यदि हम अपना जीवन देश के लिए उत्सर्ग ही कर दें तो क्या चिन्ता है! इटली तब तक जीवित नहीं हो सकता, जब तक इटली-निवासी मरना न सीखें।" शीघ्र ही उसने इसे कार्य-रूप में भी करके दिखा दिया! धन्य है।

*　*　*

बेण्डियरा-बन्धुओं के आत्म-बलिदान ने इटली के नवयुवकों में जीवन फूँक दिया और शीघ्र ही सारा देश क्रान्ति की लहरों में सराबोर हो गया। जो काम वे जीकर न कर सके थे, वही उन्होंने मर कर कर दिया।

डॉउनिङ्ग स्ट्रीट की सरकार ने बेण्डियरा-बन्धुओं के पत्रों को ऑस्ट्रिया के राजदूत तक पहुँचा कर अपना दामन उनके रक्त से रँग लिया था। पार्लामेण्ट में गर्म चर्चा चली, सर ग्राहम पोल ने पत्रों में हस्तक्षेप करने की बात को स्वीकार किया। फिर तो चारों ओर से उसे इटली के देशभक्तों का हत्यारा कहा जाने लगा। डङ्कोम्ब ने इस मामले की जाँच करने के लिए एक पार्लामेण्टरी कमीशन नियुक्त करने का प्रस्ताव पेश करते हुए बेण्डियरा-बन्धुओं के सम्बन्ध में कहा—"They died for their country, betrayed by the British Government of the day."

न्याय-प्रिय अङ्गरेज़ों ने व्यक्तिगत पत्रों में हस्तक्षेप करने के क़ानून का घोर विरोध किया। कार्लायल (Carlyle) ने इस कार्य-प्रणाली का घोर विरोध करते हुए टाइम्स में लिखा था:—

"Whether the extraneous Austrian Emperor and miserable old Chimera of a pope shall maintain themselves in Italy, is not a questions in the least vital to Englishman. But it is a question vital to us that sealed letters in an English Post Office be, as we all fancied they were, respected as things sacred, that opening of men's letters, a practice near of kin to picking men's pockets, and to other still viler and far fataler forms of scoundrelism, be not restored to in England, except in cases of the very last extremity.......To all Austrian Kaisers, and such like, in their time of trouble, let us answer, as our fathers from of old have answered: 'Not by such means is help for you! such means allied to picking of pockets and viler forms of scoundrelism, are not permitted in this country for your behoof.'"

लॉर्ड ऐबर्डीन ने इस आन्दोलन का उत्तर दूसरी ही तरह दिया। उन्होंने कहा कि बेण्डियरा-बन्धु और उनके साथी की हत्या नेपिल्स की सरकार ने नहीं की। वहाँ की
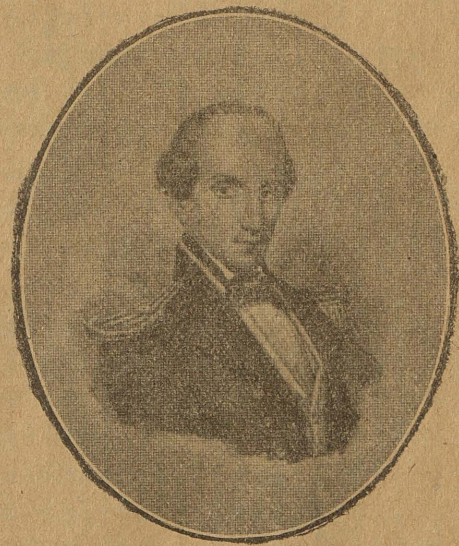
ऐटिलियो बेण्डियरा

जनता देश में उनके आने के विरुद्ध थी, इसलिए उसने उन पर आक्रमण किया और उन्हें मार डाला। सत्य की पराकाष्ठा! धन्य ब्रिटिश-न्याय!

*　*　*

बेण्डियरा बन्धुओं के रक्त से जो खेती सींची गई थी, वह समय आने पर लहलहा उठी। इटली स्वतन्त्र हो गया और इस घटना के सोलह वर्ष बाद जब गेरीबाल्डी और उसके विजेता सैनिक इस स्थान से गुज़रे, तो सबने घुटने टेक कर ईश्वर से शहीदों की आत्मा को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की। इनमें वीर सैनिक-वेश में मेरियाना भी थी!

*　*　*

दासों की पुकार

[श्री० दीनानाथ जी, एम० ए०]

हम लोगों में से अधिकतर लोगों का यह ख़याल है, कि दासता एक बड़ी पुरानी संस्था थी, जिसका वर्णन कई देशों के पुराने ज़माने के इतिहास में मिलता है। हम लोग समझते हैं, कि दासता का समय संसार के इतिहास का एक बहुत ही ख़राब समय था और आधुनिक संसार में तो दासता का नाम भी नहीं है। जब कभी दासता के विषय में बातचीत होती है, तो हम कहते हैं कि वे पुराने मनुष्य बड़े ही क्रूर थे, अब तो संसार बहुत सभ्य बन गया है, अब मनुष्य-जाति में आपस में ऐसा पाशविक तथा क्रूर बर्ताव कहीं भी नहीं किया जाता है। कई लोग दासता के विरुद्ध आन्दोलन करने वाले पुराने नेताओं की प्रशंसा करते हैं और कहते हैं, कि यदि हम लोग उस समय जीवित होते, तो उनके इस महान कार्य में अवश्य सहायता देते और संसार के इस महान रोग को दूर करते; परन्तु हम लोगों को यह मालूम नहीं है, आज भी संसार में जहाँ कि स्वतन्त्रता, समता तथा भ्रातृ-भाव का राज्य समझा जाता है, जहाँ की अधिकतर सभ्य जातियाँ भ्रातृ-भाव के महान आदर्श का अनुसरण करने का दावा भरती हैं, ५० लाख से ऊपर ऐसे मनुष्य हैं, जो कि दूसरे मनुष्यों की सम्पत्ति हैं! उन्हें अपने शरीर पर अधिकार नहीं है, अपनी स्त्री पर अधिकार नहीं है, अपने बच्चों पर अधिकार नहीं है। वे केवल मवेशी की तरह हैं, उन्हें खाना दिया जाता है और उनसे काम लिया जाता है। जब मालिक का मन चाहे, वह उनमें से किसी को भी, किसी भी दाम पर बेच सकता है! वे भी मनुष्य हैं, उनके भी हृदय है, शरीर है, मन है, बुद्धि है। उनके हृदय में भी दया, शील, आत्माभिमान, कुटुम्ब-प्रेम इत्यादि उच्च भाव उपस्थित हैं, पर इनमें से एक पर भी उनका अधिकार नहीं है! सबका अधिकारी उनका स्वामी है!!

दासता कई प्रकार की होती है। यों तो संसार की कई जातियाँ, जो विदेशी शासन के नीचे हैं, वे भी दासता के बन्धन में पड़ी हैं। पर उनके केवल कुछ राजनैतिक तथा व्यक्तिगत अधिकार मात्र छीन लिए गए हैं। असली दासता तो इससे कहीं बुरी है। दासता की असली पहचान यह है, कि मालिक का दास पर वह अधिकार है, जो उसे अपनी अन्य सम्पत्ति पर है! वह उसे इनाम में दे सकता है, उसे बेच सकता है, और वह उसे जो चाहे, जिस तरह रख सकता है। जितना अधिकार उसे अपने घर पर या और किसी सम्पत्ति पर है, उतना ही अपने दास पर है। इस सिद्धान्त को जब कार्य-रूप दिया जाता है, तब इससे जितनी बुराइयाँ पैदा होती हैं, दासों पर जितने अत्याचार होते हैं, उसकी कल्पना करना असम्भव है। उसका वर्णन करने का प्रयत्न आगे किया जावेगा। इस सम्बन्ध में एक बात का और ध्यान रखना चाहिए। दासता का रोग जङ्गली जातियों में कहीं नहीं पाया जाता। यह केवल सभ्य कहलाने वाली जातियों का रोग है। जङ्गली जातियों में मनुष्यों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का इस बुरी तरह से नाश नहीं किया जाता। उसे अपने शरीर तथा कुटुम्ब की स्वतन्त्रता होने के अतिरिक्त, देश की अन्य सम्पत्ति में भी कुछ भाग मिलता है। वह अपने देश के जङ्गलों से अपना आहार इकट्ठा कर सकता है तथा वहाँ की नदियों व अन्य उपयोगी स्थानों का उपयोग कर सकता है। परन्तु दास तो एक व्यक्ति नहीं, वरन् एक सम्पत्ति है, जिसका पूरा उपयोग उसके स्वामी के हाथ में रक्खा गया है।

इस पाशविक संस्था के सम्बन्ध में कई रोमाञ्चकारी घटनाएँ सुनी गई हैं। जब-जब परोपकारी व्यक्तियों ने इसके विषय में जाँच की है, उन्हें अति भयानक तथा हृदय-वेधक कहानियाँ सुनाई गई हैं। माताओं के नन्हें-नन्हें बच्चे छुड़ा कर बेच दिए जाते हैं, स्त्री से पुरुष अलग कर दिया जाता है, एक सुखमय छोटे से कुटुम्ब को तितर-बितर करके उसके व्यक्ति दूसरे-दूसरे मालिकों के हाथ बेच दिए जाते हैं! चीन में छोटे-छोटे बाल-दास पाए जाते हैं। इनमें से कई एक-एक कमरे में भर दिए जाते हैं। रात-दिन उनसे बेहद काम लिया जाता है। काम न करने पर उन्हें कोड़े लगाए जाते हैं, उनके शरीर पर गरम पानी छोड़ दिया जाता है, तथा अन्य कई हृदय-वेधी पीड़ाएँ दी जाती हैं—उनके शरीर पर लोहे की शलाखें गरम करके लगाई जाती हैं! चीन में छोटी-छोटी बालिकाएँ भी मोल ली जाती हैं, वे घर की नौकरानियाँ बना कर रक्खी जाती हैं। वे घर-मालिकों की सम्पत्ति हैं, उन पर, उनके शरीर तथा सतीत्व के भावों पर मालिक का पूर्ण अधिकार है। वह उनसे जिस तरह जी चाहे, बर्ताव कर सकता है।

अरेबिया, अबिसीनिया तथा लिबिया में भी कई प्रकार की दासता पाई जाती है। वहाँ भी ऐसे ही क्रूरता-पूर्ण उदाहरण मिलते हैं। हम लोग जो सभ्य देशों के शहरों में रहते हैं, जिन्हें काफ़ी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है, यह कभी कल्पना भी नहीं कर सकते कि इन लोगों को कितने दुःख उठाने पड़ते हैं। भारतवासियों में बहुतों को याद होगा, कि आसाम तथा भारतीय महासागर के फ़िजी इत्यादि द्वीपों में जाकर चाय के खेतों का काम करने वाले भारतवासियों को वहाँ के मालिक किस तरह से रखते थे और उनसे कैसा व्यवहार किया करते थे। अभी भी भारत की कई रियासतों में राज्य की प्रजा के साथ कभी-कभी ऐसा बर्ताव किया जाता है मानों वे राज्य के अधिकारियों की व्यक्तिगत सम्पत्ति हों! बेगार का रोग तो अभी भी कई भागों में फैला हुआ है और ख़ासकर जिन भागों में ज़मींदारी प्रथा प्रचलित है, किसानों के कई शारीरिक तथा साम्पत्तिक अधिकार ज़मींदारों ने छीन लिए हैं; पर ये सब असली दासता के उदाहरण नहीं हैं!

दास-प्रथा का समर्थन करने वाले लोग बहुधा यह कहते हैं कि "यह तो एक बड़ी पुरातन संस्था है। इसे कोई मिटा नहीं सकता, फिर इससे तो दास तथा स्वामी—दोनों का लाभ है। सभ्य देश के निवासी असभ्य काली जातियों को, जो कि सुस्त हैं और कला-रहित हैं, अच्छे-अच्छे हुनर सिखाते हैं और उनकी आदतें सुधारते हैं। स्वामियों को भी इससे फ़ायदा है। उनका काम सस्ते में हो जाता है।" पर दासता इतनी निर्दोष चीज़ नहीं है। दासता की संस्था हज़ारों निरपराध ग़रीब मूक मनुष्यों के ख़ून से रँगी हुई है, वह संस्था असहाय, निर्बल, दुखियों की आहों से गूँज रही है। दासता की भयङ्कर चक्की में कई नन्हें निर्दोष बालकों के सुकुमार शरीर पिस चुके हैं और करोड़ों निर्बलों की आत्माओं का नाश हो चुका है!!

फिर, वह केवल दासों की ही नहीं, वरन् स्वामियों की आत्माओं का भी नाश करने वाली है। बिना संयम के बर्ताव करने के कारण स्वामियों का आत्म-संयम जाता रहता है। सदा चिकनी-चुपड़ी बातें तथा अपनी प्रशंसा सुनने से उनके हृदय में व्यर्थ आत्माभिमान उत्पन्न हो जाता है। वे किसी तरह का विरोध तो सहन ही नहीं कर सकते। हिंसा, क्रोध, असंयम—ये उनके लिए सामान्य भाव हो जाते हैं!

स्वामी तथा दास दोनों की आध्यात्मिक उन्नति की दृष्टि से दासता बहुत ख़राब है। दासता का बन्धन दूर करने से संसार कितना अधिक सुखी, कितना अधिक उन्नतिशील हो सकेगा, इसकी कल्पना नहीं हो सकती। लीग ऑफ़ नेशन्स में मसोलिनी ने एक क़िस्सा सुनाया था, वह यहाँ पाठकों के सामने रखने योग्य है। अबिसीनिया के १५० दास विक्रय के लिए समुद्र-तट की ओर ले जाए जा रहे थे। नीचे बालुमय मरुस्थल अग्नि-सा धधक रहा था। ऊपर से ग्रीष्म का तेज सूर्य तप रहा था। पर दासों के न तो पैर में कुछ था न सिर पर। सबकी गरदनें एक ज़ञ्जीर में बँधी हुई थीं। पीछे से स्वामियों के प्रतिनिधि लाठी, कोड़े तथा बन्दूकों की मूठों से उनके सिर तथा पीठ पर क्रूरता से प्रहार कर रहे थे। इसी बीच में दूसरी ओर से डाकुओं ने धावा किया, दासों के सौदागर तथा डाकुओं में मुठभेड़ हुई। वे दासों को लूट कर ले जाने की कोशिश करने लगे और सौदागर बचाने की! दोनों ओर से रस्सियाँ व ज़ञ्जीरें खींची जाने लगीं, गरदनें दबीं और ३० निरपराध दासों के प्राण चले गए! कितना क्रूरतापूर्ण दृश्य था। असहाय दासों की कैसी करुणाजनक फाँसी थी!

ऐसे दृश्यों को देख कर कोई ऐसा विचारशील मनुष्य न होगा, जो दास-प्रथा से घृणा न करेगा। अब आवश्यकता इस बात की है कि सभ्य मनुष्यों में दासता के विषय में ठीक-ठीक समाचार दिए जावें। उन्हें यह बताया जावे, कि दासता की प्रथा अब भी संसार में मौजूद है। अब भी लाखों मनुष्य उसकी बेड़ियों में फँसे हुए अपनी शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक शक्ति को खो रहे हैं। इसके विनाश के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्यों के विचार इन दीन-दुखियों की कथा सुना कर इतने बदल दिए जावें, कि वे दासता को एक पाप समझें, एक आध्यात्मिक शारीरिक तथा मानसिक हत्या समझें। आशा है कि इन कार्यों द्वारा मनुष्य-जाति के वे प्राणी, जो लाखों की संख्या में हमारे क्रूर तथा पाशविक विचारों के शिकार हो रहे हैं; सुख, समता तथा स्वतन्त्रता के उन्नतिशील साम्राज्य में क़दम रख सकेंगे।

यूरोप में ऐसे आन्दोलन की विशेषकर आवश्यकता है। अपनी नवीन संस्कृति तथा वैज्ञानिक उन्नति के मद में चूर होकर यूरोप यह समझने लगा है, कि संसार की अन्य जातियाँ उसकी समता के पात्र नहीं, उनसे भ्रातृ-भाव नहीं रक्खा जा सकता! इसीलिए यूरोप आज केवल संसार की राजनैतिक तथा आर्थिक उन्नति ही नहीं, वरन् आध्यात्मिक तथा मानसिक उन्नति के मार्ग में भी रोड़ा बन रहा है! यूरोप के पूँजीपति ही अपने उपनिवेशों में दासों का व्यापार करते हैं और अपने खेतों में दासों से काम लेते हैं। संसार की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि यह दासता-विरोधक आन्दोलन सब से पहले यूरोप में शुरू किया जावे।*

---

* लेडी (सर जॉन) साइमन लिखित 'स्लेवरी' नामक पुस्तक के आधार पर।

—लेखक

* * *

केसर की क्यारी

ऐ दर्द तू ही उठके ज़रा दे तसल्लियाँ, कुछ तो क़रार आए दिले-बेक़रार को !

ऐ दिल वह आ रहे हैं, यह है वक़्ते-इमतेहाँ,
घबरा के खो न बैठना सबरो-क़रार को !

—"शौक़" इटावी

बर्क़ें-तपाँ का देख के अन्दाज़े इज़्तराब,
क्या-क्या हँसी न आई दिले-बेक़रार को !
ऐ दर्द तूही उठके ज़रा दे तसल्लियाँ,
कुछ तो क़रार आए दिले-बेक़रार को !

—"राज़" लखनवी

समझा रहे हो हज़रते नासेह मुझे, मगर,
समझाऊँ किस तरह से, दिले-बेक़रार को !
आमाज गाह तीरे नज़र का बनाइए,
रखिए नज़र में क़ैद, दिले-बेक़रार को !

—"हमदम" अकबराबादी

दस्ते-शिफ़ा न सीने पे रक्खा, जो आप भी,
क्यों कर क़रार आए दिले-बेक़रार को !

—"रज़ी" नगरामी

समझा के आजिज़ आ गए, कह-सुन के थक गए,
आता नहीं क़रार, दिले-बेक़रार को !

—"आज़म" करवी

इस एक दिल में आज है, सौ दिल का इज़्तिराब,
कहते हैं हम न देखो दिले-बेक़रार को !
ऐ शमआ बेकसी ने तेरी आज और भी—
तड़पा दिया है मेरे दिले बेक़रार को !
ख़ुद चाराजू हैं थामे जिगर इज़्तिराब में,
अल्लाह दे क़रार दिले बेक़रार को !

—"अज़हर" साहब

आग़ाज़े शामे हिज्र है, गुल है चराग़े-होश,
पहलू में ढूँढ़ता हूँ, दिले-बेक़रार को !
यारब ज़मीं की ख़ैर, तहे आसमाँ नहीं,
वह फेंकते हैं, मेरे दिले-बेक़रार को !

—"एज़ाज़" इलाहाबादी

करती नहीं निगाह तेरे दिल का फ़ैसला,
तड़पा के छोड़ जाती है, इस बेक़रार को !

—"बाँके" देहरादूनी

वादे पे तेरे दिल को न आए जो ऐतबार,
मैं लेके क्या करूँ तेरे क़ौलो क़रार को !

—"शौक़" इलाहाबादी

जब इश्क़ ख़ुद बढ़ाए मेरे इन्तिशार को,
हो किस तरह क़रार दिले-बेक़रार को !

—"आग़ा" इलाहाबादी

आई नफ़स के साथ सदा आह-आह की,
आवाज़ दी जो मैंने दिले-बेक़रार को !

—"रयाज़" नारवी

गुज़रे हैं इतने रोज़ मेरे इज़्तरार को,
होता सुकूँ मुज़िर है, दिले-बेक़रार को !

—"ज़ामिन" इलाहाबादी

जाँ काहे ग़म तो है पे करूँ क्या कि चारागर,
है कुछ मज़ा इसी में दिले-बेक़रार को !

—"सैयद" राजापुरी

क्या नज्र दूँगा नावके मिज़गाने यार को,
मुद्दत से रो रहा हूँ दिले-बेक़रार को !
तुमको तो भी क़रार न आता किसी तरह,
तुम देखते जो मेरे दिले-बेक़रार को !
आज़ारो ग़म यही है, तो पहलू को चीर कर—
मैं फेंक दूँगा अपने दिले-बेक़रार को !

—"ग़नी" इलाहाबादी

किन-किन अदाओं से मेरे पहलू में बैठ कर,
पहरों वह देखते हैं दिले-बेक़रार को !

—"अतहर" साहब

बिछुड़ा हुआ मिला है, यह मुद्दत का एक दोस्त,
आओ गले लगाएँ दिले-बेक़रार को !

—"असग़र" बनारसी

आज उनकी बज़मे-नाज़ में जाने का क़स्द है,
क़ाबू में ला रहा हूँ, दिले-बेक़रार को !

—"महशर" इलाहाबादी

आँखों से जब लगा लिया तस्वीरे-यार को,
कुछ आगया क़रार दिले-बेक़रार को !
महफ़िल में देखते हैं, जिसे वह अदा के साथ,
कहता है ख़ैरबाद; वह सबरो-क़रार को !
पहलू से वह गया, तो गए यह भी साथ-साथ,
अल्लाह क्या हुआ मेरे सबरो-क़रार को !
समझा किसी ने बर्क़ किसी ने चराग़े-नूर,
देखा जो बेक़रार दिले-बेक़रार को !

—"ऐश" साहब

ऐ रोने वालो रोते हो, क्यों हमसे दर्दे-दिल,
हम भी तो खो के बैठे हैं सबरो-क़रार को !

—(नवाब) "ईसा" साहब

कल के ख़िलाफ़ बात नई कुछ ज़रूर है,
है आज क्यों क़रार दिले-बेक़रार को !
जब काम आशिक़ों की बदौलत निकल गया,
सरकार भूल जाते हैं क़ौलो-क़रार को !

—(स्वर्गीय) "बेख़ुद" इलाहाबादी

क्या बेक़रार समझेगा अनजामेकार को,
जो सब्र करके बैठा हो सब्रो-क़रार को !

—"महमूद" साहब

क्यों टालते हैं वादए फ़रदा पे रोज़ आप,
तड़पाते क्यों हैं, मेरे दिले-बेक़रार को
उम्मीद मौत की, न तेरे आने का यक़ीं,
समझाऊँ किस तरह मैं दिले-बेक़रार को !
मिलता नहीं जिगर की तरह उसका भी पता,
पहलू में ढूँढ़ता हूँ, दिले-बेक़रार को !

—"मज़हर" साहब

शोला यही, शरर भी यही, बर्क़ भी यही,
समझे हैं क्या वह मेरे दिले-बेक़रार को !
गिरती हैं बिजलियाँ, जो फ़लक से ज़मीन पर,
वह ढूँढ़ती हैं मेरे दिले-बेक़रार को !
इज़हारे जौक़ो-शौक़ पर आई जो आफ़तें,
मैंने किया सलाम दिले-बेक़रार को !

—"नूह" नारवी

ए नशतरे-निगाह उभरना न तू कभी,
जब तक न हो सकून दिले-बेक़रार को !
हसरत भरी निगाह से मैं देखता रहा,
चुटकी को उनकी, अपने दिले-बेक़रार को !

—"शादाँ" दरियाबादी

इसको तो एक नज़र में उड़ा ले गया कोई,
अपना समझ रहे थे दिले-बेक़रार को !

—"अहसन" नगरामी

मुलके ख़ुदा पे क़ब्ज़ा वह क्या कर सकेंगे, जो—
क़ाबू में ला सके न, दिले-बेक़रार को !

—"कैफ़ी" कशमीरी

बिजली का इज़्तराब तो देखा है आपने,
अब देखिए हमारे दिले-बेक़रार को !
यारों ने किसके हुस्न का छेड़ा था तज़किरा,
एक चोट सी लगी, जो दिले-बेक़रार को !

—"तरीक़" जौनपुरी

जलवा दिखा के शोख़िए बर्क़ें जमाल का,
तड़पा रहे हैं और दिले-बेक़रार को !

—(स्वर्गीय) "शहीर" मछलीशहरी

कह कर किसी ने इतना, कि मैं भी हूँ बेक़रार,
तड़पा दिया कुछ और दिले-बेक़रार को !

—"मनसब" जौनपुरी

है सोज़ साज़े-इश्क़ से बाज़ारे-शमआ गर्म,
तसकीन दे रहा हूँ, दिले-बेक़रार को !

—"साहिर" देहलवी

ऐसा न हो कि तुम भी हो बेचैन देख कर,
देखो ज़रा सँभल के दिले-बेक़रार को !
पहलू में जब से यह है, मुसीबत में जान है,
दे दूँ किसे उठा के दिले-बेक़रार को !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

सत्याग्रह-संग्राम की कुछ नई एवं महत्वपूर्ण आहुतियाँ

बेलारी कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री श्री० राघवेन्द्र राव, जिन्हें एक वर्ष की सज़ा हुई है।

बम्बई के १७वें "वार कौन्सिल" के मन्त्री, जो ४थी दिसम्बर को जेल भेजे गए हैं।
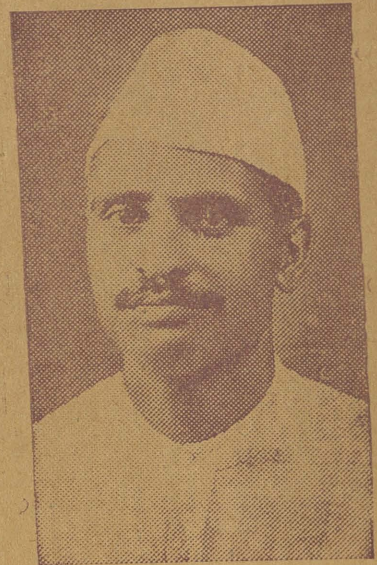
अहमदनगर ज़िले के 'डिक्टेटर' जिन्हें सत्याग्रह-आन्दोलन में ६½ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

करनाटक वार-कौन्सिल के 'डिक्टेटर' श्री० हनुमन्तराव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०, जिन्हें दूसरी बार ६ मास की सज़ा दी गई है।

हिन्दुस्तानी सेवा-दल के मन्त्री श्री० बी० एन० मालगी, जिन्हें ४ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।
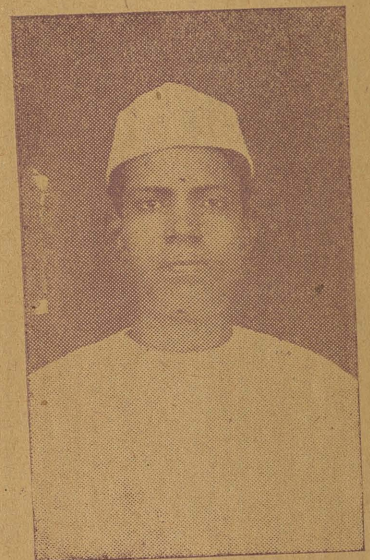
तैमिल-नैडू कॉङ्ग्रेस कमिटी के भूतपूर्व उप-प्रधान, जिन्हें एक वर्ष की सज़ा दी गई है।

अहमदनगर के सुप्रसिद्ध वकील श्री० जी० बी० पटवर्द्धन, जिन्हें करबन्दी आन्दोलन को प्रोत्साहित करने के अपराध में ३ मास की सख़्त क़ैद की सज़ा दी गई है।
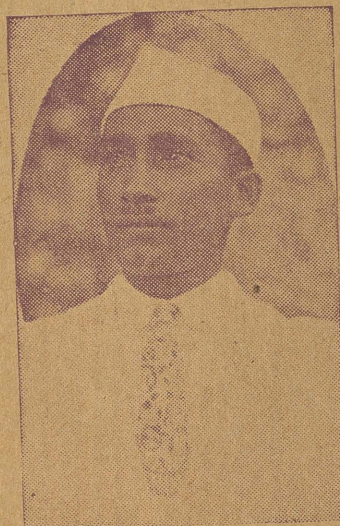
बम्बई के सर्व-प्रथम क्रिश्चियन श्री० जॉर्ज लुईस, जिन्हें सत्याग्रह के सम्बन्ध में हाल ही में कारावास-दण्ड दिया गया है।
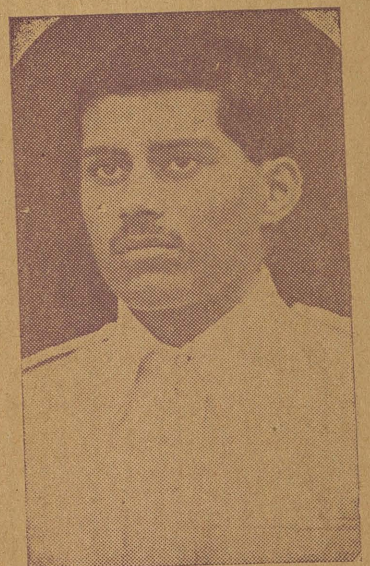
नासिक के सुप्रसिद्ध कवि 'पद्मविहारी' (श्री० रघुनाथ गनेश जोशी) और कॉङ्ग्रेस के कार्यकर्ता, जिन्हें ६ मास का कठिन कारावास-दण्ड दिया गया है।

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम के कुछ वीर सैनिक

अथानी (बेलगाँव) की विदुषी श्रीमती अम्बावा बाई, जिन्हें सत्याग्रह-आन्दोलन में भाग लेने के कारण २ मास की सज़ा दी गई है। करनाटक की जेल जाने वाली आप प्रथम महिला हैं।

मेरठ के महिला-सत्याग्रह-दल की प्रधाना—श्रीमती प्रकाशवती देवी, जिन्हें ९½ महीने की सज़ा दी गई है।
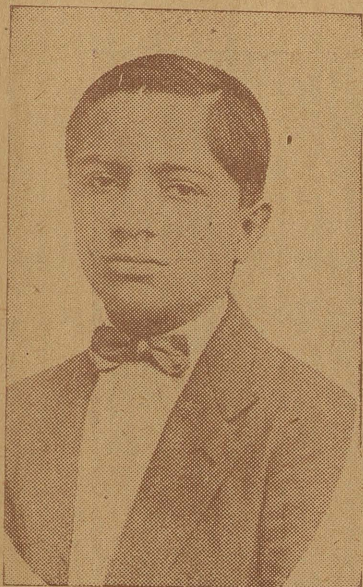
वाटकोपर कॉङ्ग्रेस कमिटी के २० वर्षीय 'डिक्टेटर' श्री० नारायनदास मेघजी, आप सुप्रसिद्ध सेठ मेघजी वल्लभदास के पुत्र-रत्न हैं।

विलेपार्ले (बम्बई) के ८वें 'डिक्टेटर' श्री० के० के० सम्पत, एम० ए० (ऑक्सन)

बम्बई के 'सी' वार्ड के 'डिक्टेटर' श्री० शिवलाल दीपचन्द, आप पटना के निवासी हैं।

धारवाड़ के सुप्रसिद्ध पत्र "करनाटक वृत्ति" के वयोवृद्ध सम्पादक श्री० कृष्णाराव मुदावोरकर, जिनके राष्ट्रीय लेखों का ओज करनाटक प्रान्त में प्रसिद्ध है और जिन्हें दो बार चेतावनी दी जा चुकी है।

सत्याग्रह-संग्राम में भारतीय महिलाओं का भाग

भवनगर में पिकेटिङ्ग करने वाली गुजराती महिलाओं का ग्रूप
फ़र्श पर बैठी हुईं —(बाईं ओर से) अपने बच्चों सहित सौभाग्यवती बालूबेन और जयाबेन
कुर्सी पर बैठी हुईं —(बाईं ओर से) सौभाग्यवती गावरीबेन, मनीबेन, अखिलेश्वरीबेन, शारदाबेन और सोनीबेन ।
पीछे खड़ी हुईं —(बाईं ओर से) सौभाग्यवती जयाकुँवरबेन, ललिताबेन और बच्चूबेन ।

कानपुर के राष्ट्रीय आन्दोलन को सफल करने वाली महिलाएं
जिन्होंने चर्खा-सङ्घ, तकली-जुलूस और कताई के क्लास जगह-जगह खोल कर सराहनीय देश-प्रेम का परिचय दिया है । ये सारी महिलाएँ विगत जून मास से राष्ट्रीय कार्यों में बड़े उत्साह से भाग ले रही हैं और इन महिलाओं को अपने शुभ-प्रयत्नों में अब तक बड़ी सफलता मिली है ।

कुछ प्रमुख व्यक्तियों एवं घटनाओं की चित्रावली

बम्बई स्टेशन पर 'ऑटोमेटन' नामक एक ऐसा यन्त्र रक्खा गया है जिससे सर्दी में गरम चाय आदि और गर्मी में ठण्डा पानी और शर्बत निकलता है। यह चित्र उसी 'ऑटोमेटन' का है, जिससे लेमोनेड निकाला जा रहा है।

शान्ति-निकेतन विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉक्टर रवीन्द्रनाथ टैगोर

मेञ्चेस्टर के सुप्रसिद्ध व्यवसाय-विशेषज्ञ मि० चार्ल्स एग्टविसिल, जो बम्बई में मिलों की स्थिति का अध्ययन करने आए हैं।

इस बार बम्बई की पाश्चात्य एवं एङ्गलो-इण्डियन महिलाओं ने सन्धि-दिवस (Armistice Day) बड़ी धूम-धाम से मनाया था। वे सड़कों पर 'पॉपीज़' बेच रही हैं।

बङ्गलोर के वीर-युवक श्री० एम० पी० पॉल्सन, जिन्होंने २४ घण्टों में रात-दिन (बिना रुके हुए) साइकिल चला कर २७६ मील का सफ़र कर डाला। वे पहिली दिसम्बर को शाम के ४ बजे साइकिल पर बैठे थे और दूसरी दिसम्बर को ठीक चार बजे उतरे थे।

इटली की २३ वर्षीय राजकुमारी ग्लोवन्ना—जिनका हाल ही में किङ्ग बॉरिस से शुभ-विवाह हुआ है।

स्त्रियों का ओज

दुलहिन

[लेखक—???]

"इस पत्र के सम्बन्ध में आप लोगों की क्या सम्मति है ?"

"महाराणा, इसमें सम्मति की क्या बात है, शरणागत की रक्षा करना क्षत्रियों का धर्म है, फिर हिन्दुपति मेवाड़ का अधीश्वर तो इस विषय पर विचार करता हुआ, अच्छा भी नहीं प्रतीत होता।"

"चूड़ावत सरदार, आप अभी युवा हैं, आपका रक्त गर्म है, आप उतावले न बनिए। सब बातों पर भली-भाँति विचार कर लेना बुरा नहीं, यह साधारण प्रश्न नहीं। औरङ्गज़ेब राजपूतों के रक्त का प्यासा है, एक स्त्री के लिए मेवाड़ की हज़ारों स्त्रियों को विधवा बनाना, मुझे सहन न होगा।"

"महाराणा, एक स्त्री की नहीं, स्त्री की यहाँ चर्चा नहीं, एक शरणागत बाला के लिए—एक ऐसी राज-कन्या के लिए, जिसके पिता ने विवश होकर बादशाह की आज्ञा के आगे सिर झुका लिया है, मेवाड़ की हज़ारों स्त्रियाँ नहीं—मेवाड़ की प्रत्येक स्त्री विधवा बनाई जा सकती है।"

"यह तुम्हारा मत हुआ, चूड़ावत सरदार! परन्तु सालूँबरा सरदार आपका क्या मत है, वह भी तो सुनूँ।"

"अन्नदाता, मैं बूढ़ा हुआ। मुझसे क्या पूछते हैं। मैं बूढ़ा हुआ, बाल पक गए—तो क्या मैं कायर हो गया। दर्बार को क्या मैं कायरपने की सम्मति दूँगा, अन्नदाता—प्राण रहते शरणागत राजकुमारी को सीसोदिया वंश का कोई वीर निराश नहीं करेगा।"

"परन्तु ठाकराँ, रक्त की नदियाँ बह जावेंगी।"

"रक्त तो घर में ही है, कहीं से माँगना तो नहीं।"

"पर वह व्यर्थ बहाने को नहीं ?"

"व्यर्थ बहाने को ? अन्नदाता, व्यर्थ बहाने को ?? फिर रक्त बहाने को और कौन से अवसर होते हैं, मेवाड़-पति ने तो कभी पराया राज्य हड़पने को रक्त नहीं बहाया—उसने तो शरणागत की रक्षा और धर्म के लिए ही प्राण खोए हैं।"

"और आप क्या कहते हैं झालावाड़ सावन्त ?"

"महाराणा, मैं कहना-सुनना क्या जानूँ। तलवार चलाना सीखा है—वही जानता हूँ। स्वामी का जहाँ पसीना गिरेगा—वहीं सेवक का रक्त बहेगा! जब तक शरीर में प्राण है, कलाई में दम है, तलवार में पानी है, यह बूढ़ा यम की भाँति अडिग अड़ा रहेगा।"

"देखता हूँ, आप लोगों ने निश्चय कर लिया है।"

"स्वामी, विचारने के योग्य तो कोई विषय ही नहीं है।"

"बड़े आश्चर्य का विषय है, आप कहते हैं, विचारने के योग्य कोई विषय ही नहीं है, दिल्लीश्वर से घर बैठे बैर तो लेते हैं, जीवन की अन्तिम बूँद तक का प्रसङ्ग आने का प्रश्न है, आप कहते हैं कि विचारने योग्य कोई विषय ही नहीं है।"

"स्वामी, क्या यह पहला ही अवसर है, ऐसा कभी हुआ नहीं है ?"

"बहुत बार। पर बारम्बार एक ही बात की पुनरावृत्ति करना क्या कुछ उत्तम बात है ?"

"अन्नदाता, मृत्यु जगत की ऐसी प्यारी वस्तु तो नहीं, परन्तु कर्त्तव्य सर्व-प्रथम है; फिर उसके पालन करने में सौ बार भी मरना पड़े तो थोड़ा है।"

"तब क्या आप निर्णय कर चुके हैं ?"

"महाराणा को स्वयं ही निर्णय करना चाहिए।"

"सुनो यदि, हमने युद्ध-प्रस्थान कर दिया और मार्ग ही में बादशाह की सेना से मुठभेड़ भी हो गई, युद्ध हुआ और हमारी हार हुई; तब फिर क्या होगा? राजकुमारी की फिर रक्षा कौन करेगा ?"

"इसका उपाय मैंने सोच रक्खा है ?"

"वह क्या है चूड़ावत सरदार ?"

"आप चुने हुए ५ हज़ार योद्धा लेकर सीधे रूपनगर जाकर कुमारी को ब्याह लावें। मैं समस्त सेना को साथ लेकर तिराहे पर बादशाह की राह रोक कर बैठूँगा। और प्रतिज्ञा करता हूँ, कि जब तक आप विवाह कर सकुशल मेवाड़ की सीमा में न घुस जावेंगे, मैं बादशाह को आगे न बढ़ने दूँगा।"

"चूड़ावत, सरदार आपका साहस धन्य है ?"

"महाराणा, अन्य कोई उपाय है ही नहीं।"

"परन्तु ठाकराँ, यह कार्य बहुत भयानक है, आपका लौटना अति दुर्लभ है।"

"स्वामिन, मुझे लौटने की ऐसी उतावली नहीं।"

"सरदार, इसी मास में आपका विवाह हुआ है।"

"राजपूत का विवाह तो सदा तलवार के साथ होता है, स्वामी !"

"चूड़ावत सरदार, आपका साहस बहुत बड़ा है, आपके पिता ने मृत्यु के समय आपका हाथ मेरे हाथ में दिया था, मैं आपकी इस अल्पावस्था ही में आपको ऐसे भयानक पथ पर नहीं जाने दूँगा।"

"महाराणा! मेरे पूज्य पिता की प्रतिष्ठा से मुझे वञ्चित न कीजिए।"

"सरदार, सोचिए"

"स्वामी, यह सोचने का विषय ही नहीं।"

"तब सबकी यही सम्मति है ?"

"सबकी"

"तब मैं विवश अनुमति देता हूँ, तैयारी करो। मेरे साथ केवल हरावल के ५ हज़ार सैनिक रहेंगे। और आप ४० हज़ार सेना लेकर बादशाह की राह रोकें।"

"जो आज्ञा प्रभु की।"

२

"स्वामिन् क्या आज ही ?"

"आज ही नहीं प्रिये, अभी"

"आपने मुझे आज फूलों की चोटी गूँथने की आज्ञा दी थी ?"

"फूलों की चोटी गूँथो प्यारी !"

"किन्तु आप तो चले, प्रिय !"

"प्यारी, मैं अचल हूँ। जैसा कि क्षत्रिय-कुमार होते हैं।"

"स्वामी, यदि आज भर मैं सेवा कर सकती ?"

"प्रिये, क्षत्रियों का धर्म अति कठोर है।"

"पर क्षत्राणियों से अधिक नहीं ?"

"प्यारी, तलवार की कठिन मार में छाती अड़ाना असाधारण है।"

"पर विश्व-ध्वंसिनी ज्वाला के आलिङ्गन से अधिक कठोर नहीं।"

"प्रिये, अब ईश्वर ही जानता है, कि हम कब मिलेंगे।"

"जाओ स्वामी, हम अब मिलेंगे—यहाँ अथवा वहाँ, इसकी चिन्ता क्या है !"

"प्यारी, आशा है तुम अवश्य ही अपना कर्त्तव्य-पालन करोगी !"

"प्यारे, दासी से आप निश्चिन्त रहिए"

"मेरे प्राण तुम्हीं में रहेंगे"

"नहीं स्वामी, वे धर्म में रहने उचित हैं"

"तुम मेरी जीवन की ज्योति हो"

"स्वामी, ये क्षत्रियों के वाक्य नहीं"

"तुम मेरे प्राणों की प्राण हो"

"प्यारे, इतना कायर मोह नहीं"

"प्यारी, मैं मानसरोवर का धनी प्यासा ही चला"

"हे स्वामी, क्षत्रिय-पुत्री वीर पति के नाम पर धन्य होती है।"

"परन्तु वीरता प्रेम के सम्पुट से ही सजीव होती है"

"प्रेम तो वही है, जहाँ त्याग है, वही त्याग वीरता है।"

"मैं स्वीकार करता हूँ, कि मैं मोहान्ध हूँ"

"नहीं प्यारे, यह लाञ्छन की बात है, आप जाइए"

"अच्छा प्यारी बिदा। परन्तु देखना, तुम अपना कर्तव्य सदा पालना"

"स्वामी दासी के प्रति कभी चिन्ता न करें"

"अच्छा प्यारी, एक घूँट जल"

"लीजिए प्यारे"

"ओह कितना शीतल है, कितना मधुर है"

"जाइए स्वामी, कर्तव्य में विलम्ब हो रहा है"

"जाता हूँ प्यारी, एक बार अच्छी तरह देख लेने दो, यह रूप, यह यौवन, यह प्रेम, यह माधुर्य—आह—यह आशा-सुख और जीवन की तरङ्गों से लबालब स्निग्ध समुद्र ! प्यारी !!"

"प्यारे !"

"यदि मैं न आ सकूँ ?"

"तो मैं आऊँगी स्वामिन ?"

"इतनी दूर ? इतना शीघ्र, इस आयु में !!"

"स्वामी, क्या दासी पर विश्वास नहीं"

"प्राणों से भी अधिक, परमेश्वर से भी अधिक"

"तब जाइए स्वामी, इन बातों से क्षत्रित्व का तेज नष्ट होता है"

"अच्छा-अच्छा मेरे जीवन की कनकलता मैं चला।"

"स्वामिन् मैं प्रणाम करती हूँ।"

"प्रिये चिन्तित न होना"

"स्वामिन, दासी के ध्यान में कर्तव्य से विमुख न होना"

"प्यारी, कर्त्तव्य मेरे रोम-रोम में है।"

"विदा"

"जाओ प्यारे !"

३

"रघुवीरसिंह !"

"हुक्म सरकार !"

"क्या खिड़की में बहू रानी खड़ी हैं, देखना मेरे नेत्रों में धुन्ध छा रहा है।"

"हाँ स्वामी, बहूरानी हैं"

"जाओ उनसे कहो, कि वे अपने कर्त्तव्य का ध्यान रक्खें"

"जो आज्ञा ?"

४

"घणी खमा अन्नदाता, बहूरानी को जुहार।"

"क्या कहते हो, ठाकराँ ?"

"माता, स्वामी ने फ़र्माया है कि आप कर्तव्य का ध्यान रक्खें"

"क्या उन्हें इस विषय की चिन्ता है ?"

"माता, वे बारम्बार साँस लेते और खिड़की की तरफ़ देखते हैं।

मधुबन

हिन्दी-संसार 'कुमार' महोदय के नाम से पूर्ण परिचित है। इस छोटी-सी पुस्तक में कुमार जी की वे कविताएँ संग्रहीत हैं, जिन पर हिन्दी-संसार को गर्व हो सकता है। आप यदि कल्पना का वास्तविक सौन्दर्य अनुभव करना चाहते हैं—यदि भावों की सुकुमार छवि और रचना का सङ्गीतमय प्रवाह देखना चाहते हैं, तो इस मधुबन में अवश्य विहार कीजिए। कुमार जी ने अभी तक सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं, पर इस मधुबन में उनकी केवल उन २६ चुनी हुई रचनाओं ही का समावेश है, जो उनकी उत्कृष्ट काव्य-कला का परिचय देती हैं।

हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हिन्दी-कविता में यह पुस्तक एक आदर की वस्तु है। एक बार हाथ में लेते ही आप विना समाप्त किए नहीं छोड़ेंगे। पुस्तक बहुत ही सुन्दर दो रङ्गों में छप रही है। मूल्य केवल १)

स्मृति-कुञ्ज

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुःखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकास और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुख, साधन-उत्कर्ष एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मू० ३)

हिन्दू-त्योहारों का इतिहास

हिन्दू-त्योहार इतने महत्वपूर्ण होते हुए भी, लोग इनकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते। स्त्रियाँ, जो विशेष रूप से इन्हें मनाती हैं, वे भी अपने त्योहारों की वास्तविक उत्पत्ति से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। कारण यही है कि हिन्दी-संसार में अब तक एक भी ऐसी पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। वर्तमान पुस्तक के सुयोग्य लेखक ने छः मास कठिन परिश्रम करने के बाद यह पुस्तक तैयार कर पाई है। शास्त्र-पुराणों की खोज कर त्योहारों की उत्पत्ति लिखी गई है। इन त्योहारों के सम्बन्ध में जो कथाएँ प्रसिद्ध हैं, वे वास्तव में बड़ी रोचक हैं। ऐसी कथाओं का भी सविस्तार वर्णन किया गया है। प्रत्येक त्योहार के सम्बन्ध में जितना अधिक खोज से लिखा जा सकता था, लिखा गया है। पुस्तक के दो संस्करण हाथों हाथ बिक चुके हैं। सजिल्द एवं तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

बाल-रोग-विज्ञानम्

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल-मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है। और वे शिशु सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार कर सकती हैं। मूल्य लागत मात्र २।) रु०

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, अनाथालय में अनाथ बालकों पर कैसे अत्याचार किए जाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। मू० ॥।); स्था० ग्रा० से ॥-)

अपराधी

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और ब्रियो का "डैमेज़्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है !!

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का बलपूर्वक पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये सब ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी सी प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य २।) स्थायीग्राहकों से १।॥=)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

"तब तुम ठहरो। मैं तुम्हें जो कुछ दूँ, ले जाकर उन्हें दो"

"जो आज्ञा माता"

"यह पत्र है"

"बहुत अच्छा"

"इसे सरदार को देना"

"जो आज्ञा"

"और सुनो"

"जी"

"तुम्हारे फेंटे में वह क्या है ?"

"कटार है माता !"

"उसकी धार कैसी है ?"

"ख़ूब चोखी, माता !"

"देखूँ ?"

"यह लीजिए"

"हाँ ख़ूब तेज़ है, ठाकराँ ?"

"जी माता"

"तुममें साहस है ?"

"माता, मैं भी सिसोदिया हूँ !"

"तुम्हारी कलाई में बल है ?"

"माता, अभी बल बहुत है।"

"एक काम करोगे !"

"आज्ञा कीजिए।"

"इस कटार से मेरा सिर उतार लीजिए।"

"यह क्या बात माता ?"

"उसे सरदार के पास ले जाना"

"किस लिए"

"कहना, अब आप निश्चिन्त होकर युद्ध करें। स्त्री की चिन्ता मन में रख कर मनुष्य के कायर हो जाने का भय है।"

"नहीं माता, यह मुझसे न होगा।"

"तब ठहरो"

"जो आज्ञा"

"मैं तुम्हें स्वयं अपना सिर काट कर देती हूँ। इसे जाकर उन्हें दे देना।"

"माता, इस कठिन सेवा से बूढ़े सेवक को मुक्त करो"

"छीः ठाकराँ, क्षत्रिय होकर डरते हो !"

"नहीं, माता......"

"खड़े रहो, लो........."

"आह............"

५

"लीजिए सेनापति"

"यह क्या है ?"

"बहूरानी का पत्र"

"और यह वस्त्र में लिपटा हुआ क्या है ?"

"बहूरानी की भेंट"

"आह !!!............"

"बहूरानी ने अपने हाथ से यह फल उतार कर भेजा है।"

"इस पत्र में क्या है ? देखूँ—

"प्यारे,

तुमने कहा था, क्षत्रिय का व्रत बड़ा कठोर है, और मैंने कहा था, क्षत्राणी का उससे कहीं अधिक कठोर है। इसका प्रमाण अब प्रत्यक्ष देखो ! प्यारे, युद्ध-प्रसङ्ग पर स्त्री का ध्यान रखने से कायरता उत्पन्न होती है। अब आप उससे उन्मुक्त हुए। तुम्हें याद होगा, कि पिता के यहाँ प्रथम पहुँच कर मैंने आपके आराम की सब व्यवस्था की थी, अब बड़े पिता के पास पहुँच कर मैं व्यवस्था कर रक्खूँगी। दुखी न होना, प्यारे ! हम शीघ्र मिलेंगे।"

६

"चूड़ावत सरदार !"

"महाराणा।"

"प्रस्थान में क्या देर है ?"

"स्वामी, आपकी आज्ञा मात्र की"

"यह क्या ? कण्ठ में क्या है ?"

"बहूरानी का मुण्ड। मेरे हृदय का हार !"

"सेनापति, यह क्या किया ?"

"बहूरानी ने स्वयं किया"

"स्वयं किया ? क्यों ?"

"कि मैं उसे स्मरण करके कायर न बन जाऊँ।"

"आह ! प्यारे युवक सरदार, ठहरो—"

"सैनिको !"

"जय महाराणा की"

"हाड़ी रानी का मुजरा करो, कहो—"

"जय हाड़ी रानी की !"

"जय हाड़ी रानी की।"

"फिर कहो—

"जय हाड़ी रानी की !"

"चूड़ावत सरदार !"

दमन और अहिंसा

['मुक्त']

कहाँ चले ओ वीर सिपाही ?
माँ का है आह्वान।
क्या गाते हो ? देशभक्ति के—
पागलपन का गान !!
क्या है लक्ष्य ? एक मर-मिटने—
का ही है अरमान।
क्या पण ? आजादी के बदले—
जीवन का बलिदान !!
यह संग्राम ? अहिंसा के सम्मुख—
नङ्गा पशुबल होगा।
दमन अकेला होगा ! सारा—
एक ओर भूतल होगा !!

* * *

"महाराणा"

"आपको वंश-परम्परा के लिए दाहिनी ओर की प्रथम गद्दी और राजकीय छत्र-चँवर प्रदान किया गया।"

"अन्नदाता की जय हो"

"आपके वंश को सदैव ही हरावल का अधिकार दिया गया।"

"महाराणा की जय हो"

"आपको अस्सी गाँवों का पट्टा दिया गया"

"जय दिनुमति की"

"और सुनो, आपके वंश की प्रत्येक स्त्री महाराणी के समान प्रतिष्ठा पावेगी"

"जय हो स्वामी की"

"अच्छा अब प्रस्थान करो श्रीएकलिङ्ग आपके सहायक हों।"

७

"बादशाह सलामत फ़रमाते हैं, कि हम उदयपुर पर नहीं चढ़ रहे हैं, कहीं अन्यत्र जा रहे हैं। आप हमारा रास्ता छोड़ दीजिए।"

"बादशाह सलामत ज़बर्दस्ती रास्ता क्यों नहीं बना लेते ?"

"आप क्यों रार मोल लेते हैं, बादशाह का गुस्सा साधारण नहीं।"

"फिर बादशाह के मुसाहिब गाल क्यों बजाते हैं ?"

"क्या आप रास्ता नहीं छोड़ेंगे ?"

"जीते जी नहीं।"

"आप क्या हमें लड़ने पर मजबूर करेंगे ?"

"अगर आप डर कर भाग न जाएँ।"

"आपका मक़सद क्या है ?"

"यही कि बादशाह को रोक दिया जाय।"

"और यह किसलिए ?"

"किसी भी लिए ?"

"आप लोगों की मौत आई है ?"

"जी हाँ, आप ठीक समझ गए।"

"तब मरो, सिपाहियो !"

"ठहरो, पहले ज़रा बानगी लेते जाइए।"

"वीरो ? मारो।"

"अल्लाह अकबर"

"जय एकलिङ्ग"

"काफ़िरों को मारो"

"वीरो, इतने यवन इकट्ठे मरने को कहीं न मिलेंगे।"

"मारो"

"मारो"

"मारो"

"लीजिए बादशाह सलामत, एक नई ख़बर है।"

"बदनसीब हाथी पर चढ़ा आता है।"

"सँभलो, यह शाही मुकुट धूल में गिरा"

"बस-बस बख़्श दे, शादी की सायत तो यहीं टल गई।"

"तब प्रतिज्ञा करो—वरना यह भाला छाती के पार जाता है"

"वादा करता हूँ—वादा करता हूँ"

"प्रतिज्ञा करो"

"वादा करता हूँ"

"प्रतिज्ञा करो कि १० वर्ष तक मेवाड़ पर चढ़ाई न करूँगा !"

"न करूँगा, वादा करता हूँ।"

"ख़ुदा की क़सम खाओ"

"क़सम ख़ुदा पाक की"

"क़ुरान की क़सम खाओ।"

"क़सम क़ुरान-मजीद की"

"आज ही दिल्ली लौट जाओ।"

"आज ही लौट जाऊँगा, तुम अपना घोड़ा हाथी पर से पीछे हटा लो।"

"जाओ छोड़ दिया।"

८

"महाराणा की जय हो"

"वीर चूणावत सरदार क्या पीछे आ रहे हैं, उनकी अगवानी को हम ख़ुद चलेंगे।"

"अन्नदाता—सेनापति काम आए"

"तब वह बाँका वीर चल बसा ?"

"महाराणा—बादशाह से प्रतिज्ञा करा कर, कि १० वर्ष तक मेवाड़ पर चढ़ाई न करेंगे।"

"आह, नरसिंह, रूपनगर की यह रानी बड़ी मँहगी पड़ी"

"ठाकराँ"

"अन्नदाता"

"वीरवर चूणावत की स्मृति में मेवाड़ में आज के दिन सदा मेला लगेगा"

"जो आज्ञा अन्नदाता"

* * *

कुछ नवीन और उत्तमोत्तम पुस्तकें

दुबे जी की चिट्ठियाँ

शिक्षा और विनोद का यह अपूर्व भण्डार है। इसमें सामाजिक कुरीतियों तथा अनेक महत्वपूर्ण विषयों का विवेचन बहुत ही सुन्दरतापूर्वक किया गया है। हिन्दी-संसार में अपने ढङ्ग की यह अनोखी पुस्तक है। भाषा अत्यन्त सरल है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। मूल्य केवल ३); ले० 'दुबे जी'।

मणिमाला

अत्यन्त मनोरञ्जक, शिक्षा और विनोद से भरी हुई कहानियों का अनोखा संग्रह। प्रत्येक कहानी में सामाजिक कुरीतियों का भण्डाफोड़ बहुत अच्छे ढङ्ग से किया गया है। उन कुरीतियों से उत्पन्न होने वाले भयङ्कर अनर्थों की भी भरपूर चर्चा की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य केवल ३); ले० 'कौशिक' जी।

महात्मा ईसा

ईसाई-धर्म के प्रवर्तक, महान सांसारिक आपत्तियों तथा यातनाओं से आजीवन खेलने वाले, इस महान पुरुष का जीवन-चरित्र सांसारिक मनुष्य के लिए अमृत के तुल्य है। इसके केवल एक बार के पढ़ने से आपकी आत्मा में महान परिवर्त्तन हो जायगा—एक दिव्य ज्योति उत्पन्न हो जायगी। सचित्र और सजिल्द मूल्य २॥)

विवाह और प्रेम

समाज की जिन अनुचित और अश्लील धारणाओं के कारण स्त्री और पुरुष का दाम्पत्य जीवन दुखी और असन्तोषपूर्ण बन जाता है एवं स्मरणातीत काल से फैली हुई जिन मानसिक भावनाओं के द्वारा उनका सुख-स्वाच्छन्द्यपूर्ण जीवन घृणा, अवहेलना, द्वेष और कलह का रूप धारण कर लेता है, इस पुस्तक में स्वतन्त्रता-पूर्वक उसकी आलोचना की गई है और बताया गया है कि किस प्रकार समाज का जीवन सुख-सन्तोष का जीवन बन सकता है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥)

मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झञ्झटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। मूर्खराज का जीवन आदि से अन्त तक विचित्रता से भरा हुआ है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ३)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्म-बल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥); स्थायी ग्राहकों से १=) ले० 'वर्मा' एम० ए०।

मनोरञ्जक कहानियाँ

इस पुस्तक में १७ छोटी-छोटी, शिक्षाप्रद, रोचक और सुन्दर हवाई कहानियाँ संग्रह की गई हैं। कहानियों को पढ़ते ही आप आनन्द से मस्त हो जायँगे और सारी चिन्ताएँ दूर हो जायँगी। बालक-बालिकाओं के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। केवल एक कहानी उनको सुनाइए—ख़ुशी के मारे उछलने लगेंगे, और पुस्तक को पढ़े बिना कदापि न मानेंगे। मनोरञ्जन के साथ ही प्रत्येक कहानियों में शिक्षा की भी सामग्री है। शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी कॉपियाँ और शेष हैं। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल १॥); स्थायी ग्राहकों से १=)

मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ

इस पुस्तक में पूर्वीय और पाश्चात्य, हिन्दू और मुसलमान, स्त्री-पुरुष—सभी के आदर्श छोटी-छोटी कहानियों द्वारा उपस्थित किए गए हैं। केवल एक बार के पढ़ने से बालक-बालिकाओं के हृदय में दयालुता, परोपकारिता, मित्रता, सचाई और पवित्रता आदि सद्गुणों के अङ्कुर उत्पन्न हो जायँगे और भविष्य में उनका जीवन उसी प्रकार महान और उज्ज्वल बनेगा। मनोरञ्जन और शिक्षा की यह अपूर्व सामग्री है। भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २); स्थायी ग्राहकों से १॥); ले० ज़हूरबख़्श।

शान्ता

इस पुस्तक में देश-भक्ति और समाज-सेवा का सजीव वर्णन किया गया है। देश की वर्त्तमान अवस्था में हमें कौन-कौन सामाजिक सुधार करने की परमावश्यकता है; और वे सुधार किस प्रकार किए जा सकते हैं, आदि आवश्यक एवं उपयोगी विषयों का लेखक ने बड़ी योग्यता के साथ दिग्दर्शन कराया है। शान्ता और गङ्गाराम का शुद्ध और आदर्श-प्रेम देख कर हृदय गद्गद हो जाता है। साथ ही साथ हिन्दू-समाज के अत्याचार और षड्यन्त्र से शान्ता का उद्धार देख कर उसके साहस, धैर्य और स्वार्थ-त्याग की प्रशंसा करते ही बनती है। मूल्य केवल लागत-मात्र ॥); स्थायी ग्राहकों के लिए ॥-)

लालबुझक्कड़

जगत्प्रसिद्ध नाटककार 'मोलियर' की सर्वोत्कृष्ट रचना का यह हिन्दी अनुवाद है। नाटक आदि से अन्त तक हास्यरस से भरा हुआ है। शिक्षा और विनोद की अपूर्व सामग्री है। मनोरञ्जन के साथ ही सामाजिक कुरीतियों का भी दिग्दर्शन कराया गया है। सचित्र और सजिल्द पुस्तक का मूल्य २); ले० जी० पी० श्रीवास्तव

अनाथ

इस पुस्तक में हिन्दुओं की नालायक़ी, मुसलमान गुण्डों की शरारतें और ईसाइयों के हथकण्डों की दिलचस्प कहानी का वर्णन किया गया है। किस प्रकार मुसलमान और ईसाई अनाथ बालकों को लुका-छिपा तथा बहका कर अपने मिशन की संख्या बढ़ाते हैं, इसका पूरा दृश्य इस पुस्तक में दिखाई देगा। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ॥-)

आयरलैण्ड के ग़दर की कहानियाँ

छोटे-बड़े सभी के मुँह से आज यह सुनने में आ रहा है कि भारतवर्ष आयरलैण्ड बनता जा रहा है। उस आयरलैण्ड ने अङ्गरेज़ों की ग़ुलामी से किस तरह छुटकारा पाया और वहाँ के शिनफ़ीन दल ने किस कौशल से लाखों अङ्गरेज़ी सेना के दाँत खट्टे किए, इसका रोमाञ्चकारी वर्णन इस पुस्तक में पढ़िए। इसमें आपको इतिहास और उपन्यास दोनों का मज़ा मिलेगा। मूल्य केवल दस आने। ले० सत्यभक्त।

मेहरुन्निसा

साहस और सौन्दर्य की साक्षात प्रतिमा मेहरुन्निसा का जीवन-चरित्र स्त्रियों के लिए अनोखी वस्तु है। उसकी विपत्ति-कथा अत्यन्त रोमाञ्चकारी तथा हृदय-द्रावक है। परिस्थितियों के प्रवाह में पड़ कर किस प्रकार वह अपने पति-वियोग को भूल जाती है और जहाँगीर की बेगम बन कर नूरजहाँ के नाम से हिन्दुस्तान को आलोकित करती है—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा। मूल्य केवल ॥); स्थायी ग्राहकों से ।=)

गुदगुदी

हास्य तथा मनोरञ्जन भी स्वास्थ्य के लिए एक अनोखी औषधि है। किन्तु इसका उपाय क्या है? उपाय केवल यही कि इस पुस्तक की एक प्रति मँगा लीजिए और काम की थकावट तथा भोजन के बाद पढ़िए। इसका केवल एक ही चुटकुला एक घण्टे तक आपको हँसाएगा। ले० जी० पी० श्रीवास्तव; मूल्य ॥)

एशियाई महिलाओं की महासभा

[श्रीमती लक्ष्मीदेवी, बी० ए०]

पाठकों ने एक एशियाई महिला महासभा होने की चर्चा समाचार-पत्रों में सुनी होगी। हर्ष का विषय है कि यह सभा भारतवर्ष में ही हो रही है, और मुख्यतया भारतीय महिलाओं की आयोजना से ही हो रही है। अभी थोड़े ही दिन हुए, कि पूर्वीय महिला-सभा डमास्कस में हुई थी, किन्तु उसमें मुख्यतया मुस्लिम देशों की प्रतिनिधि-स्त्रियाँ ही उपस्थित थीं। एक एशियाई महिला-महासभा का विचार पहले-पहल भारतवर्ष से ही उठा है। और हम इस बात का गर्व कर सकती हैं कि हमारे देश की स्त्रियों के हृदय एशिया के अन्य देशों की स्त्रियों की अपेक्षा अधिक विशाल हैं। अभी थोड़े ही दिनों की बात है, हमारी स्त्रियाँ घर की चहारदिवारी के अन्दर की वस्तु थीं, पर थोड़ी ही जागृति से उनकी बाहुएँ इतनी विशाल हो गई हैं, कि वे तमाम एशिया को समेटना चाहती हैं। यदि हमारे देश की स्त्रियों की यही प्रगति जारी रही तो, एक दिन हमें आशा है कि भारत की महिलाएँ एक भूमण्डल स्त्री-सङ्घ की स्थापना करेंगी।

साथ ही साथ हम उन देशों की स्त्रियों को भी धन्यवाद देती हैं, जिन्होंने इस महासभा को सफल बनाने के लिए अपने-अपने यहाँ से प्रतिनिधियों को भेजने का वचन दिया है। ऐसी बड़ी सभा बिना तमाम एशियाई देशों की महिला संस्थाओं के सहयोग और सहानुभूति के कभी सफल नहीं हो सकती। और हमें ख़ुशी है कि भारतीय महिलाओं के इस निमन्त्रण का समाचार जिन-जिन देशों में गया है, वहाँ-वहाँ से सहायता की आशा दिखाई गई है। पहली अभारतीय महिला, जो इस महासभा का कार्य करने के लिए आई हैं, वह ऑकलैण्ड की कुमारी आइसवेल रॉबर्टसन हैं। वे महासभा का समय आने तक भारतीय महिला-सभा की ओर से कार्य करेंगी। हमें आशा है कि अन्य एशियाई देशों से भी महिलाएँ आ-आकर इस कार्य में हाथ बटावेंगी। आप हमारे विशेष धन्यवाद की पात्री हैं।

संसार भर की स्त्रियों का स्थान पुरुषों के मुक़ाबले नीचा ही रक्खा गया है। यूरोप की स्त्रियों ने अपने अधिकारों को बहुत कुछ पा लिया है। लेकिन एशिया की स्त्रियाँ अभी बहुत पीछे हैं। इसका प्रमाण यही है, कि अभी डमास्कस वाली कॉन्फ्रेन्स में इसी प्रस्ताव पर बहुत समय तक बहस छिड़ी रही, कि स्त्रियों को पर्दे के बाहर रहना चाहिए कि नहीं और यद्यपि अन्त में यह प्रस्ताव पास हुआ, कि उन्हें पर्दे के बाहर रहना चाहिए, परन्तु जिन शब्दों में यह पास हुआ है, उससे हमें भय है कि कदाचित वह सभा के काग़ज़ों पर ही न रह जाय!

किन्तु हमें इस कारण मुस्लिम प्रदेशों की स्त्रियों को कमज़ोर न समझ लेना चाहिए, कदाचित उनकी यह कमज़ोरी अकेले खड़े होने के कारण थी। किन्तु जब भारतवर्ष में मुस्लिम, बौद्ध, हिन्दू, ईसाई, पारसी स्त्रियों का महासम्मेलन होगा, उस समय वे अपनी पूर्ण शक्ति का अनुभव करेंगी और अपनी भावी दशा को इस सीमा तक सुधार लेंगी, कि उनके अधिकार बढ़ ही न जायँगे, वरन् उनका स्थान एशियाई देशों की सामाजिक तथा राजनैतिक परिस्थिति में भी उन्नतिशील परिवर्तन करेगा।

जिन महान उद्देशों से यह सभा निमन्त्रित की गई है, उन पर ध्यान देने से पता चलता है कि हमारी स्त्रियाँ इस सभा के पीछे एक बड़ा गम्भीर आशय रखती हैं। वे हैं:—

(१) एशिया की स्त्रियों में इस आधार पर एकता स्थापित करना, कि वे सब एक ही पूर्वीय सभ्यता की अनुवर्तिनी हैं।

(२) पूर्वीय सभ्यता के गुणों की खोज निकालना और उनकी रक्षा करना, जिससे उनके द्वारा राष्ट्र और संसार को लाभ पहुँचाया जा सके।

(३) पूर्वीय सभ्यता में प्रविष्ट हुए अवगुणों की खोज करना और उन्हें दूर करने का उपाय सोचना। (इसमें अस्वस्थता, अशिक्षा, ग़रीबी, कम मज़दूरी, बाल-मृत्यु, और वैवाहिक नियम आदि सम्मिलित हैं।)

(४) इस बात का निर्णय करना, कि पश्चिमीय सभ्यता की कौन-कौन सी बातें एशिया के हित की हैं।

(५) प्रत्येक देश के स्त्री-दशा सम्बन्धी अनुभवों और प्राप्त-परिणामों से एक दूसरे को सूचित करके उसकी सहायता करना; और

(६) संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील होना।

इनमें से चार प्रस्ताव पूर्वीय सभ्यता से सम्बन्ध रखते हैं। पश्चिमी सभ्यता पूर्वीय सभ्यता से नई है। उसकी इस नवीनता ने संसार भर को अपनी ओर आकर्षित कर लिया है। पर उसकी नवीनता का आकर्षण हट जाने से वह अब तत्वों की ओर से कुछ खोखली जान पड़ती है। उसने अपने अनुयायियों को जिन परिणामों पर पहुँचाया है वे भय-प्रद हैं। हमारी महिलाओं ने पूर्वीय सभ्यता के मन्दिर को, जो अप्रयुक्त होने से कुछ बेमरम्मत हो गया था, बनाने का कार्य अपने हाथों में लिया है, पर साथ ही साथ पश्चिमी सभ्यता की ओर से असहिष्णु होने की उनमें लेश-मात्र गन्ध नहीं। उसमें जो गुण हैं, वे उसे लेने को तैयार हैं।

अन्तिम प्रस्ताव संसार की शान्ति से सम्बन्ध रखता है। संसार में उस समय तक शान्ति नहीं हो सकती, जब तक कि स्त्रियाँ उसके लिए प्रयत्नशील न हों। आजकल वे यूरोप और एशिया दोनों स्थानों में भविष्य-युद्ध बन्द करने की चेष्टा में हैं। थोड़ा ही समय हुआ है, वियेना की अन्तर्राष्ट्रीय महिला-परिषद की सभानेत्री ने यह कहा था, कि माताएँ, जो जीवन देने वाली हैं, वे कृत्रिम उपायों से उसे नष्ट करने की आज्ञा नहीं दे सकतीं। उन्होंने कहा कि हम माताएँ तमाम देशों को निःशस्त्र होने के लिए ज़ोर डालती हैं। पर हमें भय है, सम्भवतः यूरोप की स्त्रियों की यह आवाज़ यूरोप के पुरुषों के कानों तक न पहुँचे। कारण यह है, कि वहाँ स्त्रियाँ पुरुषों से स्वतन्त्र हैं, तो पुरुष भी स्त्रियों से स्वतन्त्र हैं। उनके लिए आवश्यक नहीं कि वे स्त्रियों की अनुमति के अनुसार चलें। किन्तु जब पूर्वीय स्त्रियाँ संसार में भविष्य-युद्ध बन्द कराने को प्रयत्नशील होती हैं, तब हम आशापूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि पूर्वीय सभ्यता में स्त्री, पुरुष से नीचे स्थान पर रह कर भी, गृह-स्वामिनी ही रहती है। और अपने पुरुषों के हाथों के पीछे सदा उनका हाथ रहता है। फिर जब वे पुरुषों के बराबर अधिकार पा लेंगी, तो पुरुषों की नीति में जो भीषण परिवर्तन करेंगी, उसका अनुमान नहीं किया जा सकता।

हम हृदय से चाहती हैं कि यह महासभा सफल हो और इससे संसार में एक शान्त, पवित्र और उज्ज्वल भविष्य की नींव पड़े। क्या ऐसा होगा?

* * *

भविष्य

साम्प्रदायिकता का ज़ोर

"प्रत्येक साम्राज्यवादी शासन का आधार फूट डाल कर हुकूमत करना होता है! ब्रिटिश शासन भी भारत में सदैव इसी रीति से काम लेता रहा है।"

—लाला लाजपतराय

आजकल लन्दन में भारतीय शासन-विधान तैयार करने के लिए गोलमेज़ परिषद की बैठक हो रही है। जैसा हम दो सप्ताह पूर्व ही कह चुके थे, यह परिषद साम्प्रदायिकता के दलदल में फँस गई है। एक तो यों भी कुछ होने को नहीं था, अब तो बिलकुल स्पष्ट दिखाई देता है, कि परिषद की बैठकें समस्याओं को सुलझाने के स्थान में इन्हें और भी भीषण रूप दे देंगी। वहाँ पर जो लोग विचार करने के लिए एकत्रित हुए हैं, उनकी मनोवृत्ति ही इतनी दूषित है, कि वे किसी भी समस्या पर राष्ट्रीय हित की दृष्टि से विचार नहीं करते। वैयक्तिक और सामुदायिक स्वार्थ को देश भर के हित के ऊपर स्थान दिया जा रहा है! प्रतिनिधिगण हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल करने में आजकल लगे हुए हैं। परन्तु, जिस ढङ्ग से वे काम ले रहे हैं; जिस प्रकार से वे सोचते और समझते हैं, वह सब उनके लिए और भारतीय राष्ट्र के लिए अपमानजनक है। अभी समाचार मिला है, कि हिन्दू-मुस्लिम समझौते की आशा बहुत कम है। प्रतिनिधि ब्रिटिश सरकार को इस मामले में पञ्च मानने को तैयार मालूम होते हैं! इस प्रकार के तू-तू, मैं-मैं को देख कर मिस्टर एफ़० डब्ल्यू० विलसन ने 'इण्डियन डेलीमेल' में लिखा है कि "मैं भारतीय नहीं हूँ, तो भी मैं भारतीय राष्ट्र के सम्मान के लिए इससे बढ़ कर अपमानजनक बात कोई नहीं समझता, कि भारतीय जाति-गत मामलों का निपटारा करने में असमर्थ हों।"

इस समय देश दूसरी दिशा में बढ़ रहा है। साम्प्रदायिकता के बन्धन को तोड़ कर, सम्पूर्ण देश के कल्याण को लक्ष्य मान कर इस समय हम लोग आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे हैं! देश को आज़ाद बनाना, हिन्दू और मुसलमान सभी के सिर पर से ग़ुलामी का बोझ हटाना हमारा उद्देश्य है। हम आज़ादी के लिए लड़ रहे हैं। हम हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, पारसी, सबों के स्वत्वों के लिए लड़ रहे हैं। ऐसे समय में साम्प्रदायिक प्रश्न छेड़ना, उस पर तू-तू, मैं-मैं करना, और अन्त में समस्या को पहले से भी अधिक जटिल बना कर छोड़ना, देश के उन आदमियों के साथ घोर अन्याय करना है, जो देश के लिए आज सर्वस्व होम रहे हैं, जो भारत को आज़ाद देखने के लिए त्याग और तपस्या का अनुपम आदर्श उपस्थित कर रहे हैं! स्वातन्त्र्य-संग्राम के वीर सैनिक—हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी और ईसाई—अपने रक्त से आज़ादी की बेल सींच रहे हैं, वे हिन्दू और मुसलमान के स्वत्वों पर बहसें नहीं करते, वे जानते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों एक ही चक्की के पाट में पीसे जाते हैं, वे समझते हैं कि दोनों के दुख और सुख वास्तव में एक ही बात में सन्निहित हैं, और आज़ादी दोनों के लिए समान रूप से हितकर होगी। वे यह अच्छी तरह समझते हैं, कि न हिन्दू मुसलमानों को पीस सकते हैं, न मुसलमान हिन्दुओं को। दोनों को एक ही देश में रहना है, एक ही जल-वायु में पलना है। आजकल जिस प्रकार का लड़ाई-झगड़ा, दङ्गा-फ़साद मालूम होता है, यह बहुत कुछ सरकार की भेद-नीति की कृपा का फल है। ये बातें आज़ादी के लिए प्राणों पर खेलने वाले वीर अच्छी तरह समझते हैं।

* * *

मुसलमानों का कहना है, कि उनके बहुत से ऐसे हक़ूक़ हैं, जिनका निर्णय स्वराज्य-प्राप्ति के किसी भी प्रयास के पूर्व हो जाना चाहिए। बातें ऐसे ढङ्ग से कही जाती हैं, कि मालूम होता है कि यदि स्वराज्य हो गया, तो सचमुच हिन्दू मुसलमानों को खा जायँगे। यदि इतिहास के पन्ने पलटे जायँ, और मुसलमानों और हिन्दुओं की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का ऐतिहासिक विवेचन किया जाय, तो यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जायगी कि हिन्दू और मुसलमानों में मन-मुटाव उत्पन्न करने में अङ्गरेज़-सरकार का बहुत कुछ हाथ रहा है! साम्प्रदायिकता का तूफ़ान सरकार की दूषित नीति का ही परिणाम है। हिन्दू और मुसलमान देशी राज्यों में भी रहते हैं। वहाँ पर हिन्दू राजा के होते हुए भी मुसलमान पीस नहीं डाले जाते। वहाँ पर विशेषाधिकारों की चर्चा भी नहीं होती। परन्तु अङ्गरेज़-राजनीतिज्ञों ने स्वार्थवश ब्रिटिश-भारत के मुसलमानों में हिन्दू बहुमत का भय उत्पन्न कर दिया है। यह भय भ्रमात्मक बातों पर आधारित है, यह कल्पनात्मक ही अधिक है, इसमें सत्य का अंश कुछ भी नहीं है।

* * *

जो कुछ भी हो, आज हिन्दू और मुसलमानों के दिल फिरे हुए हैं। मुसलमानों ने पूर्णरूप से वर्तमान आन्दोलन में भाग भी नहीं लिया। वास्तव में यदि मुसलमान और हिन्दू सभी इस सत्य का अनुभव कर लें, कि दोनों का भाग्य वास्तव में एक ही है, दोनों का कल्याण एक ही बातों से होगा, तो इस प्रकार का मन-मुटाव दूर हो जायगा। मन्दिर और मसजिद के प्रश्न तो सहनशीलता से सरलतापूर्वक तय हो सकते हैं। यदि हम एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करने लग जायँ, यदि हमें यह समझ में आ जाय, कि किसी की कोमल धार्मिक चित्तवृत्ति को ठेस नहीं पहुँचाना चाहिए, तो जो प्रश्न आज अत्यन्त अधिक उलझन के मालूम होते हैं, वे सब तय हो जायँ। रह गए शासन-व्यवस्था सम्बन्धी प्रश्न। यदि हम साम्प्रदायिकता के सङ्कीर्ण दायरे से निकल कर सारे देश के हित और अहित का ख़याल रख कर, ऐसे प्रश्नों पर विचार करें, तो वे भी सरलता से हल हो जायँ। हमें केवल अपने अन्दर थोड़ी सी सहनशीलता लाने की आवश्यकता है। हमें केवल अपनी दूषित साम्प्रदायिक मनोवृत्ति को बदल देने की ज़रूरत है।

* * *

ग़रीबी की मार से, अत्याचार और अनाचार के राज से मुसलमान और हिन्दू सभी दुखी हैं। सभी करों के बोझ से, लगान के भार से, दबे जाते हैं! यह कहीं नहीं होता कि गङ्गादीन को पुलिस की निरङ्कुशता से, कर के भार से कम कष्ट होता है, और अब्दुलरहीम को अधिक! दोनों जाति के ग़रीब आदमी, दोनों सम्प्रदाय के अधिकांश व्यक्ति एक ही प्रकार से पीसे जाते हैं! इसलिए ठीक तो यही है, कि हिन्दू और मुसलमान दोनों कन्धे से कन्धा भिड़ा कर आगे बढ़ें, दोनों सम्प्रदाय के व्यक्ति इस महान देश की आज़ादी के लिए क़ुर्बान हो जायँ। देश ने स्वतन्त्र होने का निश्चय कर लिया है। हमें अपनी सङ्कीर्णता से इस पवित्र निश्चय में, भारत के पुनरुत्थान में बाधक नहीं होना चाहिए।

—'प्रताप' (हिन्दी)

* * *

मौलाना का पतन!

इस तमाशे का प्रथम पटाक्षेप होने तक प्रायः सभी भारतीय मेम्बर अपनी-अपनी डफली पर अपना-अपना राग अलाप चुके हैं और यह कहने में कुछ भी असत्य नहीं है, कि अन्य कितनी ही बातों में मतभेद होने पर भी औपनिवेशिक स्वराज्य के विषय में सबका सुर एक है। एक मौ० मुहम्मदअली ही ऐसे हैं, जिन्होंने अपने को प्रजातन्त्रवादी बताते हुए कहा है कि "औपनिवेशिक स्वराज्य की प्राप्ति में मेरा विश्वास नहीं है—मैं तो पूर्ण-स्वतन्त्रता का सिद्धान्त स्वीकार कर चुका हूँ।" साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि "मैं अपने हाथों में स्वतन्त्रता का सार लेकर ही जाऊँगा, नहीं तो एक ग़ुलाम देश में लौट कर न जाऊँगा।" किन्तु यह सब तो फिसड्डी-मौलाना की कोरी बकबक है; क्योंकि प्रजातन्त्रवादी होने का दम भरते हुए भी उन्होंने प्रजातन्त्र के मूल सिद्धान्त के विरुद्ध बादशाह जॉर्ज की चापलूसी, उनके प्रधान-मन्त्री मि० मेकडॉनल्ड की सराहना और वायसराय लॉर्ड इरविन की प्रशंसा के पुल बाँधने में चारणों (भाटों) को भी मात कर दिया है। इतना ही नहीं, इस मोटी बुद्धि वाले मोटे मौलाना ने तो यहाँ तक बक डाला है कि "आज यदि किसी आदमी ने ब्रिटिश साम्राज्य को बचाया है, तो वह वही लम्बा और दुबला ईसाई है।" इस तरह इन हज़रत ने एक तरह से लॉर्ड इरविन की सरकार की उस दानवी दमन-नीति का भी समर्थन कर डाला है, कि जो इस लम्बे और दुबले ईसाई ने साम्राज्य की रक्षा के लिए भारत में प्रचलित कर रक्खी है! किसी आदमी का इससे अधिक पतन और क्या हो सकता है?

—'विश्वमित्र' (हिन्दी)

* * *

एक निरर्थक प्रयत्न

'फ़्री प्रेस' के लन्दन के केबिल से यह मालूम हुआ है, कि गोलमेज़ परिषद के कुछ प्रतिनिधि भारत-मन्त्री को इस आशय का पत्र देने वाले हैं, कि जब तक भारत की वर्तमान दमन-नीति में परिवर्तन न होगा, तब तक परिषद बिलकुल निरर्थक होगी। यह स्पष्ट है कि अधिकारियों के भारत का सच्चा हाल रोकने का, भरसक प्रयत्न करने पर भी लन्दन में उनकी करतूतों का भण्डा फूट गया है। इस बात की भी सम्भावना नहीं है, कि गोलमेज़ के भारतीय प्रतिनिधियों के पास यहाँ की परिस्थिति के

[वर्ष १, खण्ड १, संख्या १२

उत्तमोत्तम पुस्तकों का भारी स्टॉक

स्त्रियोपयोगी

अदृष्ट (ह० द० कं०) ३)
अपराधी (चाँ० का०) २॥)
अश्रुपात (गं०पु०मा०) १।), १॥।)
अरक्षणीया (इं० प्रे०) १)
अनन्तमती (ग्रं० मं०) ॥।=)
अनाथ-पत्नी (चाँ० का०) २)
अनाथ बालक (इं० प्रे०) १)
" " (ह० दा० कं०) १॥)
अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ० का०) ३)
अबलाओं पर अत्याचार (चाँ० का०) २॥)
अबलोन्नति पद्य-माला (गृ० ल०) ≡)॥
अभागिनी (ह० दा० कं०) १)
अभिमान (गृ० का०) १)
अमृत और विष (दो भाग) (चाँ० का०) ४)
अवतार (सर० प्रे०) ॥)
अहल्याबाई (इं० प्रे०) १।)
" " (हिं० पु० भं०) ।)
अञ्जना देवी (न० दा० स० एं० सं०) ॥=)
अञ्जना सुन्दरी (प्रा०क०मा०) १)
अञ्जना-हनुमान (स० आ०) १॥), १॥।)
आदर्श चाची (ब०प्रे०) १।), १॥।)
आदर्श दम्पति (ग्रं० मं०) १), १।)
आदर्श पत्नी (स० आ०) ॥।)
आदर्श बहू (ग्रं० मं०) ॥।), १।)
आदर्श बहू (उ० ब० आ०) ॥)
आदर्श भगिनी (ख०वि०प्रे०) ।)
आदर्श महिला (इं० प्रे०) २॥)
आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (रा० द० अ०) १।)
आदर्श रमणी (निहाल-चन्द) ॥=)
आदर्श ललना (उ० ब० आ०) ॥)
आरोग्य-साधन (महात्मा गाँधी) ।=)
आर्य-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २), २॥)
आशा पर पानी (चाँ० का०) ॥)
इन्दिरा (ख० वि० प्रे०) ॥।)
" (ह० दा० कं०) १।)
ईश्वरीय न्याय (गं० पु० मा०) ॥)
उत्तम सन्तति (जटा० वै०) १॥)
उपयोगी चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
उमासुन्दरी (चाँ० का०) ॥।)
उमा (उ० ब० आ०) १।)

कन्या-कौमुदी (तीन भाग) ॥।=)
कन्या-दिनचर्या (गृ० ल०) ।)
कन्या-पाकशास्त्र (ओं० प्रे०) ।)
कन्या-पाठशाला २॥।)
कन्या-बोधिनी (पाँच भाग) (रा० न० ल०) १॥)
कन्या-शिक्षा (स० सा० प्र० मं०) ।)
कन्याओं की पोथी १)
कन्या-शिक्षावली (चारों भाग) (हिं० मं०) ॥=)
कपाल-कुण्डला (ह० दा० कं०) १।)
कमला (ओं० प्रे०) १॥)
कमला-कुसुम (सचित्र) (गं० पु० मा०) १)
कमला के पत्र (चाँ० का०) ३)
" " (अङ्गरेज़ी) ३)
कृष्णाकुमारी ॥)
करुणा देवी (बेल० प्रे०) ॥=)
कलङ्किनी (स० सा० प्र० मं०) ॥।=)
कल्याणमयी चिन्ता (क० म० जी०) ॥)
कुल-लक्ष्मी (हिं० मं०) १।)
कुल-कमला ॥)
कुन्ती देवी १॥)
कुल-ललना (गृ० ल०) ॥।=)
कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥।), २)
क्षमा (गृ० ल०) ॥।)
गर्भ-गर्भिणी ॥')
गल्प-समुच्चय (प्रेमचन्द) २॥)
ग्रह का फेर (चाँ० का०) ॥)
गायत्री-सावित्री (बेल० प्रे०) ।)
गार्हस्थ्य शास्त्र(त० भा० ग्रं०) १)
गीता (भाषा) १॥)
गुदगुदी (चाँ० का०) ॥)
गुणलक्ष्मी (उ० ब० आ०) ।=)
गुप्त सन्देश (गं० पु० मा०) ॥=)
गृहदेवी (म० प्र० का०) ।-)
गृह-धर्म(व० द०स० एं० सं०)॥।)
गृह-प्रबन्ध-शास्त्र (अभ्यु०) ॥)
गृह-वस्तु-चिकित्सा (चि० का०) ॥)
गृहलक्ष्मी (मा० प्रे०)) १)
" (उ० ब० आ०) १)
गृह-शिक्षा (रा० पू० प्रे०) ≡)
गृहस्थ-चरित्र (रा० प्रे०) ।)
गृहिणी (गृ० ल०) १)
गृहिणी-कर्त्तव्य (सु० ग्रं० प्र० मं०) २॥)
गृहिणी-गीताञ्जलि (रा० श्या०) ॥)
गृहिणी-गौरव (ग्रं० मा०) १॥), २)

गृहिणी-चिकित्सा (ल० ना० प्रे०) २॥)
गृहिणी-भूषण (हिं० हिं० का०) ॥)
गृहिणी-शिक्षा (क०म०जी०) १।)
गौने की रात (प्रा० का० मा०) ३)
गौरी-शङ्कर (चाँ० का०) ।=)
घरेलू चिकित्सा (चाँ० का०) १॥)
चिन्ता (सचित्र) (उ० ब० आ०) ॥।)
चिन्ता (ब० प्रे०) १॥)
चित्तौड़ की चढ़ाइयाँ (ब० प्रे०) ॥=)
चित्तौड़ की चिता(चाँ०का०) १॥)
चौक पूरने का पुस्तक (चित्र० प्रे०) १)
छोटी बहू (गृ० ल०) १।)
जनन-विज्ञान (पा० एं० कं०) ३), ३॥)
जननी-जीवन (चाँ० का०) १।)
जननी और शिशु (हिं० ग्रं० रा०) ॥=)
जपाकुसुम (ल० ना० प्रे०) २)
जया (ल० रा० सा०) ।-)
ज़च्चा (गं० पु० मा०) ॥।=)
जासूस की डाली (गं० पु० मा०) १।)
जीवन-निर्वाह (हिं० ग्रं० र०) १)
जेवनार (हिं० पु० ए०) ।-)
तरुण तपस्विनी (गृ० ल०) ।)
तारा (इं० प्रे०) १)
दक्षिण अफ़्रिका के मेरे अनुभव (चाँ० का०) २॥)
दमयन्ती (हरि० कं०) ≡)॥
" (इं० प्रे०) ।)
दमयन्ती-चरित्र (गृ० ल०) =)॥
दम्पति-कर्तव्य-शास्त्र (सा० कुं०) १।)
दम्पत्ति-मित्र (स० आ०) ३॥)
दम्पति-रहस्य (गो० हा०) १)
दम्पति-सुहृद (हिं० मं०) १।)
दाम्पत्य जीवन (चाँ० का०) २॥)
दाम्पत्य-विज्ञान (पा० एं० कं०) २)
दिव्य-देवियाँ (गृ० ल०) १॥।=)
दुःखिनी (गृ० ल०) ॥।-)
दुलहिन (हिं० पु० भं०) ।)
देवबाला (ख० वि० प्रे०) ॥)
देवलदेवी (गृ० ल०) ।-)
देवी चौधरानी (ह० दा०कं०) २)
देवी जोन (प्रका० पु०) ।=)
देवी पार्वती (गं० पु० मा०) १), १॥)
देवी द्रौपदी (पॉपूलर) ॥=)

देवी द्रौपदी (गं० पु० मा०) ॥)
देवी सती " ॥=)
द्रौपदी (ह० दा० कं०) २॥), ३।)
धर्मात्मा चाची और अभागा भतीजा (चि०भ० गु०) ।-)
ध्रुव और चिलया (चि० शा० प्रे०) ।-)
नवनिधि (प्रेमचन्द) ॥।)
नल-दमयन्ती (सचित्र) ब० प्रे०) १॥), १॥), २)
" " (पॉपूलर) ॥)
" " (गं० पु० मा०) ॥।)
नवीन शिल्पमाला (हेमन्त-कुमारी) ३)
नन्दन-निकुञ्ज (गं० पु० मा०) १), १॥)
नवीना (हरि० कं०) १॥।)
नारायणी शिक्षा (दो भाग) (चि० भ० गु०) ३)
नारी-उपदेश (गं० पु० मा०) ॥)
नारी-चरितमाला (न० कि० प्रे०) ॥=)
नारी-नवरत्न (म० भा० हिं० सा० स०) =)
नारी-महत्व ॥।)
नारी-नीति (हिं० ग्रं० प्र०) ॥=)
नारी-विज्ञान (पा० एं० कं०) २), २॥)
नारी-धर्म-विचार १॥)
निर्मला (चाँ० का०) २॥)
पतिव्रता (इं० प्रे०) १)
" (गं० पु० मा०) १।=), १॥।=)
पतिव्रता-धर्मप्रकाश १)
पतिव्रता अरुन्धी (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता गान्धारी(इं० प्रे०)॥=)
पतिव्रता मनसा (एस० आर० बेरी०) ॥)
पतिव्रता-माहात्म्य (वें० प्रे०) १)
पतिव्रता रुक्मिणी (एस० आर० बेरी) ॥=)
पतिव्रता स्त्रियों का जीवन-चरित्र १=)
पत्नी-प्रभाव (उ० ब० आ०) १)
परिणीता (इं० प्रे०) १)
पत्राञ्जलि (गं० पु० मा०) ॥)
पण्डित जी (इं० प्रे०) १॥)
पाक-कौमुदी (गृ० ल०) १)
पाक-प्रकाश (इं० प्रे०) ।=)
पाक-विद्या (रा० ना० ला०) =)
पाक-चन्द्रिका (चाँ० का०) ४)
पार्वती और यशोदा (इं० प्रे०) ॥=)

प्राचीन हिन्दू-माताएँ (ना० दा० स० एं० सं०) १)
प्राणघातक-माला (अभ्यु०) ॥=)
प्राणनाथ (चाँ० का०) २॥)
प्रेमकान्त(सु० ग्रं० प्र० मं०) १॥)
प्रेम-गङ्गा (गं० पु० मा०) १।), १॥।)
प्रेमतीर्थ (प्रेमचन्द) १॥)
प्रेम द्वादशी १।), १॥।)
प्रेमधारा (गु० ला० चं०) ॥।)
प्रेम-परीक्षा (गृ० ल०) १=)
प्रेम-पूर्णिमा (प्रेमचन्द) (हिं० पु० ए०) २)
प्रेम-प्रतिमा (भा० पु०) २)
प्रेम-प्रमोद (चाँ० का०) २॥)
प्रेमाश्रम (हिं० पु० ए०) ३॥)
प्रेम-प्रसून (गं० पु० मा०) १=), १॥=)
बच्चों की रक्षा (हिं०पु०ए०) ।-)
बड़ी बहू (रा० ना० ला०) ॥=)
बहता हुआ फूल (गं० पु० मा०) २॥), ३)
बड़ी दीदी (इं० प्रे०) १)
वरमाला (गं० पु० मा०) ॥।)
बाला पत्र-बोधिनी (इं० प्रे०) ॥)
बाला-बोधिनी (५ भाग) (रा० ना० ला०) १॥)
बाला-विनोद (इं० प्रे०) ।=)
बालिकाओं के खेल (वें० प्रे०) =)
विराजबहू (शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय) (सर० भं०) ॥≡)
वीर-बाला (चाँ० का०) ४)
ब्याही बहू (हिं० ग्रं० र०) ।)
भक्त स्त्रियाँ (रा० श्या०) ॥)
भक्त विदुर (उ० ब० आ०) ॥)
भगिनीद्वय (चि० शा० प्रे०) ।-)
भगिनी-भूषण(गं० पु० मा०) =)
भारत-सम्राट् (उ० ब० आ०) १॥)
भारत की देवियाँ (ल० प्रे०) ।-)
भारत के स्त्री-रत्न(स० सा० प्र० मं०) १=)
भारत-महिला-मण्डल (ल० प्रे०) १)
भारत-माता (रा० श्या०) ।)
भारत में बाइबिल (गं० पु० मा०) ३), ४)
भारत-रमणी-रत्न (ला० रा० सा०) ॥।=)
भारतवर्ष की माताएँ (श्या० ला०) ॥।)
भारतवर्ष की वीर और विदुषी स्त्रियाँ (श्या० ला०व०) ॥।)

सच्चे समाचार पहुँचते होंगे; क्योंकि उनके भारत सम्बन्धी ज्ञान के आधार ब्रदसफ़र्ड जैसे व्यक्तियों के पत्र और लेख हैं, परन्तु केवल उतने से ही भारत की परिस्थिति का सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। तिस पर भी भारत की मोटी-मोटी ख़बरों ने ही उन्हें उद्विग्न और व्याकुल बना दिया है और वे अपना भय भारत-मन्त्री को प्रकट करने के लिए बाध्य हो गए हैं! उनका पत्र भारत-मन्त्री के पास पहुँचने पर वे क्या करेंगे, इसका अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। भारत-मन्त्री प्रतिनिधियों को इस बात का विश्वास दिलाएँगे, कि उन्हें नई घटनाओं की कोई ख़बर नहीं है, और वे इस सम्बन्ध में शीघ्र ही जाँच करेंगे। इस बीच में वे प्रतिनिधियों से नम्रतापूर्वक भारत के उद्धार का विशाल कार्य जारी रखने की प्रार्थना करेंगे। ये सभ्य प्रतिनिधिगण गोलमेज़ परिषद के तमाशे में भाग लेने के पहिले यह भली भाँति जानते थे, कि देश उनके बिलकुल विरुद्ध है। शायद उन्हें इस बात की आशा होगी, कि गवर्नमेण्ट का साथ देने के लिए तैयार हो जाने से गवर्नमेण्ट का दमन-चक्र रुक जायगा। परन्तु, इससे विपरीत प्रतिनिधियों के अन्तिम जत्थे के जहाज़ पर पैर रखते ही, यह दमन-चक्र और प्रबल वेग से चलने लगा है। हमें उनके भारत-मन्त्री को पत्र लिखने से कोई लाभ होता नज़र नहीं आता। प्रतिनिधियों ने स्वयं पहिले से दमन-नीति बन्द किए बिना परिषद में भाग लेकर अपने को असहाय बना लिया है!!

—'हिन्दुस्तान टाइम्स' (अङ्गरेज़ी)

* * *

भारतीय राजा और उनकी प्रजा

गोलमेज़ परिषद में फ़ेडेरल-शासन-विधान की रचना पर विचार हो रहा है और राजा लोग और जातीय पक्षपात के हिमायतियों ने हृदय से उसका स्वागत किया है, इससे उन लोगों के हृदयों पर, जो निकट-भविष्य में भारत में स्वराज्य की स्थापना के लिए लालायित हैं, आतङ्क छा गया है। फ़ेडेरल-शासन-विधान की रचना का प्रश्न उठ खड़ा होने से, केवल यही डर नहीं है कि उसमें आगे भारतीय स्वतन्त्रता का प्रश्न दब जायगा, वरन उससे एक भयङ्कर ख़तरा यह भी है, कि केन्द्रीय-शासन को पुनः सङ्गठित करने का जो अवसर दिया गया है, उससे अनुचित लाभ उठा कर राजा लोग अपनी नींव दृढ़ कर लें और उनके एकतन्त्र शासन में सार्वभौम शक्ति (Paramount Power) का जो थोड़ा बहुत व्यवधान है, उसे भी दूर कर दें। इसलिए 'स्टेट्स सब्जेक्ट कॉन्फ़्रेन्स' की कमिटी ने इस ख़तरे को दूर रखने के लिए दीवान बहादुर रामचन्द्र राव और दूसरे प्रतिनिधियों को तार भेज कर ठीक ही किया है। कमिटी ने प्रतिनिधियों को निम्न अधिकार प्राप्त करने पर तुले रहने के लिए लिखा है:—

(१) सार्वभौम शक्ति (Paramountcy) उस रूप में, जिसमें बटलर-रिपोर्ट में विशेषतः ४९ और ५० पैरों में उसकी व्याख्या की गई है, उसके अनियन्त्रित शासन के विरुद्ध कुछ व्यवधान लगा कर फ़ेडेरल गवर्नमेण्ट के हाथों में दे दी जाय;

(२) उस समय तक, जब तक रियासतों का शासन जनता के हाथों में न आ जाय, फ़ेडेरल-गवर्नमेण्ट का उनको आन्तरिक क़ानून-व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था और अर्थ-व्यवस्था में पूरा हाथ रहे;

(३) वैयक्तिक स्वतन्त्रता, जायदाद, प्रेस, भाषण और सभा सम्बन्धी मामलों में रियासतों की बड़ी से बड़ी अदालत से 'सुप्रीम फ़ेडेरल कोर्ट' में अपील करने का जनता को अधिकार रहे।

(४) छोटी-छोटी रियासतों के हाथ से, जिनके साथ सन्धि नहीं हुई, क़ानून-रचना और न्याय-व्यवस्था के अधिकार छीन लिए जायँ; और

(५) नगण्य रियासतें और एजेन्सियाँ भारत में सम्मिलित कर ली जायँ।

यदि उन राजाओं की सदिच्छा, जिन्होंने फ़ेडेरल गवर्नमेण्ट की स्थापना से अपनी पूरी सहानुभूति दिखलाई है, भारत में स्वराज्य स्थापित करने की है और यदि वे अपना स्वेच्छाचारी और अनियन्त्रित शासन चिरस्थायी नहीं बनाना चाहते, तो उन्हें अपनी प्रजा के उपर्युक्त अधिकार मञ्जूर करने में हिचकिचाना न चाहिए!

—ट्रिब्यून (अङ्गरेज़ी)

* * *

नीम जानों को न छेड़!

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

तार "रयूटर" का यह है, क़ानून-दानों को न छेड़!
मेहरबानी करके इतना, मेहरबानों को न छेड़!!
है इन्हीं की वजह से यह रङ्ग, यह लुत्फ़े-चमन,
बाग़ में सय्याद कुछ हो, बाग़बानों को न छेड़!!
हो गई हड़ताल, तो फिर ख़ाक उड़ेगी देखना!
चल रहे हैं कारख़ाने, कारख़ानों को न छेड़!!
कौन कहता है, नई तहज़ीब पर क़ुर्बान हो!
जो तरीक़े हैं पुराने, उन पुरानों को न छेड़!!
ख़ाना-बरबादी से क्या हासिल तुझे होगा ट्रस्ट!
टूटे-फूटे हम ग़रीबों के, मकानों को न छेड़!!
आग बरसाएँगे जल कर, फिर यह पानी की तरह,
पुर-असर नाले कहा मान, आसमानों को न छेड़!!
काँप उठे जिनसे कलेजा, और हो बेताब दिल!
दर्द वाले देख! ऐसी दास्तानों को न छेड़!!
गूँजते हैं, कान में "इङ्गलिश" के नग़मे बार-बार!
है मुनासिब अब यही, देसी तरानों को न छेड़!!
बेवफ़ा क़ातिल से ऐ "बिस्मिल" यह कहना चाहिए!
नीम जानों में नहीं कुछ, नीम जानों को न छेड़!!

* * *

(९ वें पृष्ठ का शेषांश)

भारत के शासकों ने जितने युद्ध लड़े हैं, उनमें से हर एक का ख़र्च भारतीयों से ही वसूल किया गया है। ब्रह्मा को सम्मिलित करने का ख़र्च उससे किस तर्क और न्याय के अनुसार वसूल किया जाता है? साइमन रिपोर्ट ने भी यह स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि भारत साम्राज्य की उस फ़ौज का ख़र्च देने का देनदार नहीं है, जो आकस्मिक आवश्यकता के लिए भारत में रक्खी गई है। इस माँग के प्रस्ताव का शब्द-विन्यास चाहे बिलकुल उपयुक्त भले ही न हुआ हो, परन्तु साधारण न्याय की हैसियत से भी इस ऋण की जाँच और व्यवस्था की अत्यन्तावश्यकता है।

शक्ति की परीक्षा

"एक वर्ष पहले भारत की समस्या केवल राजनीतिक समस्या थी, परन्तु धीरे-धीरे यह उलझ कर आर्थिक और सामाजिक समस्या का रूप भी धारण कर रही है। नमक के एकाधिकार (Monopoly) और शराब की दूकानों (आबकारी) पर धावा अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने की केवल पहली क़वायद थी। दोनों ओर की शक्ति की परीक्षा तो उस समय प्रारम्भ हुई, जब गुजरात के किसानों ने ज़मीन का लगान देने से साफ़ इनकार कर दिया। इनके उदाहरण का कहाँ तक अनुकरण किया जायगा? प्रधान कठिनाई यह है, कि भारत के अधिकांश किसान ज़मीन के मालिक नहीं हैं! वे ज़मींदार को ज़मीन का लगान देते हैं और वह उसी के अनुपात में टैक्स देता है। परन्तु गुजरात से इसकी हवा इलाहाबाद तक आई है और वहाँ से फैलते अधिक देर न लगेगी।

लगानबन्दी का आन्दोलन

"इन ज़मींदारों को पूँजी डूबने का डर नहीं है और न वे कोई सामाजिक सेवा करते हैं! वे ऐसे गाँवों में टैक्स लगा देते हैं, जहाँ कि हर एक कुटुम्ब क़र्ज़ में डूबा हुआ है। उन बच्चों को, जो बचपन में किसी प्रकार कराल काल के भयङ्कर प्रहार से बच जाते हैं, दूध स्वाद लेने को कभी नहीं मिलता! भूमि-विहीन मज़दूर तीन या चार पेन्स (तीन-चार आना) में दिन भर काम करने के लिए प्रसन्नतापूर्वक तैयार हो जाता है! भारत में सूर्य डूबने के उपरान्त सर्दी अपना विस्तार फैलाती है, परन्तु मैंने ऐसे आदमी देखे हैं, जिनके पास उससे रक्षा करने के लिए एक चिथड़े-चिथड़े धोती के सिवा कोई अन्य वस्त्र नहीं है!! साधारण परिस्थिति में भी यह लगान बड़ी निर्दयता से वसूल किया जाता है, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में इसका वसूल होना एकान्त असम्भव है। भारत के उत्तरीय भाग के गेहूँ का भाव, जो वहाँ की मुख्य उपज है, युद्ध के पहले के भाव से भी बहुत अधिक गिर गया है और यदि वह लगान दे दे तो ख़र्च निकालने के बाद किसान अपने भरण-पोषण के उपयुक्त भी अन्न नहीं बचा सकता! जब किसान लगान देने में असमर्थ होता है, तब उसे लगान न देने के लिए उकसाने में अधिक प्रयत्न या आन्दोलन की आवश्यकता नहीं पड़ती।

शीतकाल व्यतीत होने के पूर्व

"लगानबन्दी का आन्दोलन शीत ऋतु प्रारम्भ होने के पहले ही प्रारम्भ हो गया है और शीघ्र ही भारत के अधिकांश भाग में फैल जायगा। यह भारत की ग़रीबी की समस्या हल कर देगा और मैंने स्वयं किसानों को यह घोषणा करते हुए सुना है कि 'जब तक स्वराज्य नहीं हो जायगा, हम लगान न देंगे।' इससे कम से कम यह निश्चित हो जाता है कि इस आन्दोलन में वे इतना अधिक भाग किसी मन्तव्य से ले रहे हैं। उनके हृदय में विश्वास जम गया है कि इससे उनके बच्चों को घी-दूध नसीब होने लगेगा। जो कल राष्ट्रीय क्रान्ति थी, उसके भविष्य में भूमि-सम्बन्धी विद्रोह में परिवर्तित होने की आशङ्का है। गवर्नमेण्ट की आमदनी का मुख्य द्वार ख़तरे में है और इस विद्रोह का अन्त वह भयङ्कर हानि सह कर लगान बन्द किए बिना नहीं कर सकती। मैं साहसपूर्वक यह भविष्यवाणी करता हूँ कि इस युद्ध के उपरान्त जिस नव्य-भारत का जन्म होगा, वह अपनी अगणित सदियों की निश्चेष्टता और अकर्मण्यता अवश्य बहा देगा।"

* * *

धर्म और भगवान अमर हैं !

उनके बिना समाज रसातल को पहुँच जायगा !

[श्री० नाथूराम जी पाठक]

गत ४थी दिसम्बर के "भविष्य" में श्री० पृथ्वीपाल, बी० ए० नाम के "अधर्मी" सज्जन ने, देश की वर्तमान पराधीनता तथा समाज की अधोगति को देख कर उसके निवारणार्थ "धर्म और भगवान को मृत्यु-शय्या पर" लिटा देने का आदेश दिया है। लेखक महोदय ने आवेश में आकर परिणाम पर ज़रा भी नज़र न रखते हुए, भारतीय समाज को रूस के सुप्रसिद्ध साम्यवादी नेता मोशिए लेनिन की धार्मिक-क्रान्ति का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया है ; और साथ ही साथ आपने अत्यन्त जोश में आकर संसार के मज़हबों द्वारा होने वाले अनाचारों की विशद व्याख्या भी सुसभ्य भाषा में पाठकों के समक्ष उपस्थित की है। आपके तमाम लेख का संक्षिप्त निष्कर्ष केवल यह है—"यदि भारतवर्ष अपनी वर्तमान निराशा की अवस्था से अपना पिण्ड छुड़ाना चाहता है, तो उसे चाहिए कि वह धर्म और भगवान दोनों का काला मुँह (!!) करके उन्हें देश से निर्वासित करदे, क्योंकि इसी धर्म की बदौलत पण्डित, पुजारी, मुल्ला और महन्त, देश तथा जाति को अवनति के गर्त मे लिए जा रहे हैं।" अब हमें देखना यह है, कि क्या उपरोक्त सज्जन का यह मत संसार में उस दुर्लभ शान्ति को लाने में समर्थ हो सकेगा, जिसके लिए बाबू पृथ्वीपाल साहब ने तथा उनके पूर्व और एक सज्जन ने इसी प्रकार की नास्तिकतापूर्ण सम्मति देश को प्रदान की थी।

हम एक "बुद्धिवादी" की हैसियत से यह बात बिना सङ्कोच के स्वीकार किए लेते हैं, कि धर्म और भगवान की स्थापना अथवा उनका अस्तित्व, ये दोनों निस्सन्देह कल्पना-प्रसून हैं ; किन्तु इसके साथ ही इस बात को भी स्वीकार करना अनिवार्य है, कि यह कल्पना जिन असाधारण मस्तिष्क तथा परोपकारी मनीषियों की की हुई है, उन्होंने मनुष्य-जाति के कल्याण को ही लक्ष्य में रख कर इसका निर्माण किया है।

यह सच है कि वर्तमान भारतीय समाज में, जैसा कि उल्लिखित लेखक-द्वय का मत है, धर्म के नाम पर भीषण अनाचार फैला हुआ है ; पर इस अनाचार तथा पाखण्ड का मूल कारण केवल धर्म और भगवान ही है, ऐसा समझना तथा औरों को इसी प्रकार समझाने का प्रयत्न करना, नितान्त भ्रम है।

न जाने किस अज्ञात काल से संसार का प्रत्येक देश धर्म और भगवान को मानता चला आ रहा है; हम नहीं जानते कि कोई ऐसा भी समय रहा है, जबकि संसार का कोई देश या जाति बिना धर्म और भगवान के अपना जीवन व्यतीत करता रहा हो, और उनका वह जीवन नितान्त शान्ति तथा सुखपूर्ण रहा हो। जहाँ तक हमारा अनुभव है, हम यह भी कहने का साहस कर सकते हैं, कि यदि कोई ऐसा (धर्म-विहीन) युग या काल रहा भी है, तो उस समय में केवल पशुता और अनाचार का ही बोल-बाला रहा होगा, क्योंकि बिना धर्म और भगवान के संसार में स्थायी शान्ति या सुख को लाना—हम आस्तिकों के विचार में—बालू से तेल निकालने जैसा, सर्वथा असम्भव है !

वर्तमान काल के नास्तिक बन्धु, जब अपने विषय को प्रतिपादन करने का प्रयत्न करते हैं, तो वे प्रधानतः रूस की राजनैतिक और धार्मिक क्रान्ति का अवतरण दिए बिना नहीं रहते ! और रह भी कैसे सकते हैं ? उनकी अन्तः स्थित अधर्मता तो रूस की धार्मिक क्रान्ति से ही आन्दोलित हो वर्तमान नास्तिक रूप में प्रकटित हुई है।

हमसे जब कहा जाता है, कि नब्बे फ़ी सदी श्रमिकों और कृषकों का रक्त-शोषण, जो दस फ़ी सदी पूँजीपति कर रहे हैं, इसका मूल कारण केवल धर्म ही है, तब हमारे आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। हम नहीं समझ पाते कि पूँजीपतियों को अत्याचार करने का, और श्रमिकों तथा कृषकों को अत्याचार सहने का, किस धर्म ने कहाँ पर और कैसी व्यवस्था दे रक्खी है ? इसके विरुद्ध धर्म की ऐसी व्यवस्थाओं से, जिनमें कि सोलहो आने साम्यवाद का समर्थन किया गया है—प्रायः सभी धार्मिक-ग्रन्थ (कम से कम हिन्दू-शास्त्र तो) भरे पड़े हुए हैं। यह बात दूसरी है कि वर्तमान पथ-भ्रष्ट समाज उसका अनुकरण न कर, उलटा प्रत्याख्यान कर रहा है !

रूस की धार्मिक क्रान्ति ने जो नास्तिकतापूर्ण वायुमण्डल निर्माण कर दिया है, और जिसमें उसे किसी हद तक सफलता भी मिल चुकी है, नहीं कहा जा सकता कि वह सफलता चिरस्थायी रह सकेगी ! अभी इस क्रान्ति का बाल्य काल ही समाप्त नहीं हुआ ! फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि यह 'क्रान्ति-शिशु' चिरञ्जीवि ही होगा और इसकी अकाल मृत्यु न होगी ?

हम आस्तिकों के विचार से संसार का कोई भी समाज बिना धर्म-शासन के सुख तथा शान्तिपूर्वक कालयापन नहीं कर सकता। और यदि कोई देश या समाज ऐसा करने का दुःसाहस करेगा भी, तो वह समाज वा देश अल्प काल में ही मनुष्य-नामधारी पशुओं, और पिशाचों का देश अथवा समाज होगा ! जब धर्म और भगवान ही न रहे तो फिर डर ही किसका ? बस "ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत" क़रज़ा लो और घी पियो !

हमारे कुछ व्यवस्थित(?)नास्तिक बन्धु कहा करते हैं, कि नहीं साहब ! हमारा मतलब यह नहीं है कि क्षमा, दया तथा परोपकारादि सद्वृत्तियों को नष्ट कर डाला जाय ! नहीं ! नहीं ! इनको तो समाज के कल्याण के लिए दूने वेग से उद्बोधित करना होगा, इनके बिना समाज की रक्षा ही कैसे हो सकेगी; किन्तु हमारे क्रान्तिकारी भाई, इतना सोचने की तकलीफ़ गवारा क्यों नहीं करते, कि जब मनुष्यों के हृदय पर से उस अन्तर्यामी का शासन नास्तिकता के द्वारा तहस-नहस कर दिया जावेगा, और साथ ही इसके, जब उनको इस बात का भी पूर्ण विश्वास दिला दिया जावेगा, कि न तो कोई धर्म है, और न कोई ईश्वर, और तुम अपने व्यक्तित्व में पूर्ण स्वतन्त्र हो, तुम्हें अपने पापों की किसी को भी कैफ़ियत न देनी होगी, तब वे अभागे अधिकांश मनुष्य, जो निन्द्य और गर्ह्य कार्य आज धर्म और भगवान के भय से नहीं कर रहे हैं, उपरोक्त अमानुषी मानसिक स्वतन्त्रता मिलने पर क्या निर्लज्जतापूर्वक चरितार्थ करना प्रारम्भ न कर देंगे ?

निस्सन्देह धर्म के नाम पर संसार में संख्यातीत मनुष्यों का शिरच्छेद कर डाला गया है, और इसी प्रकार लाखों धूर्तों ने अज्ञानी श्रद्धालुओं की अन्ध-श्रद्धा से अनुचित लाभ उठाते हुए, उनकी बहू-बेटियों तथा सम्पत्ति का अपहरण किया है, और कर रहे हैं ! किन्तु इन सब का केवल एक यही उपाय नहीं है, कि धर्म और भगवान को निरादृत कर, समाज से निर्वासित कर दिया जाय ! ऐसा करने से जहाँ हमें दस लाभ होने की सम्भावना है, वहाँ उसी के साथ ही साथ सैकड़ों नुक़सानों की भी आशङ्का है।

जब राज्य-शासन और धर्म-शासन दोनों की मौजूदगी में ही धूर्त तथा आततायी भोले-भाले नागरिकों को इस हद तक लूट रहे हैं, तब जिस दिन समाज का प्रत्येक व्यक्ति नास्तिकता का समर्थक हो जावेगा, उस दिन तो इन पिशाचों के वंशज, समाज के अन्दर जो नग्न नृत्य करेंगे, उसकी कल्पना मात्र से रोमाञ्च हो आता है !

केवल धर्म के ही आध्यात्मिक शासन में वह शक्ति और सामर्थ्य वर्तमान है, जो कि मनुष्य मात्र को स्वार्थ-त्याग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। यह केवल धर्म की ही भावना है जिससे प्रेरित होकर मनुष्य अपने को कष्ट में डाल कर, दूसरों का भला करने के लिए, प्रसन्नतापूर्वक उद्यत हो जाता है।

यदि इन्द्रिय-परायणता को, संयम द्वारा, प्रशमित न किया जाय, तो वह नीच प्रवृत्ति उत्तरोत्तर वृद्धि करती जायगी, और उसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि मनुष्य पूर्णतः विषयान्ध हो जायगा। अस्तु, ऐसे इन्द्रिय-परायण—विषयान्ध के लिए, संसार में ऐसा कोई कुकृत्य नहीं है, जो उसके लिए दुष्कर कहा जा सके ! ऐसी अनेक कुप्रवृत्तियाँ हैं, जो धर्म और भगवान का शासन न रहने पर, अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच कर, संसार का भीषण से भीषण पतन करने में सहायक होंगी ! उनके निराकरण करने की सामर्थ्य, न तो किसी सामाजिक व्यवस्था में होगी, और न किसी शासन-व्यवस्था में !

राज्य या समाज का शासन, मनुष्य के बाह्य आचरण को, चाहे किसी सीमा तक भले ही संयत रख सकें, किन्तु उनमें यह शक्ति या सामर्थ्य नहीं है, कि वे मनुष्यों के हृदय में सदाचार का स्रोत बहा सकें ! उसे परोपकार, दया, क्षमा, और उदारता आदि के लिए बाधित कर सकें !

* * *

और यदि संयोगवशात कहीं नास्तिकों के मनोर्थ सफल ही हुए ! तो फिर संसार में तुलसीदास जी का वह दृश्य—

भए काम बस जोगीस तापस
पामरन की को कहे।
देखहिं चराचर नारमय जे
ब्रह्ममय देखत रहे॥
अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग
पुरुष सब अबला मयं।
*(रहिहै कदाचित प्रलय लौं—
पथभ्रष्ट) कृत कौतुक अयं॥

अवश्य दृष्टिगोचर होगा !

इन पंक्तियों का आस्तिक लेखक, समाज में होने वाले जातिगत वैषम्य, छुआछूत, पण्डा, पुरोहित और मौलवी, महन्तों को उतना ही गर्ह्य, परित्यज्य तथा बहिष्करणीय समझता है, जितना कि बाबू पृथ्वीपाल साहब ! किन्तु साथ ही इसके, पाश्चात्य नास्तिकाचार्य हैगल, और हक्सले, निट्शे और स्पेन्सर आदि के अनीश्वरवादी—भेड़ियाधसान—सिद्धान्तों को भी उतना ही त्याज्य समझता है।

आशा है, कि हमारे नास्तिक दोस्त—सुधारवादी बदलाहीन—हिन्दू आस्तिकों का ख़याल रखते हुए, "भगवान का काला मुँह" जैसे अनुचित वाक्य लिख कर आकाश पर थूकने का निन्द्य प्रयत्न न करेंगे।

* कोष्ठक का 'पौन' चरण लेखक का है।

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स का छकड़ा जिस चाल से चल रहा है, उससे प्रतीत होता है कि अभी दिल्ली दूर है। नौ दिन चले अढ़ाई कोस की चाल से मञ्ज़िल तक पहुँचना सरल काम नहीं है। विशेषतः ऐसा छकड़ा, जिसके बैल भिन्न-भिन्न दिशाओं में भागने की चेष्टा कर रहे हों, उसका तो राम ही मालिक है। कॉन्फ्रेन्स क्या है, भिख-मङ्गों की जमाअत है! सब चाहते हैं कि उनकी झोली पहले भर दी जाय। ब्रिटिश सरकार भी प्रसन्न है, कि चलो अच्छा है—ख़ूब लड़ने दो। यदि इस झगड़े में आपस में करारा जूता चल जाय और कॉन्फ्रेन्स भङ्ग हो जाय, तो भारतीयों को नालायक़ प्रमाणित करने का अच्छा अवसर मिलेगा। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई, सिक्ख यहाँ तक कि अछूत ये सब अपनी-अपनी सीटें रिज़र्व कराना चाहते हैं। अपने राम इसको बिलकुल नाकाफ़ी समझते हैं। हिन्दू है किस चिड़िया का नाम? अजी जनाब हिन्दुओं में चार वर्ण हैं—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र! इन सबके लिए सीटें होनी चाहिएँ। ब्राह्मणों में अनेक शाखाएँ हैं। कॉन्फ्रेन्स में कोई कनौ-जिया भाई पहुँच जाते तो बस बेड़ा पार था—सब सीटें हथियाने के पश्चात भी शुक्ल, मिश्र, दुबे अथवा अन्य कोई टापते ही रह जाते। वैश्यों में कोई मारवाड़ी सज्जन होते तो खेतान, डालमियाँ, सिंघानिया, कापड़िया इत्यादि-इत्यादि के लिए सीटें लेते-लेते हिन्दुस्तान का सफ़ाया कर देते।

ब्याह-शादियों में जब पत्तलें बँटती हैं, तो जो बच्चा गर्भ में होता है उसकी पत्तल तक ले ली जाती है। इसी प्रकार कुछ सीटें भविष्य के गर्भ में छिपी हुई जातियों के लिए भी रिज़र्व रख ली जायँ तो अच्छा है। भई, पहले से इन्तज़ाम कर लेना अच्छा होता है—पीछे झगड़ा हो तो क्या फ़ायदा! मुसलमान लोग भी ग़लती कर रहे हैं, उन्हें शेख़, सय्यद, मुग़ल, पठान, हाजी, हाफ़िज़—सबके लिए अलग-अलग माँग पेश करनी चाहिए। इस प्रकार सब लोग ख़ूब विस्तारपूर्वक अपने-अपने हक़ माँगें तो कुछ आनन्द भी आवे। ब्रिटिश सर-कार को भी पता चले कि हाँ कॉन्फ्रेन्स ऐसी होती है। दही, बड़े-कचालू का ख़ोनचा, जिसमें से पैसे में चार चीज़ें मिल जाती हैं, कॉन्फ्रेन्स के आगे मात खा जाता। अपने राम भी साल-छः महीने के भीतर कॉन्फ्रेन्स के सभापति को एक "केबिल" खटखटाने वाले हैं, कि भाई साहब ज़रा दुबे लोगों का भी ख़याल रखना, वरना हिन्दुस्तान में ग़दर हो जायगा और आपकी बदनामी होगी। क्योंकि अपने राम चाहे ग़म खाकर बैठ भी रहें, परन्तु सब दुबे लोग ग़म खाने वाले जीव नहीं हैं। और ग़म क्यों खायँ—क्या हम लोग हिन्दुस्तान में नहीं रहते? यदि दुबे लोगों के लिए यथेष्ट सीटें न रक्खी गईं (क्योंकि दुबे लोगों में भी अनेक श्रेणियाँ हैं), तो अन्य जाति वाले इन्हें भारतवर्ष से निकाल बाहर करेंगे। इसलिए पहले से प्रबन्ध कर लेना अच्छी बात है—बाद को पछताना न पड़े।

एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की है, कि सोलह जनवरी तक स्वराज्य मिल जायगा और सब राजनैतिक क़ैदी छूट जायँगे। अपने राम की राय में यह भविष्य-वाणी बहुत ही ठीक जँचती है। जनवरी के मध्य तक राउण्डटेबुल कॉन्फ्रेन्स भी समाप्त होगी, बस उधर कॉन्फ्रेन्स ख़तम हुई, इधर स्वराज्य मिल गया। इसलिए अब यह सत्याग्रह और पिकेटिङ्ग सब बन्द हो जाना चाहिए। जब स्वराज्य मिलने ही पर उतारू हो गया है, तो सब व्यर्थ है। ख़ामख़ाह की झञ्झट मोल लेना बुद्धिमत्ता नहीं है। गोलमेज़ के प्रतिनिधियों को भी ब्रिटिश सरकार से यह कह कर, भारत लौट आना चाहिए कि "जनाब, हम स्वराज्य-वराज्य कुछ नहीं चाहते—यह तो महज़ एक दिल्लगी थी, आप लोग बेफ़िक्र होकर आराम से बैठिए। स्वराज्य हमें अपने आप मिल जायगा। आप लोग झक मारेंगे और स्वराज्य देंगे, क्योंकि हमारे एक ज्योतिषी जी हुक्म लगा चुके हैं।" अपने राम भी आन्दोलन की दाँता-किटकिट से तङ्ग आ गए हैं। जी चाहता है कि क्लोरोफ़ॉर्म सूँघ कर पड़ रहें और सत्रह जनवरी को उठें, तो चारों तरफ़ स्वराज्य ही स्वराज्य देखें! हालाँकि यह युक्ति हिन्दु-स्तान भर को करना चाहिए, क्योंकि सोलह जनवरी की प्रतीक्षा करते-करते एक आँख बैठ जायगी। इसलिए यह अच्छा है कि ये दिन बेहोशी में कट जायँ—पता भी नहीं लगेगा कि कब और कहाँ गए। परन्तु अपने राम की यह युक्ति हिन्दुस्तान भर मानने क्यों लगा, क्योंकि बहुतों को इसी में मज़ा आता है, कि ऐसी ही धमचख़ मची रहे।

ज्योतिषी जी महाराज ने बड़ी ग़लती की जो अभी तक इस बात को प्रकट न किया कि सोलह जनवरी तक स्वराज्य मिलेहीगा—मानेगा नहीं। यदि वह साल भर पहले भी बता देते, तो यह झगड़ा क्यों होता। गाँधी जी नमक-सत्याग्रह आरम्भ न करते, विलायती कपड़े का बॉयकॉट न होता—न पिकेटिङ्ग होती। हज़ारों आदमी क्यों पिटते और क्यों जेल जाते! भारत-सरकार भी सुख की नींद सोती। गोलमेज़ कॉन्फ्रेन्स को भी हिन्दुस्तान से ही अँगूठा दिखा दिया जाता। क्योंकि होने वाली बात किसी के रोके नहीं रुक सकती। ज्योतिषी जी महाराज अब तक न जाने किस दरबे में बन्द रहे। यदि इनकी भविष्यवाणी ठीक हुई, तो इन्हें कालेपानी का दण्ड अवश्य मिलना चाहिए। ये क्षमा के योग्य कदापि नहीं हैं; क्योंकि इन्होंने ही अब तक मौन धारण करके इतना उपद्रव मचवा दिया!

अपने राम इसीलिए कभी भविष्यवाणी नहीं करते कि कहीं सच हो गई तो मुफ़्त में सारा दोष अपने राम के मत्थे मढ़ा जायगा। अपने राम ने एक बार एक मर-णासन्न रोगी के सम्बन्ध में कहा था कि यह अच्छा हो जायगा। बस जनाब, वह मृत्यु को अँगूठा दिखा कर टइयाँ-सा उठ बैठा। फिर क्या था! उसके घर वाले अपने राम की जान को आ गए कि "आपने पहले क्यों न बताया, हमारा सैकड़ों रुपया डॉक्टरों के चूल्हे में चला गया—आप पहले बता देते तो हम डॉक्टर तो क्या, किसी अत्तार को भी न बुलाते।" रोगी भी बड़ा नाराज़ हुआ कि डॉक्टरों ने ज़हर पिला-पिला कर नाक में दम कर दिया, और भूखों मार डाला। आप यदि पहले से बता देते तो मज़े से दोनों समय ठण्डाई छानते और मलाई-रबड़ी उड़ाते। यह सब देख-सुन कर अपने राम ने प्रतिज्ञा कर ली कि अब कभी जीवन में भविष्य-वाणी नहीं करेंगे—सदैव भूतवाणी और वर्तमानवाणी ही करेंगे। स्वराज्य मिलने न मिलने के सम्बन्ध में अनेक बार इच्छा हुई कि भविष्यवाणी कर डालें, परन्तु यही डर लगा रहा, कि कहीं सच हो गई तो लोग ख़ुफ़िया पुलिस का आदमी समझ कर फाँसी पर लटका देंगे। इसलिए अपने राम भूतवाणी के पक्ष में हैं। अपने राम की भूतवाणी कभी ग़लत नहीं होती—यह दावा है। अपने राम की भूतवाणी सुनिए—"भारत में दस महीने से उथल-पुथल हो रही है, हज़ारों आदमी जेल जा चुके हैं, लाखों आदमी खद्दरधारी हो गए हैं, करोड़ों आदमी नित्य सवेरे उठते हैं और दिन भर अपना काम-धन्धा तथा आन्दोलन के सम्बन्ध में गप-शप करके रात में पड़ के सो जाते हैं।" क्यों सम्पादक जी यह भूतवाणी कितनी ठीक है—हालाँकि इसमें थोड़ी वर्तमानवाणी भी मिली हुई है। इस वाणी को कोई ग़लत प्रमाणित कर दे तो मैं उसे अपना चेला बना लूँ। आजकल वह समय है, कि हाथ-पैर बचा कर काम करना चाहिए। वाणी के पीछे ही हज़ारों आदमी जेल की रोटियाँ खा रहे हैं। शेरवाणी तथा फ़ीलवाणी से काम न लेकर केवल नयनवाणी से काम निकालना चाहिए—ऐसा कुछ लोगों का मत है। सम्पादक जी, आप भी सदैव भूतवाणी तथा वर्तमानवाणी करते हैं। हालाँकि आपने अपने पत्र का नाम "भविष्य" रक्खा है, परन्तु भविष्यवाणी के पास भी नहीं फटकते। यह बड़ी अच्छी बात है। आपका और अपने राम का सिद्धान्त मिलता-जुलता है।

सम्पादक जी, सोलह जनवरी के लिए तैयारी कर रखिए। ख़ूब उत्सव होगा, ख़ूब नाच-रङ्ग होंगे। घर-घर घी के चिराग़ जलाए जायँगे। अपने राम ने अभी से विशुद्ध ताज़ा देशी घी देहात से मँगवाने का प्रबन्ध कर लिया है। बिजली की बत्ती की रोशनी नहीं होगी। बिजली की बत्तियाँ विलायती होती हैं। आप भी रोशनी का बढ़िया प्रबन्ध कीजिएगा—जिससे कि चन्द्र-लोक सूर्यलोक बन जाय।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

फ़रियादे बिस्मिल

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

ख़ुदा ही ख़ैर करे क्या पयाम आया है,
बजाए ख़त मुझे टेलीग्राम आया है!
ख़ुशी के साथ वहाँ जाएँ हज़रते "बिस्मिल",
यहाँ तुम आओ यह उनका पयाम आया है!!

* * *

पाठशाले का सबक़ सब भूल जाना चाहिए,
मुख़्तसर यह है, मुझे स्कूल जाना चाहिए!
उनसे पूछो हज़रते "बिस्मिल" यह क्या दस्तूर है,
मैं न याद आऊँ तो मुझको भूल जाना चाहिए?

* * *

वह और क्या बताए दुनिया में काम अपना,
आता है बरहमन को बस राम-राम जपना?
बँगलों पे जाके "बिस्मिल" करने लगे ख़ुशामद,
मतलब यह है कि समझें वह ख़ैरख़्वाह अपना!!

* * *

साम्यवाद

[श्री० यदुनन्दनप्रसाद जी श्रीवास्तव]

(प्रत्युत्तर)

'भविष्य' के २३ अक्टूबर के अङ्क में मैंने साम्यवाद पर जो छोटा सा लेख दिया था उसने कई लोगों में भारी भ्रम पैदा कर दिया है। सब से प्रथम श्री० सुधीर महोदय ने उसके विरुद्ध लेखनी उठाई; उसका उत्तर भेजते न भेजते श्रीशैलेन्द्रकुमार जी अवस्थी ने भी एक जवाब लिख डाला। किन्तु अवस्थी जी के लिखने का ढङ्ग सुधीर महोदय की तरह फ़ौजी नहीं, साथ ही उनके लेख के कई अंशों से ऐसा विदित होता है कि उनके और मेरे विचारों में विरोध की अपेक्षा समता ही अधिक है। जो कुछ भी विरोध दीखता है, वह हम दो में से किसी न किसी का भ्रम है।

अवस्थी जी लिखते हैं—"पूर्वकाल में भारतीय राष्ट्र एवं समाज का सङ्गठन साम्यवाद के ही आदर्श पर स्थिर था।" मैंने भी अपने लेख के छठवें पैराग्राफ़ में ठीक यही बातें लिखी हैं। हमारा और अवस्थी जी का मत इस सम्बन्ध में एक हो जाने पर अब भेद केवल यही रह जाता है कि अवस्थी जी आधुनिक साम्यवाद के सिद्धान्त पर ही हमारे समाज को सङ्गठित बनाते हैं। अवस्थी जी के इस कथन से मैं सहमत नहीं।

हमारे समाज, धर्म अथवा सभी सङ्गठनों के मूल में आत्म-विकास का सिद्धान्त था। चाहे कोई व्यक्ति कुछ भी करे, उसका मुख्य उद्देश्य था अपने आत्मा का पूर्ण विकास—आत्म-साक्षात्कार अथवा मोक्ष। साम्यवाद का उद्देश्य यह नहीं मालूम पड़ता। भौतिकवादी पश्चिम की अन्य सभी बातों की तरह साम्यवाद का भी उद्देश्य है प्रत्येक व्यक्ति का भौतिक विकास। अवस्थी जी लिखते हैं—"वह (साम्यवाद) ब्रह्मज्ञान या मस्तिष्क-बल को नहीं भुलाना चाहता।" प्रत्यक्ष रूप से साम्यवाद चाहे आत्मवाद का विरोध न करता हो, किन्तु यह तो निर्विवाद है कि साम्यवाद आर्थिक एवम् राजनैतिक क्रान्ति है और उसकी आँख भौतिक सुख पर ही डटी हुई है। उसका उद्देश्य है भौतिक सुख। उसका लक्ष्य इससे परे नहीं जाता।

अवस्थी जी लिखते हैं—"आजकल के साम्यवाद में पहिले से कुछ अन्तर पड़ गया है, क्योंकि जब अत्याचार असहनीय हो गए तो इसने पीड़ित दिलों में प्रतिहिंसा की अग्नि पैदा कर दी। जिससे कुछ असहिष्णु व्यक्तियों ने......अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए......। यह साम्यवाद के असली उद्देश्य या सिद्धान्त का दोष नहीं है, न महात्मा कार्ल मार्क्स और महात्मा टॉल्सटॉय का दोष है......"

किन्तु दोष किसी न किसी का है अवश्य। वही हमें ढूँढ़ना चाहिए। साम्यवाद को प्रचलित हुए अभी बहुत दिन नहीं हुए। किन्तु इसी थोड़े काल में ही अवस्थी जी के कथनानुसार वह अपने मूल उद्देश्य से पतित हो चुका है। इससे क्या यह अनुमान न निकाला जाय कि साम्यवाद के मूल सिद्धान्त व्यावहारिक नहीं हैं। साम्यवाद के प्रवर्तक निश्चय ही ऊँचे दर्जे के व्यक्ति थे। उनके बाद महात्मा टॉल्सटॉय के हाथों इसकी बागडोर गई और फिर महामना लेनिन ने इसे पूरी तरह से व्यावहारिक रूप दिया। किन्तु इसी थोड़ी अवधि के अन्दर साम्यवाद अपने मूल उद्देश्य से हटने लगा। अब आपही सोचें कि यह सिद्धान्त क्या ग्रहण करने योग्य है?

इसके विपरीत आप अपने सामाजिक और राष्ट्रीय सङ्गठन को देखिए। सदियाँ गुज़र गईं, किन्तु यह समाज अनेकानेक आक्रमण और ठोकरों को बर्दाश्त करता हुआ आज भी जीवित है और आक्रमण का स्थिरता से मुक़ाबला कर रहा है। इस प्रकार दोनों की तुलना करने पर आपको पता चलेगा कि आपका सङ्गठन निश्चय ही अधिक मज़बूत नींव पर खड़ा किया गया है। आप लिखते हैं—"तब तक कोई सिद्धान्त विश्वव्यापी नहीं हो सकता जब तक उसमें कुछ सत्य नहीं रहता।" आप अपने समाज अथवा राष्ट्र-सङ्गठन के लिए यही नियम क्यों नहीं लगाते? यदि इस सिद्धान्त की दृष्टि से आप देखेंगे और समय का भी विचार रक्खेंगे तो आपको पता चलेगा कि साम्यवाद अथवा अन्य किसी भी वाद की अपेक्षा आपके "वाद" में सत्य का अंश कहीं अधिक है। और वह यही कि जहाँ पश्चिम अपनी आँख भौतिक सुख की ओर गड़ाए रहता है, वहीं आपकी सभ्यता का लक्ष्य है आत्म-विकास, उसके स्थायी होने का यही एक कारण है। यह निश्चित बात है कि आज हमारा वह सङ्गठन ढीला पड़ गया है, उसके कल-पुर्ज़े बिखर गए हैं और काम भी ठीक से नहीं हो रहा है, इसलिए उसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। आप परिवर्तन करिए अवश्य, किन्तु किसी दूसरे वाद को स्वीकार कर उसके मूल में आघात न करिए।

इसके बाद अवस्थी जी ने महर्षि दयानन्द और महात्मा जी की चर्चा चला कर यह ध्वनि निकाली है कि ये लोग भी साम्यवाद के समर्थक हैं। किन्तु ज़रा विचार करने से यह छिपा न रह जायगा कि स्वामी जी तथा महात्मा जी का साम्यवाद पश्चिमी साम्यवाद से एकदम भिन्न चीज़ है। स्वामी जी तो एक धार्मिक नेता थे ही, किन्तु महात्मा जी भी स्पष्ट रूप से अपने आत्म-चरित में कहते हैं कि उनका अन्तिम लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार अथवा मोक्ष है। भारत को स्वराज्य-प्राप्ति आदि जितने भी उनके कार्य हैं, वे सब गौण हैं तथा वे उस अन्तिम उद्देश्य के पूरक हैं। ग़ुलामी को वे इसीलिए दूर करना चाहते हैं कि वह उनके आत्म-साक्षात्कार के मार्ग का कण्टक है, इसलिए नहीं कि ग़ुलामी दूर हो जाने पर हमारे भौतिक सुख बढ़ जावेंगे। वे यदि भौतिक सुख को भी बढ़ावेंगे तो केवल उसी हालत में जब कि वह उनके अन्तिम लक्ष्य-सिद्धि में सहायक हो। महात्मा जी अछूतों की दशा केवल इसीलिए सुधारना चाहते हैं कि अछूतों की वर्तमान अवस्था उनके आत्मिक विकास की बाधक है। वे धन अथवा किसी भी प्रकार के भौतिक सुख को अछूतों का अन्तिम लक्ष्य बनाना नहीं चाहते। केवल ग़ुलामी दूर करना, दुख दूर करना, इसलिए कि इनके दूर करने पर भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी, महात्मा जी का लक्ष्य नहीं है। आप जो यह कहते हैं कि "साम्यवाद ने लाखों मनुष्यों का ग़ुलामी से उद्धार किया है," वह तो महात्मा जी अथवा उनके आन्दोलन का लक्ष्य नहीं है। यही पूर्व और पश्चिम का अन्तर है। और यही अन्तर महात्मा जी तथा पश्चिमी साम्यवाद का है।

मेरे समान अधिकार वाले अंश के उत्तर में जो आप यह लिखते हैं कि "साम्यवाद के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार होना चाहिए कि यदि उसमें योग्यता है तो...वह भी राष्ट्रपति हो सकता है।" इसके उत्तर में भी मेरा यही कहना है कि हम राष्ट्रपतित्व या किसी भी ऊँची से ऊँची भौतिक महानता को अपना लक्ष्य क्यों बनावें? हम पूर्ण आत्म-विकास को ही अपना लक्ष्य क्यों न बनावें? आत्मा के विकसित होने पर अन्य सभी बातें आप से आप प्राप्त होती हैं। महात्मा जी को ही देखिए। यद्यपि वे कुछ नहीं चाहते; फिर भी उन्हें आज क्या अप्राप्य है? मैंने जो यह लिखा था कि "अधिकार की उत्पत्ति तो सामर्थ्य से होती है" और जिसके विषय में आप एतराज़ कर कहते हैं कि यह तो "जाकी लाठी ताकी भैंस" वाली कहावत हुई। उसका अर्थ भी महात्मा जी के ऊपर दिए वर्णन से खुल जाता है। महात्मा जी के आत्मिक विकास के साथ-साथ उनमें ऐसी सामर्थ्य आ गई है कि अब उनके अधिकार आप से आप बढ़ गए हैं। जिस अधिकार के लिए पश्चिमी साम्यवाद सिर-फुड़ौवल कर रक्त बहा रहा है, उसे प्राप्त करने का उत्तमोत्तम तरीक़ा हमें महात्मा जी से सीखना चाहिए। यही भारतीय सभ्यता की विशेषता है और हमारे सामाजिक सङ्गठन का मूल सिद्धान्त भी यही है। साम्यवाद की नक़ल करते समय हमें यह बात न भूल जानी चाहिए।

अवस्थी जी लिखते हैं "साम्यवाद प्रत्येक व्यक्ति को उसके परिश्रम के उचित फल को दिलाने के लिए लड़ता है।" निश्चय ही यह बात बड़ी अच्छी है, किन्तु इसमें भी हमें भारतीयता को न भूल जाना चाहिए। हमारे यहाँ पुराने समय में दण्ड की अपेक्षा प्रायश्चित्त का अधिक प्रचार था। साम्यवाद ने दण्ड का तरीक़ा अख़्तियार किया है, किन्तु हमें प्रायश्चित्त को अपनाना चाहिए। और इसकी भी शिक्षा हमें महात्मा जी से ही मिल रही है।

उदाहरणार्थ विदेशी बॉयकॉट को ले लीजिए। लङ्काशायर और मैनचेस्टर के कपड़ों की बिक्री कम करने का सवाल पेश है। हमारे कपड़े के व्यवसाय को सब से अधिक हानि इन्हीं दोनों ने पहुँचाई है। अन्य लोग कहते हैं इन कपड़ों का बॉयकॉट करो, किन्तु महात्मा जी यहाँ भी प्रायश्चित्त को ही अपनाते हैं। उनका कथन है कि अपने व्यवसाय, अपनी ग़ुलामी आदि के लिए सब से अधिक दोषी तो हम ही हैं। तब हम दूसरे को दण्ड देने की अपेक्षा ख़ुद ही प्रायश्चित्त क्यों न करें। प्रत्येक व्यक्ति चर्ख़ा चलावे और खादी पहिन कर प्रायश्चित्त करे। काम भी बनता है और लङ्काशायर के प्रतिहिंसा का भाव तक पैदा नहीं होता। साम्यवाद से भिन्न यही है हमारा भारतीय तरीक़ा; जिसमें दूसरे के अपराधों की ओर दृष्टि रख कर प्रतिहिंसा के भाव से प्रेरित होने के बजाय अपना ही सुधार करना और आत्म-चिन्तन द्वारा मुक्ति प्राप्त करना ही प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य रहता है।

अछूतों के प्रश्न पर भी जहाँ अन्य लोग ऊँची जातियों को गाली देते नहीं थकते, महात्मा जी अपनी दृष्टि भी उस तरफ़ नहीं डालते। वे चुपचाप अछूतों की कमज़ोरियों को, उनकी उन ख़राब आदतों, अज्ञान, गन्दगी आदि को दूर करने का प्रयत्न करते हैं, जिन्होंने उन्हें शूद्रत्व से भी नीचे गिरा कर अछूत बना दिया था। और यह भी प्रायः निर्विवाद है कि अछूतों को सब से अधिक लाभ महात्मा जी ने ही पहुँचाया है।

अवस्थी जी लिखते हैं—"भारतीय सभ्यता से ही संसार में सुख-शान्ति स्थापित होगी।" किन्तु अवस्थी जी का विचार है कि "वह साम्यवाद के

द्वारा ही सफल हो सकती है।" इसे तो अवस्थी जी ने भी स्वीकार किया है और बात है भी प्रत्यक्ष कि साम्यवाद ने लोगों में प्रतिहिंसा और द्वेष की आग भड़का दी है। रूस में उसकी सफलता भी रक्त की नदी को पार कर प्राप्त हुई है। और आज भी रूस में साम्यवाद के विपरीत आवाज़ उठाने वालों को उतना ही और वैसा ही कड़ा दण्ड दिया जाता है, जैसा रूस का ज़ार अपने विरोधियों को देता था। तब साम्यवाद की विजय कौन सी है, यह समझ में नहीं आता। विचार-स्वतन्त्रता का गला तो आज भी वहाँ उसी प्रकार फाँसी और कारावास के द्वारा घोंटा जाता है। हाँ, उसका लक्ष्य और स्थान किञ्चित परिवर्तित हो गया है—कल जो अत्याचारी था, आज वह पीड़ित हो गया है और कल जो पीड़ित था आज वह अत्याचारी है। लोगों में प्रतिहिंसा और विद्वेष की अग्नि भड़का, विश्व में शान्ति स्थापित करना कठिन है। और यह प्रयत्न कई बार विफल भी हो चुका है। पश्चिम के राजनीतिज्ञ हैरान हैं; उनकी बुद्धि इस मसले को हल करने में असमर्थ है।

फिर भी अवस्थी जी उम्मीद करते हैं कि साम्यवाद के द्वारा ही विश्व में शान्ति होगी। विश्व में शान्ति तो वही महात्मा स्थापित करेगा, जिसका ज़िक्र अवस्थी जी भी अपने लेख में करते हैं। किन्तु आश्चर्य तो यह है कि उस महात्मा को वे आधुनिक पश्चिमी साम्यवाद का प्रवर्तक मानते हैं।

महात्मा जी में तथा पश्चिमी साम्यवाद में घोर अन्तर है। साम्यवाद प्रतिहिंसा और विद्वेष की अग्नि को भड़काता है तथा उसका लक्ष्य है भौतिक सुख। वह आत्म-विकास पर ज़रा भी ध्यान न देकर, दूसरे को हानि पहुँचाने और दूसरे की चीज़ को बलपूर्वक छीन कर अपनाने पर तुला हुआ है। इसके विपरीत महात्मा जी लोगों में अहिंसा का प्रचार कर दूसरों से प्रेम करने की शिक्षा देते हैं और उनका लक्ष्य है आत्म-विकास। भौतिक सुख की ओर वे बिलकुल नहीं देखते। वे दूसरों की वस्तु छीनने, किसी को भी हानि पहुँचाने अथवा बलोपयोग के विरोधी हैं। वे दूसरों को दण्ड देने के बदले ख़ुद प्रायश्चित्त के पक्षपाती हैं। अब आप ही निश्चय कर लें, इन दोनों में से किस मार्ग में सत्य का अंश अधिक है और किसके द्वारा विश्व में शान्ति स्थापित होने की अधिक सम्भावना है।

जिस वैदिक साम्यवाद का अवस्थी जी अपने लेख में ज़िक्र करते हैं, मेरा विश्वास है कि वह आधुनिक साम्यवाद से नितान्त भिन्न था।

"इसावास्यम् इदम् सर्वम्"। ईश। यह सारा जगत उसी एक तत्व से व्याप्त है, तब भिन्नता कैसी? वैदिक साम्यवाद की बुनियाद इस समता की नींव पर रक्खी गई थी। आधुनिक साम्यवाद की बुनियाद ठीक इसके विपरीत भौतिक हक़-हक़ूक़ात पर रक्खी गई है। इस प्रकार भिन्न दृष्टि-कोण होने के कारण दोनों के व्यवहार में यथेष्ट अन्तर आ जाता है। जहाँ आज का साम्यवादी अपने प्रतिद्वन्द्वी के प्रति रोष से पागल होकर अत्याचार करने लग जाता है, वहाँ वैदिक साम्यवादी अपने प्रतिद्वन्द्वी में भी अपनी आत्मा का दर्शन करता था और उसके बुरे कर्मों को माया का परिणाम समझ कर इस माया के नाश की व्यवस्था करता था, अपने प्रतिद्वन्द्वी के प्रति ईर्षा, वैमनस्य का भाव तो उसके मन में आता ही न था।

आज रूस में क्या हो रहा है? ज़मींदारों की सम्पत्ति छीन कर किसानों को दी जा रही है। पहले किसानों की सम्पत्ति छीन कर ज़मींदारों को दी जाती थी। केवल पात्रों का स्थान परिवर्तन मात्र है। छीनने का निकृष्ट भाव जिस तरह ज़ार के समय में प्रबल था, आज भी है। इसे कम करने, इस पशु-प्रवृत्ति को दबा कर ऊपर उठने का प्रयत्न ही संसार में सुख-शान्ति स्थापित करेगा।

और जब तक हम धन से, भौतिक सुख से अपनी दृष्टि हटा नहीं लेते तब तक अवस्था परिवर्तित न होगी। आज हम लूटते हैं; कल हम लुटेंगे। आवश्यकता स्थान और पात्र परिवर्तन की नहीं, वरन लूट की भावना को शमन करने की है और यह उस समय तक न होगा जब तक हम

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा
मा गृध=कस्य स्वितधनम्

"इस संसार अथवा भौतिक सुख का उपभोग त्याग-भाव को रख कर न करें।"

मैंने पहले लेख में भी यही कहा था और आज भी मेरा यही कथन है कि परिवर्तन करिए, लोगों के दुख दारिद्र्य को दूर करिए, किन्तु अपनी सभ्यता के मूल में आघात न करिए और पश्चिमी भौतिकवाद की चकाचौंध में अपनी आत्मा को न भूल जाइए।

* * *

The only Point where Newspapers, Leaders and Individuals agree in Toto

Hindi edition : Annual Rs. 6/8 Six monthly Rs. 3/8

The 'CHAND

Urdu edition : Annual Rs. 8/- Six monthly Rs. 5/-

A magazine which has raised consciousness in India

The Leader :

The February (1929) number of the CHAND fully maintains its reputation for fearless criticism of social injustice and bold advocacy of reform. Its columns are always full of interesting articles poems and stories. Hindi may well be proud of possessing a high class magazine like CHAND.

***

The Amrit Bazar Patrika :

Had there been such magazine, in Bengali, Urdu, Marathi, Telegu, etc., a great service would surely have been rendered.

***

The Bombay Chronicle :

It has justly won a reputation all over India. Lovers of social regeneration in India, especially those who are well-off, can benefit themselves and also do a good turn to this magazine by being subscribers and donors.

***

The Mysore Chronicle :

Few vernacular papers and magazines can boast of such a well-conducted magazine as the CHAND.

***

The Sunday Times :

It is no exaggeration, we believe, to say that the CHAND occupies a foremost place among the journals published in this country.

***

The Indian Daily Telegraph :

It is ably edited and deserves much encouragement.

***

The Tribune :

The magazine is neatly printed on good white paper and in get-up and elegance is all that the most fashionable lady may desire.

***

The Rajasthan :

The CHAND undoubtedly stands high among the existing Hindi monthlies and we heartily congratulate the conductors for their unabated zeal.

***

The Searchlight :

It can unhesitatingly be said that it can take its rank with any high class magazine.

***

The Indian Social Reformer :

We have often noticed in these columns the excellent work done by the Hindi Journal—the CHAND. The CHAND has justified its existence as one of the best Hindi magazines.

The Forward :

The neatness of the paper and its get-up leaves nothing to be desired. It has raised a general consciousness in the Hindi-knowing world.

***

The Patriot :

We commend this journal to the Hindi-reading public with the hope that they will extend their patronage to this useful *journal, which, we are sorry to learn, has been kept up at a considerable pecuniary loss to the promoters of the enterprise.*

***

Individual Opinions

Justice Sir Abdul Qadir, Member Public Service Commission :

I have learnt with great pleasure that you propose to bring out an Urdu edition of your excellent magazine. The CHAND, which has rendered valuable service to the cause of Hindi literature for more than 7 years. I think Urdu and Hindi are so connected together that in serving the literature of one you are practically serving the literature of the other. The only difficulty is that of the script, and in bringing out and Urdu edition, you are surmounting that difficulty, and placing the result of your labours within the reach of the Urdu-reading public. I regard Urdu as the common heritage of Hindus and Muslims, and congratulate you on your resolve to serve Urdu as well as Hindi, and wish you success in your laudable enterprise.

***

F. W. Wilson, Esq., Ex-Chief Editor of the "Pioneer"

I am delighted to hear that you are about to bring out an Urdu CHAND. I am told that your main objects are to kindle among the Urdu-reading public a desire for social reform and to spread among them a knowledge of enlightened social criticism. I can conceive of no more useful and beneficial a publication, if these principles are faithfully and unswervingly followed. Again and again the criticism is made against Indian life to-day and the objection raised against further political progress that a large majority of the public are either, because of illiteracy or indifference, unaware of the need for social reform. The greatest vehicle in the education of Public opinion is an enlightened, vigorous, independent and free press. That you realise the need for bringing to bear the influence of modern publicity against the many dead and rotten branches of social custom that are choking the young and vigorous life of a healthy Indian nationality, is obvious by the mere fact that you have undertaken this new venture. I cordially wish you all success.

Pt. Moti Lal Nehru, Ex-President, All India Congress :

I welcome the appearance of the Urdu CHAND. It supplies a real want. I hope it will fulfil the expectations *raised by the excellence of its Hindi parent.* I wish it every success.

***

Major D. R. Ranjit Singh, O. B. E., (Kaisar-i-Hind) I. M. S., (Late) :

I am conscious of the great good the Hindi CHAND has already done and I am confident its Urdu edition will be able to do the same.

***

Munshi Iswar Saran Saheb, Member Legislative Assembly :

(By Air Mail from London)

I wish this magazine every success. The work of social reform is blessed and thrice blessed are those, who honestly do it. I hope this magazine will advocate the right policy in social matters and if it does, it will have to fight the obscurantists on the one hand and the blind imitators of the west on the other. I trust it will strive for the realisation of the fact that a girl has as much right to education and freedom as has her brother. I sincerely wish it to work for the preservation of the true type of Indian woman-hood. I wish it a long career of usefulness.

***

Prof. M. H. Syed, M. A., Lecturer in Urdu, Allahabad University :

I am glad to learn that an Urdu edition of the CHAND is being issued. I wish this new venture every success. I understand that this monthly is devoted to the cause of social reform in India. In our present state of society there is no cause as laudable as this and I do hope that the CHAND in its Urdu garb will bring light to a large number of people who are still steeped in ignorance and are averse to new ways of life.

***

Dr. Sir Tej Bahadur Sapru, M. A., LL. D., Ex-Law Member of the Government of India :

I wish it every success.

***

Mr. M. M. Verma, M. A., Director of Education, Bikaner State writes :

. . . . I need hardly say that I have been following the career of your Journal with keen interest, and I have extremely refreshing outlook of the work which it is sure to accomplish in the most important of phases of Social Reform in India . . . .

Registered No. A—2085

विद्याविनोद-ग्रन्थमाला

की

विख्यात पुस्तकें

आशा पर पानी

यह एक छोटा सा शिक्षाप्रद, सामाजिक उपन्यास है। मनुष्य के जीवन में सुख-दुख का दौरा किस प्रकार होता है; विपत्ति के समय मनुष्य को कैसी-कैसी कठिनाइयाँ सहन करनी पड़ती हैं; परस्पर की फूट एवं वैमनस्य का कैसा भयङ्कर परिणाम होता है—इन सब बातों का इसमें बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलेगा। क्षमाशीलता, स्वार्थ-त्याग और परोपकार का बहुत ही अच्छा चित्र खींचा गया है। मूल्य केवल ॥=) स्थायी ग्राहकों से ।≡)॥

गौरी-शंकर

आदर्श-भावों से भरा हुआ यह सामाजिक उपन्यास है। शङ्कर के प्रति गौरी का आदर्श-प्रेम सर्वथा प्रशंसनीय है। बालिका गौरी को धूर्तों ने किस प्रकार तङ्ग किया। बेचारी बालिका ने किस प्रकार कष्टों को चीर कर अपना मार्ग साफ़ किया, अन्त में चन्द्रकला नाम की एक वेश्या ने उसकी कैसी सच्ची सहायता की और उसका विवाह अन्त में शङ्कर के साथ कराया। यह सब बातें ऐसी हैं, जिनसे भारतीय स्त्री-समाज का मुखोज्ज्वल होता है। यह उपन्यास निश्चय ही समाज में एक आदर्श उपस्थित करेगा। छपाई-सफ़ाई सभी बहुत साफ़ और सुन्दर है। मूल्य केवल ।॥)

मानिक-मन्दिर

यह बहुत ही सुन्दर, रोचक, मौलिक, सामाजिक उपन्यास है। इसके पढ़ने से आपको पता लगेगा कि विषय-वासना के भक्त कैसे चञ्चल, अस्थिर-चित्त और मधुर-भाषी होते हैं। अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए वे कैसे-कैसे जघन्य कार्य तक कर डालते हैं और अन्त में फिर उनकी कैसी दुर्दशा होती है—इसका बहुत ही सुन्दर तथा विस्तृत वर्णन किया गया है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से १।॥=)

मनोरमा

यह वही उपन्यास है, जिसने एक बार ही समाज में क्रान्ति मचा दी थी!! बाल और वृद्ध-विवाह से होने वाले भयङ्कर दुष्परिणामों का इसमें नग्न-चित्र खींचा गया है। साथ ही हिन्दू-विधवा का आदर्श जीवन और पतिव्रत-धर्म का बहुत सुन्दर वर्णन है। मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १।॥=)

शुक्ल और सोफ़िया

इस पुस्तक में पूर्व और पश्चिम का आदर्श और दोनों की तुलना बड़े मनोहर ढङ्ग से की गई है। यूरोप की विलास-प्रियता और उससे होने वाली अशान्ति का विस्तृत वर्णन किया गया है। शुक्ल और सोफ़िया का आदर्श जीवन, उनकी निःस्वार्थ देश-सेवा; दोनों का प्रणय और अन्त में संन्यास लेना ऐसी रोमाञ्चकारी कहानी है कि पढ़ते ही हृदय गद्गद हो जाता है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १।॥=)

नयन के प्रति

हिन्दी-संसार के सुविख्यात तथा 'चाँद'-परिवार के सुपरिचित कवि आनन्दीप्रसाद जी का नौजवान लेखनी का यह सुन्दर चमत्कार है। श्रीवास्तव महोदय की कविताएँ भाव और भाषा की दृष्टि से कितनी सजीव होती हैं—सो हमें बतलाना न होगा। इस पुस्तक में आपने देश की प्रस्तुत हीनावस्था पर अश्रुपात किया है। जिन ओज तथा करुणापूर्ण शब्दों में आपने नयनों को धिक्कारा और लज्जित किया है, वह देखने ही की चीज़ है—व्यक्त करने की नहीं। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय! दो रङ्गों में छपी हुई इस सुन्दर रचना का न्योछावर केवल ।=); स्थायी ग्राहकों से ।)॥ मात्र!!

सती-दाह

धर्म के नाम पर स्त्रियों के ऊपर होने वाले पैशाचिक अत्याचारों का यह रक्त-रञ्जित इतिहास है। इसके एक-एक शब्द में वह वेदना भरी हुई है कि पढ़ते ही आँसुओं की धारा बहने लगेगी। किस प्रकार स्त्रियाँ सती होने को बाध्य की जाती थीं, जलती हुई चिता से भागने पर उनके ऊपर कैसे भीषण प्रहार किए जाते थे—इसका पूरा वर्णन आपको इसमें मिलेगा! सजिल्द एवं सचित्र पुस्तक का मूल्य २॥) स्थायी ग्राहकों से १।॥=)

प्राणनाथ

यह वही उपन्यास है, जिसकी ६००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। इसमें सामाजिक कुरीतियों का ऐसा भण्डाफोड़ किया गया है कि पढ़ते ही हृदय दहल जायगा। नाना प्रकार के पाखण्ड एवं अत्याचार देख कर आप आँसू बहाए बिना न रहेंगे। शीघ्रता कीजिए! मूल्य केवल २॥) स्थायी ग्राहकों से १।॥=)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.